www.shabdawanisamachar.page
राष्ट्रीय हिन्दी समाचार पत्र
RNI NO. DELHI/2003/09049

दैनिक
शब्दवाणी समाचार
नई सोच, नई उम्मीद, बेहतर भविष्य, बेहतर भारत

वर्षः 24 अंकः 290 नई दिल्ली, गुरुवार , 13 अगस्त, 2026 पृष्ठः संख्या 12 मूल्यः 10 रुपये

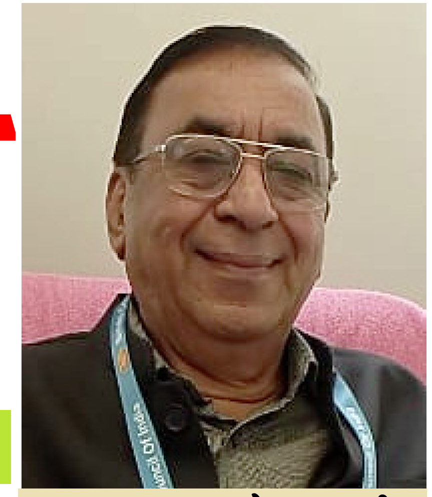

सलाहकार संपादक : अशोक लालवानी

Dedicated to Sindhi Council of India

राज्यसभा से केरल नाम परिवर्तन विधेयक पारित, केरल का नाम होगा केरलम

नई दिल्ली, 12 अगस्त (हि.स.)। संसद ने बुधवार को एक महत्वपूर्ण विधेयक पारित करते हुए केरल का नाम बदलकर केरलम करने को मंजूरी दे दी। राज्यसभा ने इस विधेयक को ध्वनिमत से पारित किया, जबकि लोकसभा ने इसे मंगलवार को ही मंजूरी दे दी थी।

केरल (नाम परिवर्तन) विधेयक, 2026 का उद्देश्य संविधान की पहली अनुसूची में दर्ज राज्य के नाम को संशोधित कर केरल से केरलम करना है।

केरल विधानसभा ने वर्ष 2024 में सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित कर केंद्र सरकार से राज्य का नाम बदलने के लिए कानून लाने की सिफारिश की थी।इसके बाद केंद्र सरकार ने विधेयक को आगे बढ़ाया।

विधेयक के पारित होने के बाद अब इसे राष्ट्रपति की मंजूरी के लिए भेजा जाएगा, जिसके बाद आधिकारिक रूप से राज्य का नाम बदलकर केरलम कर दिया जाएगा।

राज्य सभा में इस विधेयक पर चर्चा के बाद इस पर जवाब देते हुए गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने कहा कि यह बदलाव राज्य की भाषाई और सांस्कृतिक पहचान को अधिक सटीक रूप से दर्शाने के उद्देश्य से किया गया है।

केरल विधानसभा ने वर्ष 2024 में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर केंद्र सरकार से राज्य का नाम बदलकर केरलम करने के लिए कानून लाने की सिफारिश की थी। उन्होंने बताया कि इसी अनुरोध को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार ने यह विधेयक संसद में पेश किया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी भी राज्य का नाम बदलने की प्रक्रिया संबंधित राज्य विधानसभा के प्रस्ताव पर आधारित होती है। यदि पश्चिम बंगाल भी ऐसा प्रस्ताव पारित करता है, तो केंद्र सरकार उस पर भी विधेयक लाने पर विचार करेगी।

विधेयक पर चर्चा के दौरान भाजपा सांसद समिक भट्टाचार्य ने पश्चिम बंगाल का नाम बदलकर पश्चिम बांगो करने की मांग उठाई। वहीं, आरएलएम सांसद उपेन्द्र कुशवाहा ने पटना का नाम बदलकर पाटलिपुत्र करने का सुझाव दिया। राज्य सभा सांसद तरुण चुग ने विधेयक का पूर्ण समर्थन करते सभी सदस्यों से आग्रह किया कि दलगत राजनीति से ऊपर उठकर इसे सर्वसम्मति से पारित किया जाए। चुग ने कहा कि यह केवल एक नाम बदलने का विषय नहीं है, बल्कि नाम की पुनर्स्थापना का ऐतिहासिक क्षण है। उन्होंने कहा कि यह इतिहास बदलने का प्रयास नहीं, बल्कि इतिहास में प्रचलित पहचान को संवैधानिक अभिलेख में उसका बनता हुआ उचित स्थान देने का प्रयास है। तरुण चुग ने कहा कि केरलम वह पवित्र भूमि है जिसने पूज्य आदि शंकराचार्य जैसे महान ऋषि को जन्म दिया, जिन्होंने अद्वैत वेदांत के माध्यम से भारत की आध्यात्मिक यात्रा को सूत्रबद्ध किया। उन्होंने कहा कि कालडी से निकलकर आदि गुरु शंकराचार्य ने चारों दिशाओं में भारत की परंपरा को संस्थागत रूप दिया और एक भारत, श्रेष्ठ भारत का दर्शन देश को दिया। चुग ने आचार्य शंकर को शत-शत प्रणाम करते हुए कहा कि यह सुंदर संयोग है कि आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी कश्मीर से कन्याकुमारी तक उसी एक भारत, श्रेष्ठ भारत के भाव को सशक्त कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि केरल अंग्रेजों द्वारा थोपा हुआ नाम था और आज जब वह बदलकर केरलम हो रहा है, तो यह पूरे भारत के लिए गौरव का विषय है।

राज्यसभा में चर्चा के दौरान विभिन्न दलों के सांसदों ने विधेयक का समर्थन किया। डीएमके के तिरुचि शिवा, तृणमूल कांग्रेस के डेरेक ओ ब्रायन और आम आदमी पार्टी के संजय सिंह सहित कई सदस्यों ने राज्य का नाम बदलने के प्रस्ताव के पक्ष में अपनी बात रखी और इसे सांस्कृतिक पहचान से जुड़ा महत्वपूर्ण कदम बताया।

मानसून सत्र में कांग्रेस ने चर्चा से भागकर देश की लोकतांत्रिक मर्यादा को किया तार-तार : नितिन नवीन

नई दिल्ली, 12 अगस्त (हि.स.)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए उस पर देश की जनता को गुमराह करने, लोकतांत्रिक मूल्यों का हनन करने का आरोप लगाया।

बुधवार को भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन ने अपने एक बयान में कहा कि संसद लोकतंत्र का वह पवित्र मंदिर है, जहां जनता के मुद्दों पर सार्थक चर्चा से देश की दिशा तय होती है लेकिन इस बार के मानसून सत्र में गैरजिम्मेदार कांग्रेस ने चर्चा से भाग कर और बार-बार अपना गोलपोस्ट चेंज कर देश की लोकतांत्रिक मर्यादा और गरिमा को ही तार-तार कर दिया। वास्तव में कांग्रेस ने देश की जनता को धोखा दिया है। इस पूरे सत्र में राहुल गांधी और समूचे विपक्ष का रवैया उनकी अराजक मानसिकता और लोकतंत्र-विरोधी सोच को उजागर करता है।

उन्होंने कहा कि पूरा सत्र बीतने को है, पर वे एक भी मुद्दे पर गंभीर चर्चा के लिए तैयार नहीं हुए। पहले उन्होंने युवाओं के विषय पर चर्चा करने की मांग की, और जब सरकार इसके लिए पूरी तरह तैयार हो गई, तो कांग्रेस और इंडी गठबंधन यह कहकर भाग खड़ा हुआ कि उन्हें कोई चर्चा ही नहीं करनी है। नितिन नवीन ने कहा कि सरकार हर विषय पर चर्चा के लिए तैयार थी, लेकिन विपक्ष लगातार जनता के मुद्दों से भागता रहा। आखिर विपक्ष चर्चा से क्यों भाग रहा था? यह साफ तौर पर दिखाता है कि विपक्ष मुद्दों को लेकर न तो संजीदा है और न ही गंभीर।

संसद में कई नए सांसदों का यह पहला सत्र था। विपक्ष ने केवल हंगामा करके उन नए सांसदों के सामने हमारे लोकतंत्र की एक बेहद शर्मनाक तस्वीर पेश की है। इनके इस अड़ियल रवैये के कारण देश प्रश्नकाल से भी वंचित रह गया और लोकतंत्र के इस मंदिर में जनता से जुड़े कई अहम मुद्दों पर बात तक नहीं हो सकी।

उन्होंने कहा कि भारत में नेता प्रतिपक्ष का पद हमेशा से उच्च संवैधानिक गरिमा रखता आया है। लेकिन राहुल गांधी ने बार-बार अमर्यादित भाषा, अहंकार, अपने ढुलमुल और गैरजिम्मेदार रवैये से न सिर्फ इस पद को शर्मसार किया है, बल्कि सदन की मयार्दा और गरिमा में भी भारी गिरावट ला दी है।

सच्चाई यह है कि राहुल गांधी, कांग्रेस और इंडी गठबंधन चर्चा से इसलिए भाग रहा था क्योंकि उन्हें पता था कि जब गृह मंत्री संसद में बोलेंगे तो राहुल गांधी और इंडी गठबंधन के सारे झूठ धाराशायी हो जायेंगे।

पूरा देश जानता है कि जब गृह मंत्री सदन में तथ्यों के साथ बोलते हैं, तो उनके तर्कों के सामने विपक्ष की बोलती बंद हो जाती है। इसी डर से विपक्ष पूरे सत्र में केवल विषयों को बदलता रहा और चर्चा से भागता रहा।

सार संक्षेप

मुंबई भूस्खलन हादसे में मरने वालों की संख्या छह हुई

मुंबई। मुंबई के कुर्ला (पश्चिम) के अशोक नगर, टेकड़ी क्रमांक 3 पर बुधवार सुबह हुए भूस्खलन में अब तक 6 लोगों की मौत की प्रशासन ने पुष्टि की है। वहीं, हादसे में घायल हुए 4 लोगों का इलाज कुर्ला भाभा अस्पताल में चल रहा है। दरअसल, मुंबई में लगातार हो रहे बारिश के कारण बुधवार सुबह 3 से 3.45 बजे के बीच अचानक पहाड़ का कुछ हिस्सा चॉल के 2 से 3 घरों पर गिर गया।

सीबीएसई 12वीं सप्लीमेंट्री परीक्षा परिणाम घोषित

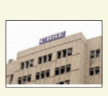

नई दिल्ली। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) द्वारा कक्षा 12वीं के लिए आयोजित सप्लीमेंट्री या कंपार्टमेंट परीक्षा में शामिल हुए जो छात्र परिणाम जारी होने का इंतजार कर रहे हैं, उनके लिए एक अच्छी खबर सामने आई है। सीबीएसई ने बुधवार को कक्षा 12वीं के सप्लीमेंट्री परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया है।

प्रज्वल रेवन्ना सहित दो कैदियों के पास से मिले फोन

बेंगलुरु। सेंट्रल क्राइम ब्रांच (सीसीबी) ने बेंगलुरु स्थित परप्पना अग्रहारा जेल में छापेमारी की। छापेमारी के दौरान जनता दल (सेक्युलर) के पूर्व सांसद प्रज्वल रेवन्ना और प्रताप राय नाम के एक अन्य कैदी के पास फोन मिले हैं। दोनों के खिलाफ परप्पना अग्रहारा जेल में 'प्रिजन्स एक्ट' (जेल अधिनियम) की धारा 42 के तहत मामला दर्ज किया गया है।

संसदीय समिति ने लोकसभा में पेश की रिपोर्ट

पूर्व जज यशवंत वर्मा ने पैसों पर नहीं दिया संतोषजनक जवाब

नई दिल्ली, 12 अगस्त (एजेंसियां)। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला द्वारा गठित एक संसदीय समिति ने पूर्व दिल्ली हाईकोर्ट के न्यायाधीश यशवंत वर्मा के सरकारी आवास से नकदी मिलने के मामले में उन्हें जिम्मेदार ठहराया है। समिति ने निष्कर्ष निकाला कि पूर्व दिल्ली हाईकोर्ट के जज आवास में मिले पैसों की मौजूदगी का संतोषजनक स्पष्टीकरण देने में विफल रहे। बुधवार को संसद में पेश की गई समिति की रिपोर्ट के अनुसार, नई दिल्ली के 30, तुगलक क्रिसेंट स्थित न्यायमूर्ति वर्मा के सरकारी आवास के एक

समिति ने नकदी मिलने के मामले में जिम्मेदार ठहराया

स्टोररूम में 500 रुपए के नोटों की बड़ी मात्रा बरामद हुई थी, जिनके बारे में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दी जा सकी। यह मामला तब सामने आया था, जब 14 मार्च 2025 की रात उनके आवास पर आग लगी थी। आग बुझाने पहुंचे दमकलकर्मियों को स्टोररूम में बड़ी मात्रा में आंशिक रूप से जले हुए नकदी के बंडल मिले थे। समिति ने बाद की जांच प्रक्रिया पर भी चिंता जताई।

स्पष्टता, पारदर्शिता तथा संस्थागत जवाबदेही का अभाव था

हालांकि, समिति ने यह भी कहा कि उसे ऐसा कोई सबूत नहीं मिला, जिससे यह साबित हो सके कि न्यायमूर्ति वर्मा ने स्वयं नकदी हटाई थी। समिति ने न्यायमूर्ति वर्मा के जवाब की आलोचना करते हुए कहा कि यह असंतोषजनक था और इसमें स्पष्टता, पारदर्शिता तथा संस्थागत जवाबदेही का अभाव था।

सुप्रीम कोर्ट में शिवसेना नाम-निशान विवाद पर हुई सुनवाई

कपिल सिब्बल ने चुनाव आयोग पर उठाए सवाल

नई दिल्ली, 12 अगस्त (एजेंसियां)। शिवसेना के नाम और चुनाव निशान 'तीर-कमान' पर अधिकार को लेकर उद्धव ठाकरे गुट और एकनाथ शिंदे गुट के बीच चल रही लड़ाई पर बुधवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। उद्धव ठाकरे की ओर से वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल ने दलीलें रखते हुए चुनाव आयोग के अधिकार क्षेत्र पर सवाल उठाए। अदालत ने कहा कि मामले की सुनवाई गुरुवार को भी जारी रहेगी।

कपिल सिब्बल ने जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 29ए का जिक्र करते हुए कहा कि इस कानून की उप-धारा 9 के तहत अगर पार्टी के नाम, मुख्य कार्यालय, पदाधिकारियों या पते में कोई बदलाव होता है तो उसकी सूचना निर्वाचन आयोग को देना अनिवार्य है। हमने निर्वाचन आयोग को सूचित किया था। उस पर भी बेवजह विवाद किया गया। हमने तो अपना कर्तव्य निभाते हुए

- आयोग दस्तावेजों को देखता तक नहीं
- मामले की सुनवाई आज भी जारी रहेगी

पदाधिकारियों के नाम दिए थे। वे जानते हैं कि बदलाव हुआ है, इसलिए वे कहते हैं कि हमें बताइए। वे कहते हैं कि वे 2018 के संविधान के बारे में नहीं जानते। लेकिन, संचार में 'शिवसेना पक्ष प्रमुख' का स्पष्ट उल्लेख था। चुनाव आयोग दस्तावेजों को देखता तक नहीं है।

शिंदे को गैरकानूनी तरीके से मुख्यमंत्री बनाया गया

कपिल सिब्बल ने कहा, 'अगर पार्टी में विभाजन का प्रथम दृष्टया मामला बनता है तो स्थिति आगे स्पष्ट होगी। लेकिन, 19 जुलाई को आयोग के पास कौन सा दस्तावेज उपलब्ध था? आयोग ने किस आधार पर निर्णय किया? उस दिन आयोग के पास सिर्फ दो दस्तावेज थे। एक लेजिस्लेटिव स्ट्रेंथ से जुड़ा था और दूसरा एक मीटिंग से।'उन्होंने आगे कहा, 'एक बार जब आप चीफ मिनिस्टर बन जाते हैं तो क्या होता है? जाहिर है, लोग आपके पास आएंगे। उस जमीनी हकीकत को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। हमारे हिसाब से, एकनाथ शिंदे को गैरकानूनी तरीके से चीफ मिनिस्टर बनाया गया था।

दिल्ली में 15 अगस्त को लेकर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी

नई दिल्ली, 12 अगस्त (एजेंसियां)। 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस से पहले पूरी दिल्ली को हाई अलर्ट पर रखा गया है। सुरक्षा में कोई चूक न हो, इसके लिए दिल्ली पुलिस ने राजधानी में देर रात मेगा सुरक्षा अभियान चलाया

। रात 11 बजे से 2 बजे तक दिल्ली के तमाम जिलों में गश्त के साथ सघन चेकिंग की गई। द्वारका मोड़ पर पुलिसकर्मियों ने पूरी सतर्कता के साथ आधी रात को पेट्रोलिंग की। अधिकारियों ने गाड़ियों की सघन जांच की और हर गुजरने वाली कार की अंदर-बाहर से अच्छी तरह तलाशी ली गई। सिर्फ सुरक्षा जांच में पास होने वाली गाड़ियों को ही आगे जाने की इजाजत दी गई, ताकि हर नागरिक के लिए राष्ट्रीय उत्सव सुरक्षित और शांतिपूर्ण रहे। इसी तरह उत्तम नगर में पुलिस टीमों ने आधी रात को जमीनी स्तर पर सघन चेकिंग अभियान चलाया। इलाके की

- तमाम जिलों में गश्त के साथ सघन चेकिंग की गई
- राजधानी को हाई अलर्ट पर रखा गया

मुख्य सड़कों से गुजरने वाली हर गाड़ी को रोका गया और आगे बढ़ने की इजाजत से पहले उसकी बारीकी से जांच की गई। इस निगरानी का मकसद पूरे शहर में पूरी सुरक्षा और व्यवस्था बनाए रखना है। सीलमपुर इलाके में भी दिल्ली पुलिस ने अभियान चलाया। इस दौरान, संदिग्ध वाहनों और लोगों पर नजर रखी गई। सुरक्षा अभियान के तहत पुलिसकर्मियों को स्थानों पर तैनात किया गया। वहीं, पश्चिमी दिल्ली के मोती नगर थाना क्षेत्र में पुलिस ने पीकेट लगाकर आने-जाने वाले वाहनों की जांच की। इस दौरान संदिग्ध वाहनों और लोगों पर नजर रखी गई।

नीट पेपर लीक मामला

कोर्ट ने सीबीआई की चार्जशीट पर लिया संज्ञान

नई दिल्ली, 12 अगस्त (एजेंसियां)। नीट यूजी पेपर लीक मामले में राउज एवेन्यू कोर्ट ने केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा दाखिल चार्जशीट पर संज्ञान लिया है। राउज एवेन्यू कोर्ट की स्पेशल कोर्ट आरोप तय करने के लिए 13 अगस्त से सुनवाई करेगी। राउज एवेन्यू कोर्ट ने मीडिया द्वारा मामले में गवाहों के नाम छापे जाने पर आपत्ति जताई है। कोर्ट ने कहा कि यह मेरे लिए बहुत चौंकाने

आज से होगी सुनवाई

वाला है कि जो बात अभी तक कोर्ट में नहीं बोली गई है, वह अभी चार्जशीट का हिस्सा है। यह सब मीडिया में सामने आना बेहद चौंकाने वाला है।

20,000 पेज की चार्जशीट दाखिल

सीबीआई ने नीट यूजी पेपर लीक मामले में 20,000 पेज की चार्जशीट दाखिल की है। सीबीआई ने चार्जशीट में कहा कि तीन विषय विशेषज्ञों ने दिल्ली के एनटीए कार्यालय से नीट परीक्षा के प्रश्नों को अलग-अलग तरीकों से बाहर निकाला था।

जंतर-मंतर सीजन-2 जल्द शुरू होने वाला है : दिपके

नई दिल्ली, 12 अगस्त (एजेंसियां)। कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के संस्थापक-अध्यक्ष अभिजीत दिपके ने एक और देशव्यापी आंदोलन की ओर इशारा करते हुए कहा है कि 'जंतर-मंतर सीजन-2' जल्द ही शुरू होने वाला है।

श्री दिपके ने यहां संवाददाताओं को संबोधित करते हुए कहा, 'आप में से कई लोग इंस्टाग्राम पर पूछ रहे थे कि

- सरकारी स्कूलों में सुधार के अभियान का ऐलान किया था

जंतर-मंतर का सीजन-2 कब शुरू होगा। मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि दूसरा सीजन जल्द ही शुरू होने वाला है।' सीजेपी के सह-संयोजक आशुतोष रंका ने यह वीडियो सोशल मीडिया मंच एक्स पर 'स्कूल ठीक करो' हैशटैग के साथ साझा किया।

परेशानी — आम आदमी की जेब पर फिर बढ़ा बोझ

जुलाई में खुदरा महंगाई बढ़कर 4.45 फीसदी हुई

नई दिल्ली, 12 अगस्त (एजेंसियां)। सोने-चांदी के गहनों के साथ ही खाने-पीने की चीजों के दाम बढ़ने से जुलाई में खुदरा मूल्य आधारित मुद्रास्फीति की दर बढ़कर 4.45 प्रतिशत पर पहुंच गई। इससे आम आदमी की जेब पर और बोझ बढ़ गया है। यह कम से कम 19 महीने का उच्चतम स्तर है। नई सीरीज के आधार पर जनवरी 2025 से अब तक के जारी आंकड़ों में खुदरा महंगाई की दर इतने ऊंचे स्तर पर कभी नहीं रही।

- 19 महीने के उच्चतम स्तर पर पहुंची

इस साल जून के संशोधित आंकड़ों में खुदरा महंगाई की दर 4.38 प्रतिशत और पिछले साल जुलाई में 3.35 प्रतिशत दर्ज की गई थी। खाद्य खुदरा महंगाई की दर भी जून के 5.32 प्रतिशत से बढ़कर 5.52 प्रतिशत दर्ज की गई। केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा बुधवार को जारी आंकड़ों के अनुसार, जुलाई में खाने-पीने की चीजों की कीमत एक साल पहले की तुलना में 5.24 प्रतिशत और पान, तंबाकू तथा नशीले पदार्थों की महंगाई दर 4.79 प्रतिशत रही। रेस्त्रां और आवासीय सेवाओं की महंगाई दर 7.72 प्रतिशत रही। परिवहन सेवाओं की महंगाई दर 4.43 प्रतिशत दर्ज की गयी।

अदरक 84 फीसदी महंगा

एक साल पहले की तुलना में इस साल जुलाई में चांदी के गहने 110 प्रतिशत, अदरक 84 प्रतिशत, लहसुन 35 प्रतिशत, प्याज 23 प्रतिशत और सोने, हीरे तथा प्लेटिनम के गहने 33 प्रतिशत महंगे हुए। वहीं आलू की कीमत 17 प्रतिशत, वाहनों की सात प्रतिशत और भिंडी की छह प्रतिशत घटी है। मटर और टमाटर के दाम में सालाना पांच प्रतिशत की गिरावट रही।

ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक महंगाई

एक बार फिर ग्रामीण क्षेत्रों में महंगाई दर शहरी क्षेत्र से अधिक रही। शहरी क्षेत्रों में महंगाई दर 3.96 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्रों में 4.84 प्रतिशत रही।

संक्षिप्त समाचार

केंद्रीय कृषि मंत्री ने वृक्ष मित्र परिवार बनाने का किया आह्वान, दिल्ली सरकार ने अब तक 40.49 लाख पौधे लगाए

नई दिल्ली, 12 अगस्त (हि.स.)। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान बुधवार को दिल्ली रिज स्थित पीबीजी ग्राउंड सेंट्रल रिज में दिल्ली सरकार के पौधरोपण कार्यक्रम में शामिल हुए। इस मौके पर दिल्ली के पर्यटन मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा और लोक निर्माण विभाग के मंत्री प्रवेश साहिब सिंह भी मौजूद रहे। शिवराज सिंह चौहान ने इस मौके पर देशभर में वृक्ष मित्र परिवार बनाने का आह्वान किया, ताकि अधिक से अधिक लोग प्रकृति के संरक्षण के इस अभियान से जुड़ सकें। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार के 70 लाख पौधरोपण का लक्ष्य इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसे जनता की सक्रिय भागीदारी से हासिल किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जनभागीदारी ऐसे अभियानों में लोगों के भीतर स्वामित्व की भावना पैदा करती है और इन्हें दीर्घकालिक एवं टिकाऊ बनाती है। चौहान ने कहा कि दिल्ली सरकार द्वारा पौधों की जियो-टैगिंग करने तथा पौधरोपण करने वाले लोगों को पेड़ के आकार, आयु और विकास से संबंधित नियमित जानकारी उपलब्ध कराने की पहल एक उत्कृष्ट अभियान है। इससे यह सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी कि पौधे केवल रोपित ही न जाएं, बल्कि जीवित रहें और स्वस्थ पेड़ों के रूप में विकसित हों। उन्होंने कहा कि पेड़ केवल हमारी विरासत नहीं हैं, बल्कि पक्षियों, पशुओं और आने वाली पीढ़ियों के जीवन का आधार भी हैं। इसलिए इनका संरक्षण हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने कहा कि एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत दिल्ली के मेगा पौधरोपण अभियान 2026 में 70 लाख पौधों के लक्ष्य के मुकाबले अब तक लगभग 40.49 लाख पौधे लगाए हैं। इसके साथ ही दिल्ली ने पौधरोपण लक्ष्य का लगभग 58 फीसद हासिल कर लिया है। सिरसा ने कहा कि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने देश को दिखाया है कि पेड़ों के साथ भावनात्मक जुड़ाव किस प्रकार एक शक्तिशाली जनआंदोलन का रूप ले सकता है। दिल्ली इसी दृष्टिकोण से प्रेरणा लेते हुए यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है कि नागरिक पर्यावरण के संरक्षण और संवर्धन में सक्रिय भागीदार बनें। मंत्री सिरसा ने कहा कि दिल्ली सरकार तकनीक का उपयोग यह सुनिश्चित करने के लिए कर रही है कि पौधरोपण केवल जमीन में पौधा लगाने तक सीमित न रहे, बल्कि उसके जीवित रहने और स्वस्थ विकास में भी परिवर्तित हो। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार द्वारा लगाए जा रहे प्रत्येक पौधे की जियो-टैगिंग की जा रही है और उसके स्थान, फोटो, ऊंचाई तथा अन्य आवश्यक जानकारी को डिजिटल रूप से दर्ज किया जा रहा है। पौधरोपण अभियान में भाग लेने वाले नागरिकों को एक क्यूआर कोड भी उपलब्ध कराया जा रहा है, जिसके माध्यम से वे अपने द्वारा लगाए गए पेड़ की नवीनतम तस्वीर और उससे जुड़ी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। सिरसा ने कहा कि दिल्ली सरकार राजधानी के रिज क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर पुनर्स्थापना कार्य भी कर रही है। वर्तमान में लगभग 51 स्थानों पर रिज के पुनरुद्धार का कार्य चल रहा है। उन्होंने कहा कि इन प्रयासों का मुख्य उद्देश्य स्थानीय पौधों की प्रजातियों को बढ़ावा देकर और स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र के अनुकूल न होने वाली प्रजातियों की मौजूदगी को कम करके रिज के प्राकृतिक एवं पारिस्थितिक स्वरूप को पुनर्स्थापित करना है।

दिल्ली भाजपा ने चार जिलों में निकाली तिरंगा यात्रा, दिया राष्ट्रभक्ति और एकता का संदेश

नई दिल्ली, 12 अगस्त (हि.स.)। स्वतंत्रता दिवस सप्ताह के अवसर पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) दिल्ली की ओर से बुधवार को राजधानी के चार जिलों दक्षिणी दिल्ली, महरौली, मयूर विहार और नवीन शाहदरा में तिरंगा यात्राओं का आयोजन किया गया। विभिन्न यात्राओं में भाजपा सांसदों, विधायकों, वरिष्ठ नेताओं और बड़ी संख्या में कार्यकताओं ने हिस्सा लेकर राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रीय एकता और अखंडता का संदेश दिया। युवा मोर्चा अध्यक्ष रजत चौधरी के नेतृत्व में हजारों युवा कार्यकर्ता भी यात्राओं में शामिल हुए। महरौली जिले में मसूदपुर डेयरी स्थित मसूदपुर गांव के शहीद भगत सिंह पार्क से तिरंगा यात्रा निकाली गई। इसका नेतृत्व सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी ने किया। यात्रा में प्रदेश संगठन महामंत्री पवन राणा, विधायक, वरिष्ठ भाजपा नेता जयवीर राणा, जिला अध्यक्ष रविंद्र सोलंकी सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे। दक्षिणी दिल्ली जिले में मोलड़बंद, बदरपुर स्थित सांसद कार्यालय से निकली यात्रा का नेतृत्व भी रामवीर सिंह बिधूड़ी ने किया। इसमें भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री अनिल जैन, राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रदीप भंडारी, प्रदेश युवा मोर्चा अध्यक्ष रजत चौधरी, जिला अध्यक्ष माया सिंह बिष्ट, विधायक चंदन चौधरी और पार्टी कार्यकताओं ने भाग लिया। मयूर विहार जिले में जीवन अनमोल अस्पताल, मयूर विहार फेज-1 से निकली तिरंगा यात्रा का नेतृत्व दिल्ली भाजपा अध्यक्ष हर्ष मल्होत्रा ने किया। इस दौरान भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री दुष्यंत गौतम, जिला अध्यक्ष विजेंद्र धामा, जिला पदाधिकारी और बड़ी संख्या में कार्यकर्ता शामिल हुए। नवीन शाहदरा जिले में नंद नगरी स्थित नथू कॉलोनी चौक से निकली तिरंगा यात्रा का नेतृत्व सांसद मनोज तिवारी ने किया। यात्रा में पूर्व दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा, कार्यालय मंत्री कैलाश जैन, विधायक, पार्टी के वरिष्ठ नेता, जिला अध्यक्ष मास्टर विनोद और बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे। भाजपा नेताओं ने कहा कि तिरंगा यात्रा केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि देश के वीर स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को नमन करने और राष्ट्र के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराने का अवसर है।

उन्होंने कहा कि इन यात्राओं के माध्यम से दिल्लीवासियों के बीच देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता और ह्यएक भारत, श्रेष्ठ भारत की भावना को मजबूत करने का संदेश दिया गया। मयूर विहार की तिरंगा यात्रा को संबोधित करते हुए दिल्ली भाजपा अध्यक्ष हर्ष मल्होत्रा ने कहा कि तिरंगा देश के 140 करोड़ भारतीयों के स्वाभिमान का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि तिरंगे को हाथ में लेकर चलने से उन वीर शहीदों की याद आती है, जिन्होंने देश की आन-बान-शान के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया। मल्होत्रा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत आज दुनिया में सिर ऊंचा करके आगे बढ़ रहा है। हर घर तिरंगा अभियान देशवासियों को जाति, भाषा और क्षेत्र से ऊपर उठकर पहले भारत की भावना से जोड़ने का काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि दिल्ली में डबल इंजन की सरकार बनने के बाद विकास की नई गाथा लिखी जा रही है। सड़कों से लेकर स्कूल और अस्पताल तक विकास कार्यों को आगे बढ़ाया जा रहा है और सबका साथ, सबका विकास का मंत्र साकार हो रहा है। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कार्यकताओं से भ्रष्टाचार, तुष्टिकरण और परिवारवाद के खिलाफ संघर्ष करने तथा विकसित भारत के निर्माण में योगदान देने की अपील की।

6 दिसंबर को मथुरा में प्रस्तावित कारसेवा को यूनाइटेड हिंदू फ्रंट का पूर्ण समर्थन

नई दिल्ली (दिव्य भारत ब्यूरो)। संत समाज द्वारा श्रीकृष्ण जन्मभूमि की मुक्ति के लिए आगामी 6 दिसंबर 2026 को मथुरा में कारसेवा आयोजित करने की घोषणा की गई है। यूनाइटेड हिंदू फ्रंट ने इस घोषणा का पूर्ण समर्थन करते हुए कहा है कि संगठन के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता बड़ी संख्या में कारसेवा में भाग लेंगे। देश के संतों के सान्निध्य में स्वामी सच्चिदानंद महाराज, पीठाधीश्वर, चित्रकूट के नेतृत्व में 6 दिसंबर 2026 को श्रीकृष्ण जन्मभूमि स्थान मुक्ति हेतु जो कारसेवा की जाएगी, उसमें यूनाइटेड हिंदू फ्रंट खुलकर कारसेवा में भाग लेगा।

यह निर्णय संतों के सान्निध्य में आयोजित एक महत्वपूर्ण बैठक में लिया गया। बैठक का आयोजन आचार्य बद्रीराज जी महाराज, सदस्य, मार्गदर्शक मंडल, यूनाइटेड हिंदू फ्रंट तथा धर्मरक्षा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं यूनाईटेड हिन्दू फ्रंट के राष्ट्रीय सचिव सौरभ गौड़ के सहयोग से श्रीमद्भागवत मन्दिरम्, गोपाल खार, परिक्रमा मार्ग, वृंदावन में किया गया। बैठक की अध्यक्षता यूनाइटेड हिंदू फ्रंट के अंतरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रवादी शिवसेना जय भगवान गोयल ने की। जय भगवान गोयल 6 दिसंबर 1992 को तथाकथित बाबरी ढांचा गिराए जाने के मुख्य

अभियुक्त भी रहे हैं।

जय भगवान गोयल ने कहा, श्रीकृष्ण जन्मभूमि करोड़ों हिंदुओं की आस्था का प्रमुख केंद्र है। संत समाज द्वारा 6 दिसंबर 2026 को घोषित कारसेवा में यूनाइटेड हिंदू फ्रंट पूरी शक्ति और समर्पण के साथ भाग लेगा। संगठन देशभर के संतों, धार्मिक संस्थाओं और हिंदू समाज से इस अभियान में एकजुट होकर सहभागी बनने का आह्वान करता है।

यूनाइटेड हिंदू फ्रंट ने 23 दिसंबर 2020 को मथुरा स्थित सिविल जज, सीनियर डिवीजन के न्यायालय में सिविल वाद संख्या 950कृ ठाकुर केशवदेव जी बनाम इंतजामिया कमेटी, वरिष्ठ अधिवक्ता राजेंद्र माहेश्वरी के माध्यम से दायर किया था। संगठन का कहना है कि वह श्रीकृष्ण जन्मभूमि से संबंधित इस प्रकरण में मथुरा न्यायालय से लेकर उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय तक लगातार कानूनी संघर्ष करता आ रहा है।

वर्ष 2021 में यूनाइटेड हिंदू फ्रंट की ओर से मुस्लिम पक्ष के समक्ष आपसी सहमति से विवाद के समाधान का प्रस्ताव भी रखा गया था। संगठन ने विवादित स्थल के बदले मथुरा के बाहर डेढ़ गुना भूमि उपलब्ध कराने की पेशकश की थी। संगठन के अनुसार, इस प्रस्ताव पर अभी तक कोई सकारात्मक सहमति नहीं बन सकी है।

जय भगवान गोयल जी ने कहा कि यूनाइटेड हिंदू फ्रंट न्यायिक प्रक्रिया का

■ श्रीकृष्ण जन्मभूमि मुक्ति के लिए कारसेवा में भाग लेने का ऐलान, न्यायिक प्रक्रिया के सम्मान की बात

सम्मान करते हुए श्रीकृष्ण जन्मभूमि की मुक्ति के लिए अपना लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक संघर्ष जारी रखेगा। उन्होंने कहा कि प्रस्तावित कारसेवा संत समाज के मार्गदर्शन में शांतिपूर्ण, अनुशासित ढंग से आयोजित की जाएंगी।

बैठक में उपस्थित संतों और संगठन के पदाधिकारियों ने श्रीकृष्ण जन्मभूमि की मुक्ति के लिए देशभर में व्यापक जनजागरण अभियान चलाने तथा अधिक से अधिक लोगों को इस अभियान से जोड़ने का संकल्प लिया। बैठक में सर्वश्री स्वामी अतुलकृष्ण दास, मछद मोहिनी बिहारी शरण, अध्यात्म गुरू महामण्डलेश्वर स्वामी कृष्णा नंद, उत्तराधिकारी दशरथ दास जी महाराज हनुमान टेकरी आश्रम आदि संत महात्मा उपस्थित रहें।

लघु फिल्मों ने दिया साइबर सुरक्षा और महिला सुरक्षा का संदेश

नई दिल्ली (नितिन गुप्ता/प्रणव कुमार/दिव्य भारत)। साइबर अपराध और महिला सुरक्षा जैसे गंभीर सामाजिक मुद्दों पर जनजागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से डॉ. भीमराव अंबेडकर महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय में विशेष फिल्म प्रदर्शन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में साइबर सुरक्षा पर आधारित लघु फिल्म क्यों

■ डॉ. भीमराव अंबेडकर महाविद्यालय में क्यों और डर फिल्मों का प्रदर्शन, विद्यार्थियों ने साझा किए विचार

और महिला सुरक्षा एवं सामाजिक असुरक्षा को केंद्र में रखकर बनाई गई फिल्म डर का प्रदर्शन किया गया। दोनों फिल्मों ने दर्शकों को आधुनिक समाज में सुरक्षा, जागरूकता और जिम्मेदारी के प्रति सजग रहने का संदेश दिया।

फिल्म क्यों का निर्देशन उदय ने किया है। फिल्म में साइबर अपराध की घटना के माध्यम से डिजिटल दुनिया में बढ़ते खतरों, ऑनलाइन असुरक्षा और निजी जानकारी की सुरक्षा से जुड़े सवालों को प्रभावी ढंग से उठाया गया। फिल्म ने डिजिटल पहचान और निजी सूचनाओं को सुरक्षित रखने, ऑनलाइन गतिविधियों में सतर्कता बरतने तथा संदिग्ध गतिविधियों की तत्काल सूचना देने की आवश्यकता पर जोर दिया।

वहीं, डर का निर्देशन नंदिनी ने किया। फिल्म में महिलाओं के प्रति समाज में व्याप्त भय और असुरक्षा की भावना को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया। फिल्म का संदेश रहा कि महिलाओं की सुरक्षा केवल उनकी व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं, बल्कि परिवार, समाज और संस्थाओं की भी सामूहिक जिम्मेदारी है। फिल्म ने महिलाओं के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण विकसित करने और भयमुक्त वातावरण तैयार करने की आवश्यकता रेखांकित की।

कार्यक्रम में महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता विभाग के एचओडी एवं प्रो. बिजेंद्र कुमार ने कहा कि फिल्में केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक संवाद और जनजागरूकता का प्रभावी साधन भी हैं। गंभीर सामाजिक समस्याओं को रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से प्रस्तुत करने से दर्शक उनसे भावनात्मक रूप से जुड़ते हैं और समाधान पर विचार करने के लिए प्रेरित होते हैं।

कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राओं शिल्पा कुमारी, हरिकेश, आदर्श, तनु और ब्यूटी यादव ने दोनों फिल्मों के विषय और उनके सामाजिक प्रभाव पर अपने विचार साझा किए। विद्यार्थियों ने साइबर अपराध को केवल तकनीकी समस्या मानने के बजाय इसे व्यक्ति, परिवार और समाज से जुड़ा व्यापक मुद्दा बताया। उन्होंने डिजिटल माध्यमों के इस्तेमाल में सावधानी, निजी जानकारी की सुरक्षा और साइबर घटनाओं पर तत्काल प्रतिक्रिया की आवश्यकता पर जोर दिया।

शिल्पा कुमारी ने महिला सुरक्षा के संदर्भ में जागरूकता को आवश्यक बताते हुए कहा कि महिलाओं को भय के वातावरण में नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और सम्मान के साथ जीवन जीने का अधिकार मिलना चाहिए। हरिकेश ने साइबर सुरक्षा को वर्तमान पीढ़ी की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी बताया। आदर्श ने साइबर दुनिया और वास्तविक सामाजिक जीवन, दोनों में जागरूकता को सुरक्षा का आधार बताया।

तनु ने महिला सुरक्षा को केवल कानून का विषय न मानकर सामाजिक सोच में बदलाव से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। वहीं ब्यूटी यादव ने सामाजिक संदेशों को युवाओं तक पहुंचाने में रचनात्मक फिल्मों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया।

कार्यक्रम में यह संदेश प्रमुखता से उभरा कि साइबर अपराध और महिला सुरक्षा जैसी चुनौतियों का समाधान केवल कानून और प्रशासन के स्तर पर संभव नहीं है। इसके लिए परिवार, शैक्षणिक संस्थानों, शिक्षकों, विद्यार्थियों, युवाओं और नागरिक समाज की सामूहिक भागीदारी जरूरी है।

दोनों फिल्मों की विषय-वस्तु अलग होने के बावजूद उनका मूल संदेश समाज को जागरूक, संवेदनशील और जिम्मेदार बनाने का रहा। क्यों ने डिजिटल दुनिया में सावधानी और साइबर सुरक्षा की जरूरत बताई, जबकि डर ने महिलाओं के लिए सुरक्षित और भयमुक्त सामाजिक वातावरण की आवश्यकता को सामने रखा।

15 अगस्त पर लाल किले के आसपास सुबह 4 से 10 बजे तक ट्रैफिक बंद, दिल्ली पुलिस ने जारी की एडवाइजरी

नई दिल्ली, 12 अगस्त (हि.स.)। स्वतंत्रता दिवस समारोह को लेकर दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने राजधानी में विस्तृत ट्रैफिक एडवाइजरी जारी की है। 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री के राष्ट्र के नाम संबोधन के दौरान सुरक्षा कारणों से लाल किले और आसपास के इलाकों में कई मार्गों पर सामान्य वाहनों की आवाजाही बंद रहेगी। ये प्रतिबंध सुबह चार बजे से 10 बजे तक लागू रहेंगे। इस दौरान केवल लेबल वाले अधिकृत वाहनों को प्रवेश की अनुमति होगी।

ट्रैफिक पुलिस के अनुसार, नेताजी सुभाष मार्ग पर दिल्ली गेट से चट्टा रेल चौक, लोधियन रोड पर दिल्ली जीपीओ से चट्टा रेल चौक, एसपी मुखर्जी मार्ग पर एचसी सेन मार्ग से यमुना बाजार चौक, चांदनी चौक रोड पर फाउंटेन चौक से लाल किला, निषाद राज मार्ग पर रिंग रोड से नेताजी सुभाष मार्ग, एस्प्लेनेड रोड और इसके लिंक रोड तथा राजघाट से आईएसबीटी तक रिंग रोड पर सुबह चार से 10 बजे तक सामान्य यातायात बंद रहेगा। जिन वाहनों के पास समारोह या रिहर्सल के पार्किंग लेबल नहीं हैं, उन्हें सुबह चार से 10 बजे के बीच इंडिया गेट के सी-हेक्सागन, कॉपरनिकस मार्ग, मंडी हाउस, सिकंदरा रोड, डब्ल्यू प्वाइंट, ए-प्वाइंट तिलक मार्ग, मथुरा रोड, बीएसजेड मार्ग, नेताजी सुभाष मार्ग, जेएलएन मार्ग और रिंग रोड के कई हिस्सों से बचने की सलाह दी गई है।

नॉर्थ-साउथ आने-जाने के लिए ये रास्ते

दक्षिण से उत्तर दिल्ली जाने वाले लोग अरविंदो मार्ग-सफदरजंग रोड-कमाल अतातुर्क मार्ग-कौटिल्य मार्ग-मदर टेरेसा क्रिसेंट-पार्क स्ट्रीट-मंदिर मार्ग-पंचकुइयां रोड-रानी झांसी रोड का इस्तेमाल कर सकते हैं। दूसरे विकल्प के तौर पर कनॉट प्लेस से मिंटो रोड, भवभूति मार्ग, अजमेरी गेट, श्रद्धानंद मार्ग, लाहौरी गेट चौक, नया बाजार और पीली कोठी होते हुए एसपी मुखर्जी मार्ग का रास्ता लिया जा सकता है। तीसरे विकल्प में निजामुद्दीन ब्रिज, पुश्ता रोड, जीटी रोड और युधिष्ठिर सेतु होते हुए क्ऱइळ पहुंचा जा सकता है।

ईस्ट-वेस्ट कॉरिडोर के लिए वैकल्पिक मार्ग

पूर्वी और पश्चिमी दिल्ली के बीच आने-जाने वालों के लिए एनएच-24/एनएच-9, निजामुद्दीन खट्टा, बारापुला रोड, एम्स फ्लाईओवर और रिंग रोड का इस्तेमाल किया जा सकता है। डीएनडी से बारापुला रोड होते हुए भी आगे बढ़ा जा सकता है। विकास मार्ग से आने वाले वाहन आईपी मार्ग, डीडीयू मार्ग, मिंटो रोड और फिर कनॉट प्लेस या अजमेरी गेट की ओर जा सकेंगे।

डीएनडी-एनएच-24/एनएच-9-युधिष्ठिर सेतु-सिग्नेचर ब्रिज-वजीराबाद ब्रिज खुला रहेगा। हालांकि पुराना लोहे का पुल और शांति वन की ओर जाने वाला गीता कॉलोनी पुल बंद रहेगा।

आधी रात से भारी वाहनों और अंतरराज्यीय बसों पर रोक

ट्रैफिक पुलिस के अनुसार 14 अगस्त की रात 12 बजे से 15 अगस्त सुबह 11 बजे तक निजामुद्दीन खट्टा से वजीराबाद ब्रिज के बीच मालवाहक वाहनों को अनुमति नहीं होगी। इसी अवधि में महाराणा प्रताप क्ऱइळ और सराय काले खां क्ऱइळ के बीच अंतरराज्यीय बसों की आवाजाही भी प्रतिबंधित रहेगी।

इसी तरह डीटीसी समेत स्थानीय बसें 14 अगस्त की आधी रात से 15 अगस्त सुबह 11 बजे तक कश्मीरी गेट आईएसबीटी से एनएच-24/निजामुद्दीन खट्टा के बीच रिंग रोड पर नहीं चलेंगी। उन्हें वैकल्पिक मार्गों पर भेजा जाएगा। लोधियन रोड, नेताजी सुभाष मार्ग, एसपी मुखर्जी मार्ग और रिंग रोड के कई हिस्सों पर भी बसों की आवाजाही बंद रहेगी।

रेलवे स्टेशन जाने वालों के लिए अलग व्यवस्था

पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन जाने वालों को पश्चिम और दक्षिण दिल्ली से मदर टेरेसा क्रिसेंट, पार्क स्ट्रीट, मंदिर मार्ग, पंचकुइयां रोड, रानी झांसी रोड, आजाद मार्केट, बुलेवार्ड रोड और मोरी गेट होते हुए जाने की सलाह दी गई है। उत्तर और पूर्वी दिल्ली से भी मोरी गेट, पुल डफरिन और एसपी मुखर्जी मार्ग का इस्तेमाल किया जा सकता है। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन जाने के लिए पूर्वी दिल्ली से विकास मार्ग, डीडीयू मार्ग और भवभूति मार्ग, जबकि पश्चिमी दिल्ली से पूसा रोड, हनुमान मंदिर, पंचकुइयां रोड, कनॉट प्लेस और चेल्म्सफोर्ड रोड का विकल्प रहेगा। आईएसबीटी कश्मीरी गेट जाने वालों के लिए दक्षिण और नई दिल्ली से मदर टेरेसा क्रिसेंट, पार्क स्ट्रीट, मंदिर मार्ग, पंचकुइयां रोड और रानी झांसी रोड का रास्ता रहेगा। उत्तर दिल्ली से क्ऱइळ जाने पर कोई विशेष प्रतिबंध नहीं रहेगा।

बसों के रूट भी बदले

दक्षिण दिल्ली से लाल किला, पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन और फाउंटेन की ओर जाने वाली बसों को रिंग रोड, एनएच-24, पुश्ता रोड, नए आईएसबीटी ब्रिज और बुलेवार्ड रोड की ओर डायवर्ट किया जाएगा। पूर्वी दिल्ली से आने वाली बसों को भी वैकल्पिक मार्गों से भेजा जाएगा।

रोशनारा रोड से पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन आने वाली बसें तीस हजारी कोर्ट के पास रुकेंगी। पुरानी रोहतक रोड से आने वाली बसें मोरी गेट पर और नई रोहतक रोड से आने वाली बसें गोखले मार्ग पर निर्धारित स्थानों पर रोकी जाएंगी। अजमेरी गेट और मिंटो ब्रिज की ओर से आने वाली बसों को तुर्कमान गेट के सामने असफ अली रोड तक भेजा जाएगा। अंतरराज्यीय बसों के लिए भी अलग डायवर्जन लागू रहेगा। गाजियाबाद से आने वाली बसें भोपुरा चुंगी और वजीराबाद रोड होते हुए आईएसबीटी कश्मीरी गेट पहुंचेंगी। फरीदाबाद से आने वाली बसों को सराय काले खां पर रोकने या रिंग रोड के वैकल्पिक मार्ग से क्ऱइळ भेजने की व्यवस्था की गई है।

पांच जगह तैनात रहेंगी डीटीसी रिकवरी वैन

ट्रैफिक व्यवस्था सामान्य होने तक डीटीसी की रिकवरी वैन गोखले मार्ग,

मानसून सत्र में 4 विधेयक पारित, आठवीं विधानसभा में अब तक 19 कैग रिपोर्ट हुई पेश

नई दिल्ली, 12 अगस्त (हि.स.)। दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि मानसून सत्र में 13 घंटे 19 मिनट की कार्यवाही में चार विधेयक पारित किए गए। इसके अलावा आठवीं विधानसभा के छह सत्रों में 19 कैग रिपोर्ट पटल पर पेश हुई है। उन्होंने बुधवार को विधानसभा में प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए यह जानकारी देते हुए कहा कि मानसून सत्र में नेता प्रतिपक्ष लगातार अनुपस्थिति रहीं। विजेंद्र गुप्ता ने बताया कि मानसून सत्र के दौरान चार महत्वपूर्ण विधेयक पेश किए गए और पारित किए गए। इनमें दिल्ली बेड एंड ब्रेकफास्ट प्रतिष्ठान (निरसन) विधेयक, 2026; नागरिकों को समयबद्ध और सुगम सेवाओं की उपलब्धता के अधिकार से संबंधित विधेयक, 2026; दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड (संशोधन) विधेयक, 2026; तथा दिल्ली अग्निशमन सेवा (संशोधन) विधेयक, 2026 शामिल हैं। उन्होंने कहा कि ये कानून जन सेवाओं की बेहतर व्यवस्था, शहरी आश्रय प्रशासन को मजबूत करने और दिल्ली अग्निशमन सेवा के कामकाज में सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि नियम 280 के तहत सदस्यों ने कुल 52 जनहित के मामले उठाए। सामान्यतः प्रतिदिन 10 सदस्यों के लिए निर्धारित सीमा के बावजूद इस बार एक ही दिन में 23 सदस्यों को जनहित के मुद्दे उठाने का अवसर दिया गया।

उन्होंने बताया कि 22 विपक्षी सदस्यों वाली विधानसभा में विपक्ष के लगभग 20 सदस्य सदन में उपस्थित रहे। वहीं, सत्तापक्ष की भी 48 में से लगभग 44झ45 सदस्य के साथ मजबूत उपस्थिति रही। विजेंद्र गुप्ता ने सातवीं दिल्ली विधानसभा की तुलना की, जिसने अपने पूरे पांच वर्ष के कार्यकाल में केवल पांच सत्र आयोजित किए थे। इसके विपरीत आठवीं दिल्ली विधानसभा ने डेढ़ वर्ष से भी कम समय में छह सत्र आयोजित किए हैं। उन्होंने कहा कि सदस्यों ने सदन में कूड़ा निस्तारण, जलभराव, आवारा पशु, पीडब्लूडी की सड़कों और बिजली के बिलों सहित कई महत्वपूर्ण नागरिक समस्याओं को उठाया।

स्थायी समिति अध्यक्ष सत्या शर्मा ने निगमायुक्त को लिखा पत्र

नई दिल्ली, 12 अगस्त (हि.स.)। दिल्ली में हो रही बारिश के कारण विभिन्न क्षेत्रों की सड़कों पर बने गड्ढों एवं क्षतिग्रस्त सड़कों की समस्या को गंभीरता से लेते हुए दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) की स्थायी समिति की अध्यक्ष सत्या शर्मा ने बुधवार को निगमायुक्त संजीव खिरवार को पत्र लिखकर इस संबंध में तत्काल प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने को कहा है। स्थायी समिति अध्यक्ष सत्या शर्मा ने पत्र में कहा कि लगातार हो रही बारिश के कारण कई सड़कों की स्थिति खराब हो गई है तथा अनेक स्थानों पर सड़कें टूटने और गड्ढे होने की शिकायतें सामने आ रही हैं। इन गड्ढों के कारण वाहन चालकों एवं पैदल यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है तथा दुर्घटनाओं और यातायात संबंधी समस्याओं की आशंका बनी रहती है। बारिश के दौरान पानी भर जाने के कारण कई गड्ढे स्पष्ट रूप से दिखाई भी नहीं देते, जिससे स्थिति और गंभीर हो जाती है। उन्होंने निगमायुक्त को कहा कि सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए जाए कि अपने-अपने क्षेत्र की सड़कों का निरीक्षण कर गड्ढों एवं क्षतिग्रस्त हिस्सों की पहचान की जाए तथा प्राथमिकता के आधार पर उनकी तत्काल मरम्मत सुनिश्चित की जाए।

भविष्यफल

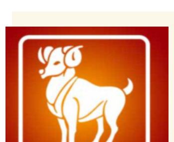

मेष- जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। कामकाज की अधिकता रहेगी। व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेंगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अर्थपक्ष मजबूत रहेगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। शुभांक-7-8-9

वृष- कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। आनन्ददायक वातावरण बनेगा। शुभांक-2-7-9

मिथुन- कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। होश में रहकर कार्य करें। कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते है। शुभांक-3-7-9

कर्क- राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। श्रम साध्य कार्यों में सफल होंगे। कुछ महत्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। शुभांक-4-8-9

सिंह- व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। शत्रुभय, ङ्कषचता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा। कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। सिर्फ आश्वासनों से संतोष करना पड़ेगा। शुभांक-3-6-8

कन्या- मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। कामकाज में आ रही बाधा को दूर कर लेंगे। सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बनेगी। शुभांक-4-5-9

तुला- नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। परिवारजनों का सहयोग बना रहेगा। मेहमानों का आगमन होगा। शुभांक-3-7-9

वृश्चिक- पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। मेहमानों का आगमन होगा। विद्यार्थियों को लाभ। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। राजकीय कार्यों से लाभ। धीरे-धीरे लाभ का मार्ग प्रशस्त होगा। उचित समय का इन्तजार करें। शुभांक-2-7-8

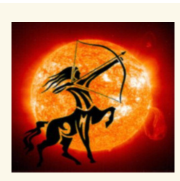

धनु- आय के अच्छे योग बनेंगे। संतान की उन्नति के योग हैं। स्त्री-संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा। आत्मचिंतन करें। पुराने मित्र से मिलन होगा। स्वविवेक से कार्य करें। शत्रुपक्ष से सावधान रहें। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। आत्मविश्वास बढ़ेगा। अर्थपक्ष मजबूत रहेगा। इच्छित कार्य सफल होंगे। शुभांक-3-6-9

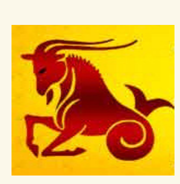

मकर- आगे-आगे गौरख जागे वाली कहावत चरितार्थ होगी। मेहमानों का आगमन होगा। परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। मीठे बोलने वालों से संभल कर रहें। शुभांक-4-6-8

कुम्भ- पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। शुभ कार्यों में व्यय होगा। जीवन साथी अथवा यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिलेगा। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभांक-1-3-7

मीन- लाभ में आशातीत वृद्धि तय है मगर नकारात्मक रुख न अपनाएं। विशिष्ट जनों से मेल-मुलाकात होगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। स्वास्थ्य मध्यम होगा। व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शुभांक-1-5-9

प्रोजक्ट की अनुमानित लागत 1.2 ट्रिलियन डॉलर से भी हो सकती है ज्यादा

यूएसए के गोल्डन डोम इंटरसेप्टर के शुरुआती परीक्षण पूर्ण सफल

● वॉशिंगटन / (एजेंसी)

गोल्डन डोम मिसाइल रक्षा कार्यक्रम के लिए अंतरिक्ष आधारित इंटरसेप्टर बनाने वाले अमेरिकी डेवलपर्स शुरुआती टेस्ट सफलतापूर्वक पूरे करने के बाद परीक्षण के अगले चरण की ओर बढ़ रहे हैं। यह जानकारी अमेरिका स्पेस फोर्स के जनरल माइकल गुएटलीन ने दी, जो इस परियोजना का नेतृत्व कर रहे हैं। ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई। ब्लूमबर्ग ने पहले सूत्रों के हवाले से बताया था कि पेंटागन की योजना 2026 के अंत तक अंतरिक्ष आधारित मिसाइल रक्षा कार्यक्रम के तहत शुरुआती परीक्षण पूरे करने की थी।

शुरुआती परीक्षण में सेंसर से इंटरसेप्टर तक डेटा भेजना और उनके स्पेसक्राफ्ट के प्रोपल्शन सिस्टम की टेस्टिंग शामिल थी। गुएटलीन ने मंगलवार को एक कॉन्फ्रेंस में बताया कि कंपनियाँ अगले चरण की ओर बढ़ रही हैं, अपनी तकनीक को सीधे अंतरिक्ष परीक्षण करना। यूएस राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने मई 2025 में गोल्डन डोम परियोजना का अनावरण किया था, जिसकी अनुमानित लागत लगभग 175 अरब डॉलर रखी गई, लेकिन अब यह 1.2 ट्रिलियन डॉलर या इससे भी ज्यादा पहुंच सकती है। यह मल्टी-लेयर्ड शील्ड मिसाइल खतरों से अमेरिका की सुरक्षा के लिए ज़मीन, समुद्र और स्पेस सिस्टम को एक साथ जोड़ेगी।

रीगन के एसडीआई से तुलना और विकास

1980 के दशक में राष्ट्रपति रीगन ने एसडीआई की घोषणा की थी, जो स्पेस-बेस्ड मिसाइल डिफेंस का सपना था। उस समय तकनीक कच्ची थी, इसलिए इसे स्टार वॉर्स कहा गया। अब आधुनिक सेंसर, एआई, डायरेक्टेड एनर्जी और सस्ती स्पेस लॉन्च तकनीक के कारण गोल्डन डोम ज्यादा व्यावहारिक लग रहा है। लक्ष्य है 2029 तक शुरुआती क्षमता हासिल करना।

तकनीक और अंतरराष्ट्रीय प्रभाव: स्पेस-बेस्ड इंटरसेप्टर्स महंगे और मुश्किल हैं। कुछ विश्लेषक कहते हैं कि 100 प्रतिशत सुरक्षा असंभव है, खासकर रूस और चीन जैसे बड़े दुश्मनों के खिलाफ। रूस और चीन इसे आक्रामक मानकर अपना हथियार कार्यक्रम बढ़ा सकते हैं। इससे हथियारों की नई दौड़ शुरू हो सकती है। अमेरिका को औद्योगिक क्षमता बढ़ानी होगी ताकि बड़े पैमाने पर उत्पादन हो सके। फिर भी समर्थक कहते हैं कि यह पीस थ्रू स्ट्रेंथ की नीति है। दुश्मन हमला करने से पहले सोचेंगे। यह सफल टेस्ट गोल्डन डोम को आगे बढ़ाएगा। अगले चरणों में ज्यादा बड़े टेस्ट और स्पेस कंपोनेंट्स शामिल किए जाएंगे. पेंटागन और इंडस्ट्री मिलकर काम कर रही है. ट्रंप प्रशासन इसे वॉर डिपार्टमेंट के तहत मजबूत कर रहा है। अगर सफल हुआ तो अमेरिका की होमलैंड सुरक्षा अभूतपूर्व स्तर पर पहुंच जाएगी।

गोल्डन डोम की परतें: लेयर्ड डिफेंस सिस्टम गोल्डन डोम एक सिस्टम ऑफ सिस्टम्स है। इसमें जमीन, समुद्र, हवा और स्पेस आधारित सेंसर और इंटरसेप्टर्स शामिल हैं। स्पेस-बेस्ड सेंसर शुरुआती चेतावनी के लिए उपग्रह। पारंपरिक मिसाइलों को रोकने के लिए ग्राउंड और शिप-बेस्ड इंटरसेप्टर्स। लेजर और माइक्रोवेव हथियार तेज और सस्ते हमलों के लिए डायरेक्टेड एनर्जी है।

भारत को भारत बनाने के साथ भारत के मस्तिष्क को भी भारतीय बनाना होगा : चन्द्रकान्त

चित्रकूट, 12 अगस्त (दिव्य भारत ब्यूरो)। महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय में बुधवार को भारत की सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत, इतिहास एवं सनातन संस्कृति संवर्धन विषय पर परिचर्चा आयोजित की गई। रजत जयंती भवन के बोर्डरूम में आयोजित कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रज्ञा प्रवाह के अखिल भारतीय सह संयोजक चन्द्रकान्त रहे। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. आलोक चौबे ने की, जबकि संयोजन पूर्व कुलपति एवं कला संकाय के अधिष्ठाता प्रो. कपिल देव मिश्रा ने किया।

मुख्य वक्ता चन्द्रकान्त ने कहा कि भारत वर्तमान में परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। आने वाले 30-40 वर्षों में देश को राजनीतिक स्वाधीनता से आगे बढ़कर वास्तविक अर्थों में स्वतंत्रता की दिशा में सफल होना है। इसके लिए भारत को भारत बनाने के साथ भारत के मस्तिष्क को भी भारतीय बनाना होगा। उन्होंने कहा कि भारत को समझने के लिए उसके स्वरूप, चिंतन, दृष्टिकोण और जीवन-पद्धति को भारतीय दृष्टि से समझना जरूरी है।

उन्होंने ग्रामोदय विश्वविद्यालय को शिक्षा को समाज, ग्राम और भारतीय जीवन मूल्यों से जोड़ने वाला विशिष्ट संस्थान बताते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। चन्द्रकान्त ने श्री अरविन्द, स्वामी विवेकानंद, श्री रविशंकर, माता अमृतानंदमयी, सद्गुरु जग्गी वासुदेव, रामकृष्ण मिशन और गायत्री परिवार सहित विभिन्न आध्यात्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के कार्यों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि भारतीय आध्यात्मिक चिंतन और जीवन-दृष्टि के प्रति दुनिया में विश्वास बढ़ रहा है तथा अनेक लोग इससे प्रेरणा ले रहे हैं।

अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलगुरु प्रो. आलोक चौबे ने सनातन धर्म एवं भारतीय संस्कृति की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारतीय सनातन परंपरा में दुनिया को शांति, सौहार्द और सह-अस्तित्व का मार्ग दिखाने की क्षमता है। उन्होंने कहा कि प्राचीन भारतीय संस्कृति और परंपराओं के मूल तत्वों को समझकर वर्तमान पीढ़ी तक पहुंचाना आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि प्रज्ञा प्रवाह जैसे संगठनों को सांस्कृतिक जड़ों से दूर हो गए लोगों को सही दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। विकसित भारत-2047 के लक्ष्य को हासिल करने के लिए भारतीय ज्ञान, संस्कृति और जीवन मूल्यों को आधार बनाकर आगे बढ़ने का उन्होंने आह्वान किया।

प्रज्ञा प्रवाह, कानपुर के प्रांत संयोजक मुनीश ने संगठन की गतिविधियों और विभिन्न क्षेत्रों में किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी। शोध विंग के प्रांत प्रमुख डॉ. सुशील त्रिपाठी ने अतिथियों का परिचय कराया।

ग्रामोदय विश्वविद्यालय में भारतीय सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विरासत, इतिहास और सनातन संस्कृति के संवर्धन पर परिचर्चा

कार्यक्रम संयोजक प्रो. कपिल देव मिश्रा ने परिचर्चा की पृष्ठभूमि और उद्देश्य पर प्रकाश डाला। सनातन शोध संस्थान, दिल्ली के महासचिव संदीप रिछारिया ने भी अपने विचार रखे। पूर्व कुलगुरु प्रो. भरत मिश्रा ने भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रमों में स्थान दिए जाने को सकारात्मक कदम बताया।

परिचर्चा के दौरान प्रो. आर.सी. त्रिपाठी, प्रो. रवि चौरे सहित शिक्षकों एवं प्रतिभागियों ने विभिन्न विषयों पर प्रश्न और जिज्ञासाएं रखीं, जिनका वक्ताओं ने समाधान किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, शोधार्थी और अन्य अकादमिक सदस्य उपस्थित रहे।

परिचर्चा में भारतीय ज्ञान परंपरा, सांस्कृतिक विरासत, सनातन जीवन-दृष्टि तथा विकसित भारत के निर्माण में शिक्षा संस्थानों की भूमिका को लेकर व्यापक और विचारोत्तेजक विमर्श हुआ।

भारतीय भौतिक विज्ञानी दीपक धर 2026 डिराक पदक से सम्मानित

● लंदन / (हि.स.)

भारतीय भौतिक विज्ञानी दीपक धर को सांख्यिकीय यांत्रिकी में उनके अहम योगदान को लेकर 2026 डिराक पदक से सम्मानित किया है। यह सैद्धांतिक भौतिकी के क्षेत्र में दुनिया के प्रमुख सम्मानों में एक है।

इटली स्थित आईसीटीपी ने बयान में कहा कि इस वर्ष धर समेत चार भौतिक विज्ञानियों को यह पदक प्रदान किया गया है। धर बेंगलुरु स्थित द्घटाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्चद्य के इंटरनेशनल सेंटर फॉर थियोरेटिकल साइंसेज में प्रोफेसर हैं। 1985 में स्थापित डिराक पदक सैद्धांतिक भौतिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदानों को मान्यता देता है।

इस पुरस्कार को पाने वाले ऐसे कई वैज्ञानिक हैं जिन्हें बाद में नोबेल पुरस्कार और फील्ड्स मेडल समेत दुनिया के सर्वोच्च वैज्ञानिक सम्मान मिले।

केरल से केरलम, नाम परिवर्तन नहीं, ऐतिहासिक पहचान की पुनर्स्थापना : तरुण चुग

नई दिल्ली, 12 अगस्त (दिव्य भारत ब्यूरो)। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री एवं राज्यसभा सांसद तरुण चुग ने राज्यसभा में केरल (नाम परिवर्तन) विधेयक, 2026 का समर्थन करते हुए इसे केवल नाम बदलने का विषय नहीं, बल्कि केरल की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान की पुनर्स्थापना का अवसर बताया। उन्होंने सभी दलों के सदस्यों से राजनीतिक मतभेदों से ऊपर उठकर विधेयक को सर्वसम्मति से पारित करने की अपील की।

चुग ने कहा कि केरलम नाम केरल की जनता की भाषा, संस्कृति और ऐतिहासिक स्मृतियों में लंबे समय से जीवित रहा है। उनके अनुसार, यह इतिहास बदलने का प्रयास नहीं, बल्कि प्रचलित ऐतिहासिक पहचान को संवैधानिक अभिलेखों में उचित स्थान देने की पहल है। उन्होंने केरल की सांस्कृतिक विरासत का उल्लेख करते हुए आदि शंकराचार्य का विशेष रूप से स्मरण किया। चुग ने कहा कि कालडी से निकलकर आदि शंकराचार्य ने देश की आध्यात्मिक परंपरा को नई दिशा दी और चारों दिशाओं को जोड़ने का काम किया।

उन्होंने इसे एक भारत, श्रेष्ठ भारत की भावना से जोड़ते हुए कहा कि केरल की पहचान भारत की व्यापक सांस्कृतिक एकता का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

विपक्ष की ओर से नाम बदलने की उपयोगिता पर उठाए गए सवालों का जवाब देते हुए चुग ने कहा कि सवाल यह नहीं है कि नाम में क्या रखा है, बल्कि यह है कि नाम में क्या-क्या रखा है। उन्होंने कहा कि इस नाम में हजारों वर्षों का इतिहास, भाषा, संस्कृति, परंपरा और समाज का आत्मबोध समाहित है। उन्होंने केरल की शिक्षा और गणित की परंपरा का भी उल्लेख किया और कहा कि राज्य की पहचान केवल शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि अध्यात्म, संस्कृति और ज्ञान की समृद्ध परंपरा से भी जुड़ी हुई है।

चुग ने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में ऐक्य केरलम की भावना मजबूत थी। भाषाई आधार पर 1 नवंबर 1956 को राज्य के गठन के बाद भी जनता की सांस्कृतिक और भाषाई चेतना में केरलम नाम कायम रहा। उन्होंने कहा कि आज भी 1 नवंबर को मनाया जाने वाला केरलम पिरवी इसका उदाहरण है। केरल को केंद्र से पर्याप्त सहायता नहीं मिलने के विपक्ष के आरोपों पर चुग ने राज्यसभा में आंकड़े प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि 2004 से 2014 के बीच केरल को कर हस्तांतरण के रूप में लगभग 46,300 करोड़ रुपये मिले, जबकि 2014 से 2024 के बीच यह राशि बढ़कर लगभग 1.57 लाख करोड़ रुपये हो गई। उन्होंने दावा किया कि सहायता अनुदान के रूप में यूपीए सरकार के दशक में केरल को 25,630 करोड़ रुपये मिले थे, जबकि 2014 के बाद यह राशि बढ़कर 1,56,214 करोड़ रुपये हो गई, जो उनके अनुसार 509 प्रतिशत की वृद्धि है। चुग ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत-2047 के संकल्प का उद्देश्य केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसा आत्मविश्वासी भारत बनाना है जिसे अपनी भाषा, संस्कृति, परंपरा और विरासत पर गर्व हो।

उन्होंने कहा कि केरल से केरलम की यात्रा अपनी जड़ों से जुड़कर भविष्य की ओर बढ़ने का प्रयास है। यह भाषा से संविधान, विरासत से विकास और स्थानीय पहचान से राष्ट्रीय एकता तक की यात्रा है।

चुग ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह को इस पहल के लिए बधाई देते हुए कहा कि केरलम को संवैधानिक पहचान मिलना राज्य की भाषाई और सांस्कृतिक आकांक्षाओं का सम्मान है।

उन्होंने सभी राजनीतिक दलों से अपील की कि वे राजनीतिक मतभेदों से ऊपर उठकर इस विधेयक का समर्थन करें।

यूक्रेन से विवाद में रूस का मध्यस्थ बनेंगे पूर्व सीजीआई डीवाई चंद्रचूड़

यूक्रेनी बैंक रूस से वार में खोई संपत्तियों के लिए मांग रहा मुआवजा

● मॉस्को / (एजेंसी)

रूस ने भारत के पूर्व सीजेआई डी वाई चंद्रचूड़ को यूक्रेन से संपत्तियों को लेकर विवाद के एक मामले में अपना मध्यस्थ नियुक्त किया है। दरअसल, यूक्रेन के सरकारी स्वामित्व वाले ओस्चादबैंक ने डोनेट्स्क, लुहांस्क, खेरसोन और जापोरिजिया में संपत्तियों को लेकर एक विवाद दाखिल किया है।

इसमें उसने रूस से इन इलाकों में युद्ध से हुए नुकसान की भरपाई के लिए मुआवजे की मांग की है। ओस्चैडबैंक का कहना है कि रूस के आचरण के कारण उसे चारों क्षेत्रों में अपनी संपत्ति और परिचालन का काफी नुकसान हुआ है।

बैंक ने 24 जुलाई 2025 को रूस को विवाद की सूचना भेजने के बाद 7 अप्रैल 2026 को औपचारिक रूप से मध्यस्थता प्रक्रिया शुरू की। ऐसे में रूस ने अपनी तरफ से मध्यस्थता कार्यवाही में पूर्व भारतीय सीजेआई जस्टिस डी वाई चंद्रचूड़ को मध्यस्थ नियुक्त किया है।

चंद्रचूड़ की भूमिका क्या होगी

ग्लोबल आर्बिट्रेशन रिव्यू ने अगस्त 2025 में अपनी रिपोर्ट में बताया था कि रूस ने विंटरशाल डीया मामले और यूक्रेनी उपयोगिता कंपनी उक्रेनर्गो से जुड़े एक अन्य विवाद में मध्यस्थ के रूप में कार्य करने के लिए एक पूर्व भारतीय मुख्य न्यायाधीश से संपर्क करने की बात स्वीकार की थी। लेकिन इस नियुक्ति का यह मतलब नहीं है कि चंद्रचूड़ रूस के वकील के रूप में काम करेंगे या उसके पक्ष को रखेंगे, बल्कि वे एक पक्ष द्वारा नियुक्त मध्यस्थ के रूप में, तीन सदस्यीय न्यायाधिकरण के एक सदस्य के रूप में बैठेंगे। इन तीनों से स्वतंत्र निर्णय लेने की अपेक्षा की जाती है।

ओस्चैडबैंक ने रूस और यूक्रेन के बीच निवेश के संवर्धन और पारस्परिक संरक्षण पर 1998 में हस्ताक्षरित समझौते के तहत मामला दर्ज किया है। इसे आमतौर पर रूस-यूक्रेन द्विपक्षीय निवेश संधि या बीआईटी के रूप में जाना जाता है। बैंक का कहना है कि रूस के आचरण के परिणामस्वरूप डोनेट्स्क, लुहांस्क, खेरसोन और जापोरिजिया में उसकी काफी संपत्ति और परिचालन का नुकसान हुआ है।

थाईलैंड में हथियार खरीदने के परमिट जारी करने पर रोक

बैंकॉक, आरएनएन। थाईलैंड सरकार ने राजधानी बैंकॉक के पास हुई दो घातक गोलीबारी की घटनाओं के बाद बढ़े जन आक्रोश को देखते हुए बंदूक नियंत्रण कानूनों को सख्त करने और अवैध हथियारों के खिलाफ व्यापक अभियान चलाने की प्रतिबद्धता जताई है। थाईलैंड में पिछले हफ्ते एक स्कूल में हुई भीषण गोलीबारी की घटना के बाद नए हथियार खरीदने के परमिट जारी करने पर फिलहाल रोक लगा दी गई है।

पश्चिमी देशों के रूसी व्यापारिक जहाजों की जब्ती पर पुतिन की सख्त चेतावनी

● युझनो-साखालिंस्क / (एजेंसी)

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने चेतावनी देते हुए कहा है अगर पश्चिमी देश रूस के व्यावसायिक जहाजों को जब्त करने या उनकी संपत्तियों को बेचने की योजना को अमल में लाते हैं, तो रूस इसका जैसे को तैसा' करारा जवाब देगा।

जैसे को तैसा जवाब देगा रूस

रूस के सुदूर पूर्वी क्षेत्र साखालिंस्क में प्रशांत महासागरीय बेड़े के नौसैनिक अभ्यासों का निरीक्षण करने पहुंचे पुतिन ने यूरोपीय संघ (ईयू) और पश्चिमी देशों की इस तरह की कार्रवाइयों को सीधे तौर पर समुद्री डकैती करार दिया। रूसी संवाद समिति तास के अनुसार रूसी नौसैनिकों और अफसरों को संबोधित करते हुए पुतिन ने कहा कि यूरोपीय देशों द्वारा अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानूनों का उल्लंघन कर रूसी व्यापारिक जहाजों की आवाजाही को रोकने और उन्हें जब्त करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

उन्होंने स्पष्ट किया कि रूस का जवाबी कदम केवल उन्हीं समुद्री क्षेत्रों तक सीमित नहीं रहेगा जहां जहाजों को जब्त किया जायेगा, बल्कि रूस जहां भी उचित और आवश्यक समझेगा, चाहे वह प्रशांत महासागरीय बेड़े का अधिकार क्षेत्र ही क्यों न हो, वहां सख्त कार्रवाई करेगा।

न्यूयॉर्क और न्यू जर्सी मनाएंगे भारत का स्वतंत्रता दिवस

न्यूयॉर्क, आरएनएन। अमेरिका के दो राज्यों, न्यूयॉर्क और न्यू जर्सी ने एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत की यात्रा और भारतीय-अमेरिकी समुदाय के योगदान को मान्यता देने के लिए 15 अगस्त को उसके स्वतंत्रता दिवस को मनाने की घोषणा की है। न्यूयॉर्क की गवर्नर कैथी होकुल ने 15 अगस्त 2026 को पूरे राज्य में भारत का स्वतंत्रता दिवस मनाने की घोषणा की। वहीं, न्यू जर्सी की गवर्नर मिकी शेरिल ने भी इसी तरह की घोषणा की है। न्यूयॉर्क स्थित भारत के महावाणिज्य दूतावास ने एक्स पर एक पोस्ट में यह जानकारी दी। महावाणिज्य दूतावास ने कहा कि ये घोषणाएं भारत के 80वें स्वतंत्रता दिवस समारोहों से पूर्व की गई हैं और इनमें भारत की स्वतंत्रता यात्रा तथा भारत यूएस के बीच साझा लोकतांत्रिक मूल्यों को रेखांकित किया गया है।

ऑटोमैटिक सिग्नलिंग प्रणाली के कमीशनिंग हेतु कल ट्रेनों के परिचालन में बदलाव

● अहमदाबाद / (एजेंसी)

14 अगस्त (शुक्रवार) को अहमदाबाद मंडल के आंबलियासन, जगुदण, मेहसाणा और भांडू मोटीदाऊ स्टेशनों के बीच रेल परिचालन को और बेहतर बनाने ऑटोमैटिक सिग्नलिंग प्रणाली के कमीशनिंग का कार्य किया जाएगा। इसके साथ ही अहमदाबाद-पालनपुर रेलखंड के संबंधित हिस्से में भी सिग्नलिंग से संबंधित कार्य किया जाएगा। ऑटोमैटिक सिग्नलिंग प्रणाली शुरू होने के बाद इस रेलखंड पर ट्रेनों के परिचालन की क्षमता बढ़ेगी। इससे ट्रेनों को स्टेशनों पर दूसरी ट्रेन के गुजरने या लाइन खाली होने की प्रतीक्षा कम करनी पड़ेगी और यात्री एवं मालगाड़ियों का परिचालन अधिक सुचारु एवं सुगम हो सकेगा। यात्रियों की सुविधा एवं सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए कुछ ट्रेनें रद्द, आंशिक रूप से रद्द अथवा परिवर्तित मार्ग पर संचालित की जाएंगी।

हर घर तिरंगा अभियान में ग्रामोदय विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों ने उकेरे राष्ट्रभक्ति के रंग

तिरंगा विषयक चित्रांकन के जरिए विद्यार्थियों ने कला के माध्यम से दिया देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता का संदेश

चित्रकूट, 12 अगस्त (दिव्य भारत ब्यूरो)। महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय में हर घर तिरंगा अभियान-2026 के तहत बुधवार को ललित कला विभाग में तिरंगा एवं राष्ट्रभावना से जुड़े विषयों पर चित्रांकन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कुलगुरु प्रो. आलोक चौबे के मार्गदर्शन में आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मक प्रतिभा के माध्यम से राष्ट्रप्रेम और देशभक्ति की भावनाओं को कैनवास पर उकेरा।

विद्यार्थियों ने अपने चित्रों में राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रप्रेम, स्वतंत्रता संग्राम तथा देश की एकता और अखंडता जैसे विषयों को कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान, राष्ट्रभक्ति और स्वतंत्रता आंदोलन के मूल्यों के प्रति जागरूकता बढ़ाना रहा।

कला संकाय के अधिष्ठाता एवं कार्यक्रम संयोजक प्रो. कपिल देव मिश्र ने विद्यार्थियों की सहभागिता की सराहना करते हुए कहा कि कला केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के प्रति भावनाओं को व्यक्त करने का प्रभावी माध्यम भी है। हर घर तिरंगा जैसे अभियान युवाओं को देश के इतिहास, स्वतंत्रता संघर्ष और राष्ट्रीय मूल्यों से जोड़ने का अवसर प्रदान करते हैं।

ललित कला विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. प्रसन्न पाटकर ने कहा कि तिरंगा विषय पर विद्यार्थियों का चित्रांकन उनकी राष्ट्रभावना और सृजनात्मक प्रतिभा का सुंदर समन्वय है। उन्होंने विद्यार्थियों से अभियान में सक्रिय सहभागिता करने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में शोध छात्रा मनु वर्मा, बिरसेन कुमार, प्रज्ञा मौर्या तथा बीएफए के विद्यार्थी प्रशान्त, आयुष्मान और बंशिका सोनी सहित अन्य छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

विश्वविद्यालय में अभियान के तहत आगामी दिनों में तिरंगा रंगोली, तिरंगा बुनाई, तिरंगे के साथ सेल्फी एवं छायाचित्र अपलोड, प्रश्नोत्तरी, तिरंगा यात्रा, राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रगान, विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस पर मौन जुलूस व श्रद्धांजलि सभा तथा अनुभव सत्र सहित विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

विश्वविद्यालय प्रशासन ने शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों से अभियान में सक्रिय सहभागिता करते हुए राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान और राष्ट्रभावना का संदेश जन-जन तक पहुंचाने की अपील की है।

साबरमती लोको शेड की तकनीकी सफलता

डब्ल्यूडीजी5 ईंजन में ई-स्टार्ट तकनीक का प्रयोग

● अहमदाबाद / (हि.स.)

रेल संचालन में गतिशीलता, विश्वसनीयता और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देते हुए पश्चिम रेलवे के साबरमती लोको शेड ने डब्ल्यूडीजी5 क्लास लोकोमोटिव (5500 एचपी) में दो अहम तकनीकी नवाचार पूरे किए हैं। इन नवोन्मेषी समाधानों से लोकोमोटिव का स्टार्ट टाइम लगभग एक घंटे से घटकर मात्र कुछ सेकंड रह गया है। साथ ही, महंगे आयातित स्पेयर पार्ट्स पर निर्भरता समाप्त होने से भारतीय रेल को 57.8 रुपए लाख से अधिक की प्रत्यक्ष बचत हुई है।

न्यूमेटिक से इलेक्ट्रिक स्टार्ट सिस्टम में परिवर्तन

भारतीय रेल में कुल 7 डब्ल्यूडीजी5 लोकोमोटिव उपलब्ध हैं, जो सभी साबरमती शेड में आबंटित हैं। इन लोकोमोटिव को स्टार्ट करने में 45 से 60 मिनट का समय लगता था और इनके न्यूमेटिक स्टार्ट सिस्टम के लिए न्यूमेटिक स्टार्ट मोटर, एसी इन्वर्टर और ऑक्सिलरी कंप्रेसर जैसे महंगे आयातित घटकों की आवश्यकता होती थी। साबरमती शेड के इंजीनियरों ने इस समस्या का स्थाई समाधान खोजते हुए सिस्टम को इलेक्ट्रिक स्टार्ट में परिवर्तित कर दिया।

संपादकीय

हम और तुम का भेदभाव महाभारत भी रच सकता है

अमेरिकी समाजशास्त्रियों ने मानव को तीन आयामों में समझाने का प्रयास किया है। पहला, कुछ मामलों में प्रत्येक व्यक्ति बिलकुल अद्वितीय होता है और किसी दूसरे जैसा नहीं होता। दूसरा, कुछ मामलों में वह कुछ लोगों के समान होता है। तीसरा, कुछ मामलों में वह पूरी मानव जाति के समान होता है। स्वाभाविक रूप से डीएनए की संरचना, उंगलियों के निशान और कई व्यक्तिगत विशेषताओं में हर व्यक्ति अलग होता है। वहीं रक्त समूह, शरीर की मूल जैविक संरचना, भोजन, नींद, भय और प्रजनन जैसी प्रवृत्तियों में सभी मनुष्य समान हैं। लेकिन जाति, वर्ग, नस्ल, देश, राजनीतिक विचारधारा, आर्थिक व्यवसाय और सामाजिक पहचान जैसी बातों में मनुष्य कुछ लोगों से जुड़ता है और कुछ से अलग हो जाता है। यहीं से समस्याओं और संघर्षों की शुरूआत होती है। किसी व्यक्ति का अद्वितीय होना समस्या नहीं है और न ही सभी मनुष्यों का समान होना कोई विवाद उत्पन्न करता है। समस्या तब पैदा होती है, जब व्यक्ति स्वयं को कुछ लोगों के साथ जोड़ता है और दूसरों से अलग मानने लगता है। एक समाजशास्त्री ने इसी आधार पर समाज को दो समूहों में बांटा, हम और वे। दूसरे शब्दों में कहें तो अपने और पराए, हम और तुम का विभाजन। मानव समाज में यह भेद हमेशा से मौजूद रहा है। कबीर ने कहा था कि कुएं का पानी एक ही होता है, केवल उसे भरने वाले बर्तन अलग-अलग होते हैं। यह बात बिलकुल सही है। लेकिन वास्तविकता यह भी है कि मनुष्य कुएं को भी मेरा और तुम्हारा बना देता है। भारतीय ऋषियों ने अद्वैत का सिद्धांत दिया, जिसमें समस्त सृष्टि को एक माना गया। संत नरसिंह मेहता ने भी कहा कि अलग-अलग आकार बनने के बाद नाम और रूप बदल जाते हैं, लेकिन मूल तत्व तो सोना ही रहता है। फिर भी व्यवहार में मनुष्य मेरा सोना और तुम्हारा सोना कहकर विभाजन कर लेता है। इतना ही नहीं, उसका प्रयास रहता है कि उसका सोना दूसरे से अधिक चमके। यही प्रतिस्पर्धा अनेक बार संघर्ष और हिंसा का कारण बन जाती है। समाजशास्त्री समनर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक फोकवेज में लिखा है कि मनुष्य में हमऔर वे का विभाजन धीरे-धीरे सामाजिक संरचना का हिस्सा बन जाता है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए हम, वे लोग हैं, जो उसके अपने हैं, जबकि वे बाहर के लोग हैं। इसी आधार पर इन-ग्रुप और आउट-ग्रुप का निर्माण होता है। अपने समूह के लोग समावेशी माने जाते हैं और दूसरे समूह के लोग बहिष्कृत। धीरे-धीरे हमारे और उनके बीच दूरी बढ़ती जाती है। प्रत्येक समूह स्वयं को श्रेष्ठ, अधिक संस्कारी और अधिक योग्य सिद्ध करने का प्रयास करता है। इसके बाद अलग-अलग पहचान के प्रतीक विकसित होते हैं। पहनावा बदल जाता है। खान-पान अलग हो जाता है। रहन-सहन और बोलचाल की शैली अलग पहचान बन जाती है। तिलक, पगड़ी, मूंछ, आभूषण, यहां तक कि नाम के आगे या पीछे लगाए जाने वाले शब्द भी समूह पहचान के प्रतीक बन जाते हैं। धीरे-धीरे यही पहचान मेरा और तेरा के संघर्ष का आधार बन जाती है। यह समझना कठिन नहीं कि मनुष्य कुछ बातों में विशिष्ट है और कुछ बातों में सभी के समान। लेकिन वह किन आधारों पर स्वयं को दूसरों से अलग स्थापित करता है? समाजशास्त्र इसके दो प्रमुख आधार बताता है- पहला, जन्म से प्राप्त सामाजिक स्थिति और दूसरा, अपने प्रयासों से अर्जित सामाजिक स्थिति। जन्म से प्राप्त स्थिति में व्यक्ति का कोई योगदान नहीं होता। परिवार, जाति, लिंग, नस्ल, आयु और जन्मभूमि जैसी बातें जन्म के साथ ही मिल जाती हैं। इन्हें बदला नहीं जा सकता। यूरोप के इतिहास में नस्लीय श्रेष्ठता के इसी विचार ने फासीवाद और नाजीवाद को जन्म दिया। यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया कि काकेशियन नस्ल की नार्डिक शाखा सबसे श्रेष्ठ है। इसी विचार ने विश्व को युद्ध, उपनिवेशवाद और गुलामी जैसी त्रासदियों की ओर धकेल दिया। बाद में मानवशास्त्रियों ने स्पष्ट कर दिया कि किसी भी नस्ल को जन्म के आधार पर श्रेष्ठ या हीन नहीं माना जा सकता। किसी नस्ल में जन्म लेने मात्र से बुद्धिमत्ता या क्षमता अधिक अथवा कम नहीं हो जाती। इसी वैज्ञानिक निष्कर्ष के बाद नस्लीय भेदभाव और दास प्रथा के विरुद्ध विश्वव्यापी आंदोलन खड़े हुए और अंततः गुलामी की व्यवस्था समाप्त हुई। नस्ल की तरह ही समाज में लिंग के आधार पर भी ऊंच-नीच का भेद पैदा किया गया है। जैविक दृष्टि से स्त्री और पुरुष अलग हैं, यह सत्य है, लेकिन पुरुष की श्रेष्ठता का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। इसके विपरीत जीवविज्ञान बताता है कि औसतन महिलाओं की आयु पुरुषों से अधिक होती है और कई परिस्थितियों में उनकी जैविक सहनशक्ति भी अधिक होती है। इसके बावजूद अधिकांश समाजों में पुरुष वर्चस्व को स्वाभाविक मान लिया गया। जाति का प्रश्न भी लगभग इसी प्रकार का है। यह सच है कि व्यक्ति किसी न किसी जाति में जन्म लेता है और जन्म के आधार पर जाति बदल नहीं सकता। किंतु किसी जाति को ऊंचा और किसी को नीचा मानना पूरी तरह सामाजिक व्यवस्था की देन है। यदि विभिन्न व्यवसाय हों तो यह स्वाभाविक है, लेकिन किसी व्यवसाय को श्रेष्ठ और किसी को हीन घोषित करना मनुष्य द्वारा निर्मित भेदभाव है। यही वह स्थान है, जहां कुछ लोग दूसरों को नीचे दिखाकर स्वयं को ऊंचा सिद्ध करने का प्रयास करते हैं और वर्चस्व की भावना जन्म लेती है। समय के साथ जाति की परिस्थितियां भी बदलती रही हैं। स्वतंत्रता के समय पिछड़ेपन का आधार मुख्यतः जाति को माना गया, क्योंकि उस समय सामाजिक परिस्थितियां भिन्न थीं।

लेकिन बदलते समाज में लगभग प्रत्येक जाति के भीतर आर्थिक और सामाजिक स्तरों का विभाजन दिखाई देता है। हर जाति में संपन्न, मध्यम और अत्यंत गरीब वर्ग मौजूद हैं। इसी कारण काका कालेलकर आयोग ने केवल जाति को ही नहीं, बल्कि निवास स्थान, पारंपरिक अथवा आधुनिक व्यवसाय तथा सामाजिक परिस्थितियों को भी पिछड़ेपन का आधार माना। उदाहरण के लिए, गांव में पारंपरिक जजमानी व्यवस्था के अंतर्गत कार्य करने वाला नाई आर्थिक रूप से पिछड़ा हो सकता है, जबकि शहर में आधुनिक सैलून या स्पा चलाने वाला उसी जाति का व्यक्ति आर्थिक रूप से संपन्न हो सकता है। यदि केवल जाति को आधार बनाया जाए तो दोनों को समान रूप से पिछड़ा मान लिया जाएगा, जबकि उनकी वास्तविक परिस्थितियां अलग-अलग हैं।

केदारखंड में कंकर में शंकर व्याप्त हैं

(डॉ बृजेश सती)

हरिद्वार से हिमालय की ओर बढ़ते के साथ यहां का भूगोल बदलता है। इस भूभाग को धार्मिक ग्रंथों में केदारखंड कहा गया है। यह भगवान शिव की तपोभूमि और वासस्थल है। इसलिए कहते हैं कि यहां कंकर में शंकर व्याप्त हैं। हिमालय की गिरी कंदराओ, दुर्गम पर्वतीय अंचलों और खुले आसमान के नीचे प्राचीन शिवालय हैं। अलग-अलग कालखंडों में स्थापित इन मंदिरों ने सदियों से धार्मिक आस्था के साथ-साथ स्थानीय संस्कृति को भी जीवंत रखा है।

बदरीनाथ धाम स्थित आदि केदारेश्वर महादेव सतयुग से जुड़ा है। बदरी क्षेत्र में भगवान विष्णु की उपासना के साथ शिव आराधना का स्थान है। ज्योतिर्मठ स्थित ज्योतिश्वर महादेव की परंपरा आदि गुरु शंकराचार्य से जुड़ी है।

चमोली जनपद का गोपीनाथ मंदिर भी केदारखंड की प्राचीन धार्मिक विरासत का महत्वपूर्ण केंद्र है।

रुद्रप्रयाग में अलकनंदा के तट पर स्थित कोटेश्वर महादेव गुफा प्रकृति और परंपरा का अद्भुत संगम है। गुफा के भीतर स्थित शिवलिंगों का प्राकृतिक जलधाराएं जलाभिषेक करती हैं।

टिहरी जनपद का बूढ़ा केदार मंदिर अपनी प्राचीन मान्यताओं के कारण विशेष महत्व रखता है। पांडवों से जुड़ी लोककथाओं और हिमालयी जनमानस में रची-बसी धार्मिक आस्थाओं ने इस मंदिर को विशिष्ट पहचान दी है।

उत्तरकाशी जनपद में लंकेश्वर महादेव स्वामी प्रकृति के बीच खुले आसमान के नीचे लोक कल्याण के लिए विराजमान हैं।

यहां पत्थरों में इतिहास अंकित है। नदियों के रूप में आस्था बहती है। पर्वतों में तपस्या है और मंदिरों में कृतिकार से साक्षात्कार होता है।

संसद का सियासी संग्राम: असहमति के शोर में गुम होती संसदीय मर्यादा

ओ.पी. पाल

भारतीय लोकतंत्र का सबसे पवित्र मंदिर संसद जनता की समस्याओं, राष्ट्रीय नीतियों और भावी कानूनों पर तर्कसंगत बहस का केंद्र माना जाता है। मसलन संसद केवल कानून बनाने की मशीन नहीं है, बल्कि यह देश की सामूहिक चेतना और आकांक्षाओं का दर्पण है। लेकिन संसद के वर्तमान मानसून सत्र में जो दृश्य सामने आ रहा है, वह विधायी प्रक्रिया और लोकतांत्रिक मूल्यों को लेकर गंभीर सवाल खड़े करता है। सत्र के पहले ही दिन से विपक्षी दलों द्वारा विभिन्न राष्ट्रीय व राजनीतिक मुद्दों को लेकर दोनों सदनों में जोरदार हंगामा किया जा रहा है। सदन के भीतर नारेबाजी और वेल (सदन के बीचों-बीच) में आकर तख्तियां दिखाने से लेकर संसद परिसर में महात्मा गांधी की प्रतिमा से लेकर नए भवन के मकर द्वार पर प्रदर्शन करना विपक्ष की रोजाना की दिनचर्या देखी जा रही है। यह भारतीय लोकतंत्र और जनता के प्रति जनप्रतिनिधियों की जवाबदेही की दृष्टि से शुभ संकेत नहीं हैं।

संसद के मानसून सत्र में बीते दो हफ्ते की तरह तीसरे सप्ताह की कार्यवाही के दौरान भी जिस तरह हंगामे के बीच बिना बहस के विधेयक पारित हो रहे है, वह भारतीय लोकतंत्र में विधायी कार्य और जवाबदेही का गहराता संकट पैदा करता नजर आ रहा है। यह सत्र अपने अंतिम पड़ाव पर है, तो सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों के पास अपनी जिम्मेदारी निभाने का आखिरी अवसर हैं। लोकतंत्र में असहमति स्वाभाविक और आवश्यक है, लेकिन असहमति को प्रकट करने का जरिया संसदीय संवाद होना चाहिए, संसदीय गतिरोध नहीं।

जनता के विश्वास को बनाए रखने के लिए यह अनिवार्य है कि दोनों पक्ष अपनी राजनीतिक रणनीतियों से ऊपर उठकर देश के विधायी और लोकतांत्रिक हितों को प्राथमिकता दें। शुरूआती दो हफ्तों में हंगामे और लगातार होते स्थगन के कारण दोनों सदनों में कोई ठोस कामकाज नहीं हो सका।

यद्यपि सरकार लगातार यह दावा कर रही है कि वह विपक्ष द्वारा उठाए गए सभी मुद्दों पर नियम-नियमावली के तहत चर्चा कराने को तैयार है, वहीं विपक्ष का कहना है कि उनकी प्राथमिक मांगों पर तुरंत और बिना शर्त बहस कराई जाए। इस गतिरोध के बीच सबसे बड़ा नुकसान देश के उस विधायी ढांचे का हो रहा है, जिसकी जिम्मेदारी जनप्रतिनिधियों को सौंपी गई है।

विधायी कामकाज पर सत्ता पक्ष की जवाबी रणनीति

संसद में विपक्ष की ओर से जारी व्यवधान के बीच केंद्र सरकार ने भी विधायी कामकाज निपटाने के लिए एक आक्रामक और व्यावहारिक रणनीति अपनाई है। सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि वह हंगामे के कारण विधायी एजेंडे को रुकने नहीं देगी। नतीजतन, शोर-शराबे और तख्तियों की आड़ में ही कई अत्यंत महत्वपूर्ण विधेयक बिना किसी विस्तृत चर्चा के दोनों सदनों से पारित कराए जा चुके हैं। पीठासीन अधिकारियों (लोक सभा अध्यक्ष और राज्य सभा के सभापति) द्वारा बार-बार सदस्यों से अपनी सीटों पर लौटने और बिलों पर चर्चा में भाग लेने की अपील की गई। इसके बावजूद, जब विपक्षी दल चर्चा में शामिल होने के बजाय वाकआउट (सदन का बहिष्कार) करने या नारेबाजी जारी रखने का विकल्प चुनते हैं, तो सरकार ध्वनिमत के जरिए विधेयकों को पारित करवा लेती है। कई विधेयकों पर सदन के दोनों सदनों की मुहर लग चुकी है, जो राष्ट्रपति की मुहर के बाद देश में कानून बनने की दहलीज पर जा चुके हैं।

संसदीय कार्यप्रणाली के दृष्टिकोण से यह स्थिति चिंताजनक है। जब कोई विधेयक बिना बहस के कानून का रूप लेता है, तो उसमें रह जाने वाली व्यावहारिक कमियों या खामियों पर विचार करने का अवसर समाप्त हो जाता है।

प्रश्नकाल और शून्यकाल: जनहित के मुद्दों की अनदेखी

संसदीय लोकतंत्र में प्रश्नकाल और शून्यकाल ऐसे दो महत्वपूर्ण स्तंभ हैं जिनके माध्यम से संसद सदस्य (चाहे वे सत्ता पक्ष के हों या विपक्ष के) सीधे सरकार और उसके मंत्रियों की जवाबदेही तय करते हैं। प्रश्नकाल के दौरान सांसद अपने क्षेत्रों की समस्याओं, स्वास्थ्य, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, रक्षा और बुनियादी ढांचे से जुड़े तारांकित और अतारांकित प्रश्न पूछते हैं। चालू मानसून सत्र में लगातार व्यवधान के कारण अधिकांश दिनों में प्रश्नकाल शुरू होते ही स्थगित करना पड़ा या शोर-शराबे में डूब गया। इससे मंत्रियों से सीधे तीखे सवाल पूछने का जनता का अधिकार अप्रत्यक्ष रूप से छीन गया।

वहीं शून्यकाल वह समय होता है जब सांसद बिना किसी पूर्व सूचना के लोक महत्व के अविलंबनीय मुद्दों को उठाते हैं। सदन के लगातार बाधित रहने से न तो देश के ज्वलंत मुद्दों पर बात हो पा रही है और न ही दूर-दराज के क्षेत्रों के आम नागरिकों की आवाज दिल्ली तक पहुंच पा रही है।

रणनीतियों के द्वंद्व में फंसी लोकतंत्रिक प्रक्रियाएं

इस मानसून सत्र में सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों ही अपनी-अपनी राजनीतिक प्राथमिकताओं को साधने में लगे हैं, लेकिन इसका खामियाजा लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को भुगतना पड़ रहा है। शायद विपक्ष की रणनीति मुख्य रूप से सरकार को राजनीतिक रूप से बैकफुट पर धकेलने की है। विपक्ष का तर्क है कि जब तक उनकी प्राथमिक मांगों ज्वलंत सामाजिक, आर्थिक या जांच से जुड़े मुद्दों पर पहले चर्चा नहीं होती, तब तक सामान्य कामकाज नहीं चलने दिया जाएगा। हालांकि, इस रणनीति के कारण विपक्ष उस मंच को खुद ही खो देता है जहाँ वह सरकार की नीतियों की धज्जियां उड़ा सकता था। सदन से वाकआउट करने का सीधा अर्थ है, सरकार को बिना किसी विरोध के बिल पास कराने का वॉकओवर दे देना। वहीं दूसरी ओर, सरकार की रणनीति यह दिखाने की है कि वह देश के विकास और विधायी कार्यों के प्रति प्रतिबद्ध है। सरकार का तर्क है कि वह हर मुद्दे पर चर्चा के लिए तैयार है, लेकिन विपक्ष चर्चा से दूर भाग रहा है। विपक्ष के बहिष्कार का लाभ उठाते हुए सरकार अपने प्रमुख और दूरगामी असर वाले कानूनों को तेजी से पारित करवा रही है। हालांकि, बिना बहस के बिल पास कराने से भले ही सरकार का लक्ष्य पूरा हो जाए, लेकिन उन कानूनों की नैतिक स्वीकार्यता पर सवाल खड़े होते हैं।

जनता के प्रति जवाबदेही और विपक्ष का दायित्व

संसदीय व्यवस्था में विपक्ष की भूमिका केवल विरोध करने की नहीं, बल्कि एक सकारात्मक आलोचक की होती है। जनता अपने प्रतिनिधियों को संसद में इसलिए चुनकर भेजती है ताकि वे उनकी समस्याओं को उठाएं और बनने वाले कानूनों पर गहराई से मंथन करें।

जब विपक्षी सांसद चर्चा का बहिष्कार करते हैं, तो वे विधेयकों में जनहित से जुड़े संशोधन पेश करने के अपने अधिकार का प्रयोग नहीं कर पाते। संसद को चलाने में देश के करदाताओं का करोड़ों रुपया प्रति घंटे खर्च होता है। सत्र का हंगामे में धुल जाना वित्तीय और समय दोनों की भारी बबार्दी है। तख्तियां लहराना, कागज फाड़कर फेंकना और पीठासीन अधिकारी के सामने नारेबाजी करना संसदीय गरिमा को ठेस पहुंचाता है। ऐसे में विपक्ष को यह समझना होगा कि सरकार को घेरने का सबसे सशक्त माध्यम सदन का स्थगन नहीं, बल्कि सदन के भीतर अकाट्य तर्कों के साथ बहस करना है।

क्या हो सकती है आगे की राह?

अब जब मानसून सत्र के केवल तीन दिन शेष बचे हैं, तब यह सवाल सबसे बड़ा है कि क्या बाकी बचे समय का उपयोग देशहित में किया जा सकता है? सत्र के अंत की ओर बढ़ते हुए आगे की राह को असान बनाने के लिए सत्तापक्ष और विपक्ष के सामने मौका है। दोनों पक्षों को अपने अड़ियल रुख से पीछे हटना होगा।

सरकार को चाहिए कि वह विपक्ष की मुख्य मांगों पर किसी बीच के रास्ते या विशेष नियम के तहत चर्चा कराने का औपचारिक आश्वासन दे। वहीं विपक्ष को यह स्वीकार करना होगा कि सदन को ठप रखने से किसी समस्या का समाधान नहीं निकलता। सत्र के अंतिम दिनों में जो भी महत्वपूर्ण विधेयक पटल पर रखे जाने हैं, उन पर कम से कम संक्षिप्त बहस अवश्य कराई जाए।

विपक्ष को वाकआउट करने के बजाय सदन में रहकर अपने संशोधन दर्ज कराने चाहिए और सरकार को भी विपक्ष के जायज सुझावों को शामिल करने का बड़प्पन दिखाना चाहिए।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता से विवेक और नैतिकता डाउनलोड नहीं किए जा सकते

स्नेहा सिंह

साल 1884 के अक्टूबर महीने की एक शाम पुणे में शिक्षा को नई दिशा देने की इच्छा रखने वाले कुछ युवा शिक्षाविद एकत्र हुए थे। बाहर से देखने पर यह एक सामान्य बैठक लगती थी, लेकिन उस बंद कमरे में चल रही चर्चा भारत के भविष्य को स्पर्श कर रही थी। प्रश्न अंग्रेजी भाषा या पश्चिमी ज्ञान का विरोध करने का नहीं था। प्रश्न यह था कि क्या ऐसी शिक्षा-व्यवस्था, जो भारत की आवश्यकताओं के बजाय अंग्रेजी औपनिवेशिक शासन की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर गढ़ी गई हो, वह भारत का भविष्य गढ़ सकती है? इस प्रश्न का उत्तर खोजने की दिशा में शुरू हुए प्रयासों ने आगे चलकर 'डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी' को जन्म दिया। इतिहास इसे एक शैक्षणिक संस्था की शुरूआत के रूप में देखता है, लेकिन वास्तव में यह हमारे राष्ट्रीय अर्थात भारतीय शिक्षा के बारे में शुरू हुए एक अविरत संवाद का प्रारंभ था।

इस संवाद के केंद्र में थे लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक। हम सामान्यतः उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन के प्रखर नेता के रूप में याद करते हैं, लेकिन वे उतने ही गहरे शिक्षाचिंतक भी थे। उनके लिए शिक्षा का अर्थ केवल कक्षाएं चलाना या पाठ्यक्रम तैयार करना नहीं था। वह मानते थे कि जो शिक्षा व्यक्ति को उसकी भाषा, उसके इतिहास, उसके समाज और उसकी सांस्कृतिक चेतना से नहीं जोड़ती, वह शिक्षा ज्ञान तो दे सकती है, लेकिन राष्ट्र को आत्मविश्वास नहीं दे सकती। इसीलिए उनके लिए राष्ट्रीय शिक्षा का प्रश्न राजनीतिक स्वराज जितना ही महत्वपूर्ण था।

तिलक का विरोध पश्चिम के ज्ञान से नहीं था। उन्होंने आधुनिक विज्ञान, तर्क और बौद्धिक अनुसंधान के मूल्य को स्वीकार किया था। उनका मूलभूत आग्रह केवल इतना था कि ज्ञान भले ही वैश्विक हो सके, लेकिन शिक्षा की जड़ें अपनी संस्कृति में होनी चाहिए। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा तब ही अर्थपूर्ण बनती है, जब वह विश्व को देखने की दृष्टि दे और साथ ही अपने अस्तित्व को समझने की क्षमता भी विकसित करे। यह विचार आज भी उतना ही प्रासंगिक लगता है।

डेढ़ सदी बाद विश्व फिर से एक नए युग के द्वार पर खड़ा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (अक), डिजिटल तकनीक और तेजी से बदलती ज्ञान व्यवस्था शिक्षा के स्वरूप को नए सिरे से परिभाषित कर रही हैं। केवल जानकारी प्राप्त कर लेना ही पर्याप्त नहीं है, सही जानकारी को पहचानना, उसका विश्लेषण करना और उसे मानवीय मूल्यों से जोड़ना आज सबसे बड़ी आवश्यकता बन गया है। ऐसे समय में शिक्षा का मूल प्रश्न फिर से हमारे सामने खड़ा होता है: क्या शिक्षा का उद्देश्य केवल कुशल मानव संसाधन तैयार करना है या विचारशील, जिम्मेदार और मूल्यनिष्ठ नागरिक गढ़ना है?

यह प्रश्न लोकमान्य तिलक के शिक्षाचिंतन को आज के समय से जीवंत रूप से जोड़ता है। शायद इसीलिए आज 1 अगस्त को, उनकी पुण्यतिथि पर उनका स्मरण करना केवल उनके जीवनकार्य को याद करने के लिए नहीं है, बल्कि उनके द्वारा शुरू किए गए शिक्षा के अविरत संवाद को हमारे समय के संदर्भ में आगे बढ़ाने के लिए है।

वास्तव में क्या राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस संवाद का स्वाभाविक विकास है, या फिर यह उसके नए अध्याय की केवल शुरूआत है?

इन प्रश्नों का उत्तर शायद सीधे हां या ना में नहीं दिया जा सकता। यहां लोकमान्य तिलक और राष्ट्रीय शिक्षा

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में जब जानकारी पलक झपकते उपलब्ध है, तब असली चुनौती ज्ञान जुटाना नहीं, बल्कि सही-गलत की पहचान और विवेकपूर्ण निर्णय लेने वाले नागरिक तैयार करना है।

नीति 2020 के बीच ऐतिहासिक जुड़ाव खोजने का प्रयास नहीं है। दोनों अलग-अलग युगों की उपज हैं, जो अलग चुनौतियों से जन्मे हैं। लेकिन उनके बीच का वैचारिक जुड़ाव निसंदेह महसूस होता है। तिलक ने 19वीं सदी के भारत के लिए जो मूलभूत प्रश्न खड़े किए थे, शिक्षा का उद्देश्य क्या है, यह किसके लिए है और यह कैसा समाज गढ़ेगी इत्यादि। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उन्हीं प्रश्नों को 21वीं सदी के भारत के संदर्भ में फिर से समझने और उनका उत्तर खोजने का प्रयास करती है।

तिलक की विशेषता यह थी कि उन्होंने शिक्षा को कक्षा की चार दीवारों में कैद नहीं रहने दिया। डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी द्वारा उन्होंने शिक्षा को संस्थागत आधार दिया, तो सार्वजनिक गणेशोत्सव द्वारा उन्होंने सामाजिक अभिव्यक्ति का माध्यम भी बनाया। गणेशोत्सव उनके लिए केवल धार्मिक उत्सव नहीं था; वह भारतीय समाज को एकजुट करने, सार्वजनिक संवाद जगाने और राष्ट्रीय चेतना को प्रेरणा देने का अवसर था। शायद इसीलिए उनके शिक्षाचिंतन में पूरा समाज एक जीवंत पाठशाला बन जाता है।

इसी दृष्टि से देखा जाए तो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का महत्व केवल इसके सुधारों में नहीं, बल्कि इसकी दिशा में है। भारतीय ज्ञान परंपरा, मातृभाषा, सर्वांगीण विकास, बहुविषयक शिक्षा, अनुसंधान, कौशल, तकनीक और मूल्यनिष्ठ जीवनदृष्टि पर दिया गया बल यह संकेत देता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार क्षमता बढ़ाना ही नहीं, विचारशील, सृजनात्मक और जिम्मेदार नागरिक गढ़ना भी है। इस अर्थ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और तिलक के विचारों के बीच का संबंध शब्दों का नहीं, बल्कि दर्शन का है।

बेशक, नीतियां स्वयं परिवर्तन नहीं लातीं। वे केवल दिशा का संकेत देती हैं। सच्चा परिवर्तन तब जन्म लेता है, जब शिक्षक नीति की आत्मा को कक्षा में पोषित करके जीवन देते हैं, विद्यार्थी उसे अनुभव में बदलते हैं और समाज उसे अपने वर्तमान में उतारता है। शिक्षा का इतिहास साक्षी है कि महान दस्तावेजों से ज्यादा महान शिक्षक समाज पर अधिक लंबा प्रभाव छोड़ते हैं। यह चर्चा आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में और अधिक अर्थपूर्ण बन जाती है। जानकारी अब आसानी से उपलब्ध है, लेकिन कृत्रिम बुद्धिमत्ता में विवेक और नैतिकता जैसे सनातन मूल्यों को डाउनलोड नहीं किया जा सकता। कृत्रिम बुद्धिमत्ता असंख्य उत्तर दे सकती है, लेकिन सही प्रश्न पूछने की क्षमता, सत्य को पहचानने की दृष्टि और ज्ञान का जिम्मेदार उपयोग करने की समझ आज भी शिक्षा को ही विकसित करनी है। भविष्य की शिक्षा शायद इसीलिए जानकारी के संग्रह से ज्यादा विवेक के विकास पर आधारित होने वाली है।

तिलक की विशेषता यह थी कि उन्होंने शिक्षा को कक्षा की चार दीवारों में कैद नहीं रहने दिया।

उपनिषद प्रश्नों से शुरूआत करते हैं, भगवद्गीता संवाद द्वारा समाधान तक पहुंचती है और भारत की प्राचीन विश्वविद्यालयों की परंपरा ज्ञान को मुक्त विचार-विमर्श से जोड़ती है। यह परंपरा हमें सिखाती है कि शिक्षा का हेतु केवल बुद्धि को प्रखर बनाना नहीं है, मनुष्य को परिपक्व बनाना भी है। इसीलिए भारतीय ज्ञान-परंपरा का समावेश मात्र भूतकाल का गौरवगान करने के लिए नहीं, बल्कि भविष्य को अधिक मानवीय बनाने का प्रयास है।

आज भारत मजबूत नेतृत्व के हाथों में विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इस यात्रा में तकनीक, नवीनता और वैश्विक स्पर्धा अनिवार्य है, लेकिन उतना ही जरूरी है कि विकास का केंद्र मनुष्य ही रहे। शिक्षा जो ज्ञान के साथ विवेक, कौशल के साथ चरित्र और प्रगति के साथ सामाजिक जिम्मेदारी का संवर्धन करे, तो ही विकास राष्ट्र के जीवन में स्थायी संस्कृति बन सकता है।

शायद इसीलिए लोकमान्य तिलक आज भी हमारे समकालीन लगते हैं। उन्होंने ऐसे उत्तर तैयार करने की अपेक्षा, ऐसे प्रश्न दिए हैं, जो हर युग को फिर से पूछे जाने हैं। शिक्षा का संवाद कभी पूर्ण नहीं होता। हर पीढ़ी अपने समय की चुनौतियों, अपने अनुभवों और अपनी संभावनाओं से समाज को समृद्ध बनाती है। राष्ट्र केवल नियमों के संविधान से नहीं, शिक्षा से गढ़े जाते हैं और शिक्षा तब ही जीवंत रहती है, जब समाज उसके बारे में सोचने का, चर्चा करने का और प्रश्न पूछने का कभी अंत नहीं करता। लोकमान्य तिलक की सबसे बड़ी विरासत यह अविरत विचार संवाद ही है।

राजस्थान में मूक-बधिर विद्यार्थियों का शांत आंदोलन

अनिकेत सिंह

पिछले कुछ दिनों में देश के लोगों ने विद्यार्थियों के विरोध के दो चेहरे देखे हैं। दिल्ली के जंतर-मंतर पर नीट परीक्षा के पेपर लीक के मुद्दे पर शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग को लेकर हुए आंदोलन में सरकार के विरोध में, विशेषकर प्रधानमंत्री मोदी के खिलाफ, अपशब्दों की भरमार देखने को मिली।

जेन-जी के नाम से पहचानी जाने वाली युवा पीढ़ी के प्रदर्शनकारियों और कॉकरोच जनता पार्टी के सदस्यों पर पुलिस ने लाठीचार्ज किया। शिक्षा क्षेत्र से जुड़ा दूसरा विरोध झारखंड में देखने को मिला। शांत और स्वस्फूर्त विरोध में सरकार या प्रधानमंत्री विरोधी कोई नारेबाजी देखने को नहीं मिली।

दिल्ली और झारखंड के दोनों आंदोलन परीक्षा प्रणाली और पेपर लीक की समस्या से जुड़े होने के बावजूद कॉकरोच पार्टी झारखंड नहीं पहुंची। झारखंड के विद्यार्थियों के साथ राज्य सरकार ने बातचीत शुरू कर दी है।

लेकिन यहां एक ऐसे आंदोलन की बात है, जिसमें न कोई नारेबाजी थी, न कोई मोदी विरोधी बैनर, न कोई राजनीतिक दल और न ही मुख्यधारा का समाचार माध्यम। राजस्थान के जयपुर के बहरे-मूंगे विद्यार्थियों ने ऐसा शांत आंदोलन करके दिखाया कि राजस्थान सरकार को झुकना पड़ा। उन्होंने विरोध के माध्यम से जो इशारे किए, उन्हें पूरा देश समझ सका।

इन विद्यार्थियों ने ऐसा कर दिखाया कि जिसने भी उनका विरोध देखा, वह उनकी मदद के लिए पहुंच गया। नारे लगाने, चिल्लाने और सरकार के खिलाफ बोलने की अपेक्षा मौन विरोध में भी बड़ी ताकत होती है, राजस्थान के बहरे-मूंगे विद्यार्थियों ने यह साबित कर दिया। राजस्थान की भाजपा सरकार को हिला देने वाला यह विरोध जागरूक नागरिकों का ध्यान आकर्षित कर रहा है। सरकारी स्कूलों में क्रॉस-चेकिंग कभी नहीं होती। कुछ सरकारी स्कूलों में छत नहीं होने, मध्याह्न भोजन में पानी वाली सब्जी दिए जाने, गंदे शौचालय होने और शिक्षकों के अनियमित आने जैसी शिकायतें आम हो गई हैं। यहां जिन बहरे-मूंगे विद्यार्थियों की संवेदना और समस्या सामने आई है, वह स्कूल राजस्थान सरकार के अधीन है। जयपुर स्थित सेठ आनंदीलाल पोद्दार हायर सेकेंडरी स्कूल फॉर द डेफ एंड म्यूट, जिसे बहरे-मूंगों के स्कूल के रूप में जाना जाता है, के विद्यार्थियों का आंदोलन स्कूल की बदहाल स्थिति को लेकर था। उनका आंदोलन स्कूल के टूटे हुए शौचालयों, चारों ओर फैली गंदगी, पीने के पानी की समस्या, कबाड़ की हालत में पड़ी स्कूल बस, जर्जर भवन और अनियमित रूप से आने वाले शिक्षकों के खिलाफ था।

बहरे-गूंगे विद्यार्थी हाथों के इशारों और सांकेतिक भाषा के माध्यम से संवाद करते हैं, यह बात आम लोगों को शायद ही पता होती है। लेकिन उन्होंने सड़क पर बैठकर ऐसा आंदोलन किया कि उनके इशारे अधिकारियों ने भी जल्द ही समझ लिए और रातोंरात कार्रवाई शुरू कर दी गई।

उनके आंदोलन में कोई नारेबाजी नहीं थी, क्योंकि वे बोल नहीं सकते थे। उन्हें कोई गुमराह नहीं कर सकता था और न ही कोई उनसे सरकार विरोधी नारे लगवा सकता था, क्योंकि वे सुन नहीं सकते थे। उनके नेता भाषण दे रहे थे, लेकिन उनके संकेत केवल सामने बैठे विद्यार्थी ही समझ पा रहे थे। विद्यार्थी बड़ी संख्या में सड़क पर बैठ गए। बहरे-मूंगे विद्यार्थियों का आंदोलन देखकर अधिकारी भी दौड़े चले आए। अपने अधिकारों के लिए लड़ रहे विद्यार्थियों के समर्थन में शिक्षा क्षेत्र से जुड़े लोगों ने भी संवेदना व्यक्त की।

आंदोलन कर रहे विद्यार्थियों का कहना था कि हम बोल नहीं सकते, सुन नहीं सकते, इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें अपनी पढ़ाई की रोजमर्रा की जरूरतों से दूर रखा जाए।

जिस तरह विद्यार्थी अनुशासन के साथ बैठकर हाथ ऊपर उठाकर नारे लगाने के संकेत कर रहे थे, उसे देखकर वहां से गुजरने वाले लोग भी दो मिनट के लिए रुककर इस शांत विरोध को देखने लगे।

ऐसा संवेदनापूर्ण विरोध देखकर विपक्ष के साथ-साथ सत्तारूढ़ दल के लोग और शिक्षा अधिकारी भी मौके पर पहुंच गए। शिक्षा विभाग ने तत्काल कार्रवाई करते हुए स्कूल का निरीक्षण किया तो अधिकारी भी चौंक गए। स्कूल की प्रिंसिपल का तबादला कर दिया गया और दो अन्य शिक्षकों को भी हटा दिया गया। 12वीं कक्षा तक संचालित इस स्कूल में 17 कक्षाएं हैं और 592 विद्यार्थी पढ़ते हैं।

यहां 76 शिक्षकों की नियुक्ति की गई है, लेकिन मुश्किल से 25 शिक्षक ही आते हैं और वे भी नियमित नहीं हैं। सरकार ने तत्काल एक समिति का गठन किया है और स्कूल की समस्याओं का समाधान करने की तैयारी शुरू कर दी है। राजस्थान के इन मूक-बधिर विद्यार्थियों ने बिना नारे लगाए, बिना शोर मचाए और बिना किसी राजनीतिक दल का सहारा लिए यह दिखा दिया कि अपने अधिकारों की बात कहने के लिए हमेशा आवाज की जरूरत नहीं होती। कभी-कभी मौन भी सत्ता के दरवाजे तक अपनी बात पहुंचा देता है।

भोलेनाथ को क्यों नहीं चढ़ती है मेहंदी, हल्दी और तुलसी सहित 10 चीजें

श्रावण मास में शिवलिंग की पूजा का खासा महत्व और पुण्य रहता है। हालांकि शिवलिंग पर कोई भी चीज अर्पित करने या चढ़ाने से पहले जान लें कि क्या नहीं चढ़ाना चाहिए अन्यथा शिवजी नाराज हो सकते हैं।

कुमकुम या रोली

कुमकुम और रोली भी शिवलिंग पर नहीं लगायी जाती है। यह विष्णुप्रिया लक्ष्मी और सुहाग का प्रतीक है। इसलिए इसे भी अर्पित नहीं किया जाता है।

शंख या शंख से जल

भगवान विष्णु को प्रिय है शंख। शिवजी ने शंखचूर नामक असुर का वध किया था इसलिए शंख भगवान शिव की पूजा में वर्जित माना गया है। शंख को उसी असुर का प्रतीक माना जाता है, जो भगवान विष्णु का भक्त था।

सिंदूर

शिव पुराण में महादेव को विनाशक बताया गया हैं। कारण यह है कि भगवान शिव वैरागी हैं और वैरागी लोग अपने माथे पर राख डालते है, सिंदूर नहीं। सिंदूर सुगाह का प्रतीक है।

फूल

केतकी, मदंती, केवड़ा, जूही, कुंद, शिरीष, कंद, अनार के फूल, कदंब के फूल, सेमल के फूल, सारहीन/कटूमर के फूल, कपास के फूल, पत्रकंटक के फूल, गंभारी के फूल, बहेड़ा के फूल, तितिणी के फूल, गाजर के फूल, कैथ के फूल, कोष्ठ के फूल, कनेर, कमल और धव के फूल। लाल रंग के फूल भी नहीं चढ़ाते हैं।

हल्दी

हल्दी को माता लक्ष्मी का स्वरूप माना जाता है। हल्दी उपयोग मुख्य रूप से सौंदर्य प्रसाधन में भी किया जाता है। इसीलिए हल्दी को शिवलिंग पर नहीं चढ़ता हैं। लेकिन साल में सिर्फ एक बार महाशिवरात्रि के दूसरे दिन शिव जी को हल्दी चढ़ाई जाती है जब उनका विवाह हुआ था।

मेहंदी

मेहंदी का उपयोग भी सौंदर्य प्रसाधन में किया जाता है और यह भी सुहाग का प्रतीक भी है। इसलिए शिवजी को यह अर्पित नहीं करते हैं।

तुलसी

तुलसी पहले वृंदा के रूप में जालंधर की पत्नी थी, जिसका शिवजी ने वध किया था। वृंदा इससे दुन्खी होकर बाद में तुलसी का पौधा बन गई थी। इसलिए भगवान शिव को उन्होंने अपने आलौकिक और देवीय गुणों वाले तत्वों से वंचित कर दिया। दूसरा भगवान विष्णु ने तुलसी को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया है इसलिए भी शिवलिंग पर तुलसी नहीं चढ़ानी चाहिए।

तिल

कई लोग जल या दूध अर्पित करते वक्त उसमें काले तिल मिलाकर अर्पित करते हैं। तिल को भगवान विष्णु के मैल से उत्पन्न हुआ माना जाता और इसे शनिदेव एवं पितरों को ही अर्पित किया जाता है। इसलिए इसे भगवान शिव को नहीं अर्पित किया जाना चाहिए।

चावल

कुछ मौकों को छोड़कर शिवजी को चावल भी अर्पित नहीं करते हैं। खासकर टूटे चावल तो भूलकर भी अर्पित नहीं करते हैं।

नारियल

शिवजी को नारियल या नारियल का पानी भी अर्पित नहीं किया जाता, क्योंकि हरियल को श्रीफल कहते हैं। श्रीफल यानी की लक्ष्मी माता का स्वरूप। माता लक्ष्मी को शिवजी को कैसे अर्पित कर सकते हैं? शिव पर अर्पित होने के बाद नारियल या नारियल पानी ग्रहण योग्य नहीं रह जाता है और शिवजी नाराज हो जाते हैं।

भोलेनाथ शिव के शुभ प्रतीक

भगवान शिव के शुभ चिन्ह या प्रतीक बहुत ही महत्व रखते हैं। उनके प्रत्येक शुभ प्रतीकों के पीछे कुछ न कुछ रहस्य छुपा हुआ है। आंकड़े के फूल, बिल्वपत्र, जल, दूध और चंदन के अलावा भी कई चीजें उन्हें प्रिय है। आओ जानते हैं ऐसी ही बातें जिनसे पहचानें जाते हैं भगवान भोलेनाथ।

शिवलिंग

भगवान शिव के निर्गुण और निराकार रूप का प्रतीक है शिवलिंग। यह ब्रह्म, आत्मा और ब्रह्मांड का प्रतीक भी है। वायु पुराण के अनुसार प्रलयकाल में समस्त सृष्टि जिसमें लीन हो जाती है और पुनः सृष्टिकाल में जिससे सृष्टि प्रकट होती है उसे शिवलिंग कहते हैं।

त्रिशूल

भगवान शिव के पास हमेशा एक त्रिशूल ही होता था। त्रिशूल 3 प्रकार के कष्टों दैनिक, दैविक, भौतिक के विनाश का सूचक भी है। इसमें 3 तरह की शक्तियां हैं- सत, रज और तम। त्रिशूल के 3 शूल सृष्टि के क्रमशः उदय, संरक्षण और लयीभूत होने का प्रतिनिधित्व करते भी हैं। शैव मतानुसार शिव इन तीनों भूमिकाओं के अधिपति हैं। यह शैव सिद्धांत के पशुपति, पशु एवं पाश का प्रतिनिधित्व करता है। माना जाता है कि यह महाकालेश्वर के 3 कालों (वर्तमान, भूत, भविष्य) का प्रतीक भी है। इसके अलावा यह स्वपिंड, ब्रह्मांड और शक्ति का परम पद से एकत्व स्थापित होने का प्रतीक है। यह वाम भाग में स्थिर इड़ा, दक्षिण भाग में स्थित पिंगला तथा मध्य देश में स्थित सुषुम्ना नाड़ियों का भी प्रतीक है।

रुद्राक्ष

माना जाता है कि रुद्राक्ष की उत्पत्ति शिव के आंसुओं से हुई थी। धार्मिक ग्रंथानुसार 21 मुख तक के रुद्राक्ष होने के प्रमाण हैं, परंतु वर्तमान में 14 मुखी के पश्चात सभी रुद्राक्ष अप्राप्य हैं। इसे धारण करने से सकारात्मक ऊर्जा मिलती है रक्त प्रवाह भी संतुलित रहता है।

त्रिपुंड तिलक

माथे पर भगवान शिव त्रिपुंड तिलक लगाते हैं। यह तीन लंबी धारियों वाला तिलक होता है। यह त्रिलोक्य और त्रिगुण का प्रतीक है। यह सतोगुण, रजोगुण और तपोगुण का प्रतीक भी है। त्रिपुंड दो प्रकार का होता है- पहला तीन धारियों के बीच लाल रंग का एक बिंदु होता है। यह बिंदु शक्ति का प्रतीक होता है। आम इंसान को इस तरह का त्रिपुंड नहीं लगाना चाहिए। दूसरा होता है सिर्फ तीनधारियों वाला तिलक या त्रिपुंड। इससे मन एकाग्र होता है।

भभूत या भस्म

शिव अपने शरीर पर भस्म धारण करते हैं। भस्म जगत की निस्सारता का बोध कराती है। भस्म आकर्षण, मोह आदि से मुक्ति का प्रतीक भी है। देश में एकमात्र जगह उज्जैन के महाकाल मंदिर में शिव की भस्म आरती होती है जिसमें श्मशान की भस्म का इस्तेमाल किया जाता है। यज्ञ की भस्म में वैसे कई आयुर्वेदिक गुण होते हैं। प्रलयकाल में समस्त जगत का विनाश हो जाता है, तब केवल भस्म (राख) ही शेष रहती है। यही दशा शरीर की भी होती है।

डमरू

सभी हिन्दू देवी और देवताओं के पास एक न एक वाद्य यंत्र रहता है। उसी तरह भगवान के पास डमरू था, जो नाद का प्रतीक है। भगवान शिव को संगीत का जनक भी माना जाता है। उनके पहले कोई भी नाचना, गाना और बजाना नहीं जानता था। नाद अर्थात ऐसी ध्वनि, जो ब्रह्मांड में निरंतर जारी है जिसे 'ऊँ' कहा जाता है। संगीत में अन्य स्वर तो आते-जाते रहते हैं, उनके बीच विद्यमान केंद्रीय स्वर नाद है। नाद से ही वाणी के चारों रूपों की उत्पत्ति मानी जाती है- 1.पर, 2.पश्यंती, 3. मध्यमा और 4.वैखरी।

शिव कुंडल

हिन्दुओं में एक कर्ण छेदन संस्कार है। शैव, शाक्त और नाथ संप्रदाय में दीक्षा के समय कान छिदवाकर उसमें मुद्रा या कुंडल धारण करने की प्रथा है। प्राचीन मूर्तियों में प्राय: शिव और गणपति के कान में सर्प कुंडल, उमा तथा अन्य देवियों के कान में शंख अथवा पत्र कुंडल और विष्णु के कान में मकर कुंडल देखने में आता है। दो कान के छल्ले, जिन्हें अलक्ष्य (जिसका अर्थ है जो किसी भी माध्यम के द्वारा दिखाया नहीं जा सकता) और निरंजन (जिसका अर्थ है जो नश्वर आंखों से नहीं देखा जा सकता है), भगवान द्वारा पहनें गए हैं। उल्लेखनीय है कि प्रभु के बाएं कान का कुंडल महिला स्वरूप द्वारा इस्तेमाल किया गया है और उनके दाएं कान का कुंडल पुरूष स्वरूप द्वारा इस्तेमाल किया गया है। दोनों कानों में विभूषित कुंडल शिव और शक्ति (पुरुष और महिला) के रूप में सृष्टि के सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करते हैं।

चन्द्रमा

शिव का एक नाम 'सोम' भी है। सोम का अर्थ चन्द्र होता है। शिव द्वारा चन्द्रमा को धारण करना मन के नियंत्रण का भी प्रतीक है। हिमालय पर्वत और समुद्र से चन्द्रमा का सीधा संबंध है। विश्व का पहला ज्योर्तिलंग सोमनाथ में चंद्रदेव ने ही स्थापित किया था। मूलत: शिव के सभी त्योहार और पर्व चान्द्रमास पर ही आधारित होते हैं। शिवरात्रि, महाशिवरात्रि आदि शिव से जुड़े त्योहारों में चन्द्र कलाओं का महत्व है। यह अर्द्धचन्द्र शैवपंथियों और चन्द्रवंशियों के पंथ का प्रतीक चिह्न है। मध्य एशिया में यह मध्य एशियाई जाति के लोगों के ध्वज पर बना होता था। चंगेज खान के झंडे पर अर्द्धचन्द्र होता था। इस अर्धचंद्र का ध्वज पर होने का अपना ही एक अलग इतिहास है।

जटाएं और गंगा

शिव अंतरिक्ष के देवता हैं। उनका नाम व्योमकेश है अत: आकाश उनकी जटास्वरूप है। जटाएं वायुमंडल की प्रतीक हैं। वायु आकाश में व्याप्त रहती है। सूर्य मंडल से ऊपर परमेष्ठि मंडल है। इसके अर्थ तत्व को गंगा की संज्ञा दी गई है अत: गंगा शिव की जटा में प्रवाहित है। शिव रुद्रस्वरूप उग्र और संहारक रूप धारक भी माने गए हैं। गंगा को जटा में धारण करने के कारण ही शिव को जल चढ़ाए जाने की प्रथा शुरू हुई। जब स्वर्ग से गंगा को धरती पर उतारने का उपक्रम हुआ तो यह भी सवाल उठा कि गंगा के इस अपार वेग से धरती में विशालकाय छिद्र हो सकता है, तब गंगा पाताल में समा जाएगी। ऐसे में इस समाधान के लिए भगवान शिव ने गंगा को सर्वप्रथम अपनी जटा में विराजमान किया और फिर उसे धरती पर उतारा। गंगोत्री तीर्थ इसी घटना का गवाह है।

कमंडल

कमंडल में जल होता है जो अमृत का प्रतीक है। कमंडल हर संत या योगी के पास होता है।

हस्ति चर्म और व्याघ्र चर्म

शिव अपनी देह पर हस्ति चर्म और व्याघ्र चर्म को धारण करते हैं। हस्ती अर्थात हाथी और व्याघ्र अर्थात शेर। हस्ती अभिमान का और व्याघ्र हिंसा का प्रतीक है अत: शिवजी ने अहंकार और हिंसा दोनों को दबा रखा है। बाघ शक्ति और सत्ता का प्रतीक है तथा शक्ति की देवी का वाहन है। भगवान शिव अक्सर इस पर बैठते हैं या इस खाल को पहनते है, जोकि यह दर्शाता है कि वह शक्ति के मालिक हैं और सभी शक्तियों से ऊपर हैं।

वासुकि और नंदी

वृषभ शिव का वाहन है। वे हमेशा शिव के साथ रहते हैं। वृषभ का अर्थ धर्म है। मनुस्मृति के अनुसार 'वृषो हि भगवान धर्म:'। वेद ने धर्म को 4 पैरों वाला प्राणी कहा है। उसके 4 पैर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हैं। महादेव इस 4 पैर वाले वृषभ की सवारी करते हैं यानी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष उनके अधीन हैं। एक मान्यता के अनुसार वृषभ को नंदी भी कहा जाता है, जो शिव के एक गण हैं। नंदी ने ही धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र और मोक्षशास्त्र की रचना की थी।
उसी प्रकार शिव को नागवंशियों से घनिष्ठ लगाव था। नाग कुल के सभी लोग शिव के क्षेत्र हिमालय में ही रहते थे। कश्मीर का अनंतनाग इन नागवंशियों का गढ़ था। नाग कुल के सभी लोग शैव धर्म का पालन करते थे। भगवान शिव के नागेश्वर ज्योतिर्लिंग नाम से स्पष्ट है कि नागों के ईश्वर होने के कारण शिव का नाग या सर्प से अटूट संबंध है। भारत में नागपंचमी पर नागों की पूजा की परंपरा है। विरोधी भावों में सामंजस्य स्थापित करने वाले शिव नाग या सर्प जैसे क्रूर एवं भयानक जीव को अपने गले का हार बना लेते हैं। लिपटा हुआ नाग या सर्प जकड़ी हुई कुंडलिनी शक्ति का प्रतीक है।

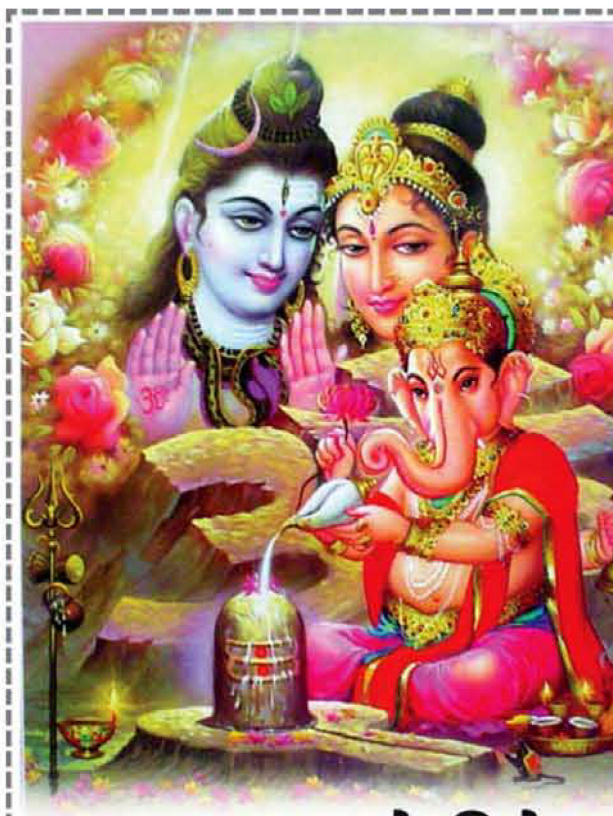

श्रावण मास में विशेष फलदायी हैं श्री गणेश के मंत्र

श्रावण भगवान भोलेनाथ का माह माना जाता है लेकिन पुराणों में वर्णित है कि इसी माह श्री गणेश, माता पार्वती और श्री कृष्ण की आराधना भी शुभ है। श्री गणेश के मंत्र श्रावण मास में विशेष फलदायी हैं। मंत्र -

गजाननं भूतगणदिसेवितं कपित्थ जम्बू फल चारुन भक्षणम।
उमासुतं शोक विनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम।।
वर्णानामार्थ संधानम रसानाम छन्दसामपि।
मंगलानाम महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरुमेदेव सर्व कार्येषु सर्वदा।
रक्ष-रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक।
भक्तानामभयं कर्त्ता त्राताभव भवार्णवात।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो! षाष्मातुराग्रज प्रभो।
वरद त्वं वर देहि वांछितं वांत्रिछतार्थद।।
अनेन सफलार्ध्येण फलदांस्तु सदामम।।
विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्विताय
नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय
गौरी सुताय नमस्तुभ्यं सततं मोदक प्रिय।
लम्बोदरं नमस्तुभ्यं सततं मोदक प्रिय।
निर्विघ्नं कुरुमेदेव, सर्व कार्येषु सर्वदा।

नारद उवाच

प्रणम्य शिरसा देवं गौरी पुत्रं विनायकम।
भक्तावासं सस्मरेन्नित्रुमायु: कामार्थ सिद्धये।।
प्रथमं वक्रतुण्डं च एक दन्तं द्वितीयकम।
तृतीयं कृष्णपिंगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम।।
लम्बोदरं पंचमं च षष्टं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टकम।।
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम।
एकादशं गणपति द्वादशं तु गजाननम।।
द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं य: पठेन्नर:।
न च विघ्नभयं तस्य सर्व सिद्धि करं परम।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम।।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान मोक्षार्थी लभते गतिम।।
जपेद् गणपति स्त्रोमं षड्भिर्मासै: फलं लभेत।
संवत्सरेण सिद्धिचं लभते नात्र संशय:।।
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यं च लिखित्वाम य: समर्पयेत।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादत:।।
ऊँ सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णक:।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्न नाशो गणाधिप:।।
धूम्रकेतु: गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन:।
द्वादशैतानि नामानि यपठेच्छशुनयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटेश्चैव विघ्न: तस्य न जायते।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशि वर्णं चतुर्भुजं।
प्रसन्नवदनं ध्याये सर्व विघ्नो प्रशान्तये।।
अभीष्टिसतार्थ सिध्यर्थ पूजितो य: सुरासुरै:।
सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नम:।।
सर्वमंगल मांग्ल्यै शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बिके गौरी नारायणी नमोस्तुते।।

श्रावण मास में शिव भक्ति से मिलेगी शनि कष्टों से मुक्ति

श्रावण मास में मंदिर जाकर शिव परिवार की धूप, दीप, नेवैद्य, फल और फूलों आदि से पूजा करके सारा दिन उपवास करें। शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ाकर उनका दूध से अभिषेक करें। शाम को मीठा भोजन करें। अगले दिन भगवान शिव के पूजन के पश्चात यथाशक्ति दान आदि देकर ही व्रत का पारण करें। अपने किए गए संकल्प के अनुसार व्रत करके उनका विधिवत उद्यापन किया जाना चाहिए। जो लोग सच्चे भाव एवं नियम से भगवान की पूजा, स्तुति करते हैं वह मनोवांछित फल प्राप्त करते हैं। इन व्रतों में सफेद वस्त्र धारण करके सफेद चंदन का तिलक लगाकर ही पूजन करना चाहिए तथा सफेद वस्तुओं के दान की ही सर्वाधिक महिमा है।

दान करने वाली वस्तुएं- बर्फी, सफेद चंदन, चावल, चांदी, मिश्री, गाय का घी, दूध, दही, खीर, सफेद पुष्पों का दान सायंकाल में करने से जहां मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं, वहीं घर में खुशहाली भी आती है।
क्या खाएं- खीर, पूरी, दूध, दही, चावल। इस व्रत में नमक नहीं खाना चाहिए।
किस मंत्र का करें जाप- 'ऊँ नम: शिवाय' एवं 'महामृत्युंजय' मंत्र के अतिरिक्त चंद्र बीज मंत्र 'ऊँ श्रां श्रीं श्रौं स: चन्द्रमसे नम:' और चंद्र मूलमंत्र 'ऊँ चं चन्द्रमसे नम:'।
व्रत से मिलने वाले लाभ- मानसिक सुख एवं शांति का शरीर में प्रवाह होगा। व्यापार में वृद्धि होगी, परिवार में खुशहाली आएगी। जिस कामना से व्रत किया जाएगा, वह अवश्य पूरी होगी। आप शनि के प्रकोप से पीड़ित हैं तो इस श्रावण माह में सच्चे मन से शिवजी से अपनी पीड़ा कहें। इससे वह आपकी पीड़ा जरूर सुनेंगे और उसे दूर करेंगे।
शिव शनि के कष्टों से दिलाएंगे मुक्ति- यदि जन्मकुंडली में शनि, राहु, केतु व अन्य कष्टकारी ग्रह शारीरिक कष्ट इत्यादि दे रहे हैं तो आपको श्रावण में शिव पूजा प्रारंभ कर देनी चाहिए और पूरे माह शिवजी का पूजन करना चाहिए। धनु, वृश्चिक और मकर राशि वाले शनि की साढ़ेसाती से परेशान हैं तो,श्रावण में रुद्राभिषेक अवश्य करें और शिवलिंग के सामने बैठकर शनि के बीज मंत्र का जप करें। इसके अलावा उन्हें सुंदरकांड का पाठ भी करना चाहिए।

दिल्ली में भारतीय व्यापार महोत्सव 2026 का भव्य शुभारंभ हुआ

भारत की व्यापारिक शक्ति, उद्यमशीलता, नवाचार क्षमता और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को समर्पित भारतीय व्यापार महोत्सव 2026 का आज भारत मंडपम, नई दिल्ली में भव्य शुभारंभ हुआ। 12 से 15 अगस्त तक आयोजित होने वाले इस चार दिवसीय राष्ट्रीय महोत्सव का आयोजन कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) एवं इंडिया ट्रेड प्रमोशन ऑर्गनाइजेशन (आईटीपीओ) द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है। महोत्सव का उद्घाटन केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल ने किया। इस अवसर पर केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्री जितिन प्रसाद, पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं कैट की रणनीतिक सलाहकार श्रीमती स्मृति ईरानी, स्वदेशी जागरण मंच के वरिष्ठ नेता श्री कश्मीरी लाल, कैट के राष्ट्रीय महामंत्री एवं सांसद श्री प्रवीन खंडेलवाल सहित देशभर से आए हजारों व्यापारी, एमएसएमई , स्टार्टअप्स, निमार्ता, निर्यातक, महिला उद्यमी एवं विभिन्न व्यापारिक संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। उद्घाटन संबोधन में केंद्रीय मंत्री श्री पीयूष गोयल ने भारतीय व्यापारियों को देश की आर्थिक प्रगति का प्रमुख आधार बताते हुए कहा कि भारत आज आत्मनिर्भरता, नवाचार और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के नए युग में प्रवेश कर चुका है। उन्होंने भारतीय व्यापार महोत्सव के सफल आयोजन के लिए कैट और आईटीपीओ को बधाई देते हुए कहा कि यह आयोजन देश के व्यापारिक समुदाय की शक्ति, क्षमता और आत्मविश्वास का प्रतीक है। श्री गोयल ने कहा कि जिस परिवर्तन की अपेक्षा हम दूसरों से करते हैं, उसकी शुरूआत स्वयं से करनी होगी। उन्होंने अटल जी के विचारों का उल्लेख करते हुए कहा कि आत्मनिर्भरता और विकास एक-दूसरे के पूरक हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने आत्मनिर्भरता की दिशा में अभूतपूर्व प्रगति की है और आज भारतीय उत्पादों, निमार्ताओं तथा उद्यमियों को वैश्विक स्तर पर नई पहचान मिली है। उन्होंने कहा कि भारत का निर्यात लगातार नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है और देश एक ट्रिलियन डॉलर निर्यात अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। पिछले चार महीनों में निर्यात में लगभग 5 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई है और विश्व के अनेक देश भारत के साथ अपने व्यापारिक एवं आर्थिक संबंधों को और मजबूत करने के इच्छुक हैं। श्री गोयल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में चल रही रफॉर्म एक्सप्रेसभारत को वैश्विक आर्थिक नेतृत्व के नए शिखर तक ले जाएगी। पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं कैट की रणनीतिक सलाहकार श्रीमती स्मृति ईरानी ने कहा कि भारत के व्यापारियों को कभी भी छोटा व्यापारी नहीं कहा जाना चाहिए, क्योंकि देश की अर्थव्यवस्था, रोजगार सृजन और सामाजिक स्थिरता में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रारंभ की गई प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, डिजिटल इंडिया और अन्य अनेक योजनाओं ने करोड़ों व्यापारियों एवं उद्यमियों को नए अवसर और आत्मविश्वास प्रदान किया है। डिजिटल इंडिया की सफलता का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि आज भारत में लगभग 240 बिलियन डिजिटल लेनदेन हो रहे हैं और इनके माध्यम से लगभग ₹314 लाख करोड़ का आर्थिक कारोबार संपन्न हुआ है, जो भारत की डिजिटल क्षमता और आर्थिक परिवर्तन का प्रमाण है। श्रीमती ईरानी ने कहा कि भारतीय व्यापार महोत्सव का सपना लगभग पांच वर्ष पूर्व देखा गया था। चुनौतियों और सीमित संसाधनों के बावजूद देश के व्यापारियों ने इस सपने को साकार कर दिखाया। उन्होंने इस महत्त्वपूर्ण पहल का नेतृत्व करने के लिए श्री प्रवीन खंडेलवाल तथा पूरे व्यापारिक समुदाय को विशेष बधाई दी। कैट के राष्ट्रीय महामंत्री एवं सांसद श्री प्रवीन खंडेलवाल ने कहा कि भारतीय व्यापार महोत्सव 2026 भारतीय व्यापारिक समुदाय के इतिहास में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है। उन्होंने कहा कि यह आयोजन केवल एक व्यापार प्रदर्शनी नहीं, बल्कि देश के करोड़ों व्यापारियों, एमएसएमई, स्टार्टअप्स, निमार्ताओं और उद्यमियों को वोकल फॉर लोकल से लोकल टू ग्लोबल की यात्रा से जोड़ने वाला एक राष्ट्रीय अभियान है। श्री खंडेलवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत विकास और समृद्धि के नए आयाम स्थापित कर रहा है। छोटे व्यापारियों, एमएसएमई और भारतीय निमार्ताओं के लिए वैश्विक बाजारों के द्वार खुले हैं और भारतीय उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अभूतपूर्व अवसर प्राप्त हो रहे हैं। श्री खंडेलवाल ने कहा कि भारतीय व्यापार महोत्सव प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ह्लवोकल फॉर लोकल, लोकल टू ग्लोबल और आत्मनिर्भर भारत के विजन को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और यह महोत्सव भारत को वैश्विक व्यापारिक शक्ति बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्री जितिन प्रसाद ने कहा कि आज भारत विश्व मंच पर अत्यंत मजबूत स्थिति में खड़ा है। सरकार की उद्योग एवं व्यापार समर्थक नीतियों ने भारतीय व्यवसायों के लिए अभूतपूर्व अवसर पैदा किए हैं।उन्होंने कहा कि विभिन्न देशों के साथ हुए फ्री ट्रेड एग्रीमेंट्स ने भारतीय व्यापारियों, निर्यातकों और एमएसएमई को वैश्विक बाजारों तक पहुंचने के लिए नए पंख दिए हैं। आज दुनिया के अनेक देश भारत के साथ आर्थिक साझेदारी को प्राथमिकता दे रहे हैं, जो भारत की बढ़ती आर्थिक और कूटनीतिक ताकत का प्रमाण है। भारतीय व्यापार महोत्सव 2026 में देश के विभिन्न राज्यों से आए 700 से अधिक , स्टार्टअप्स, निमार्ता, निर्यातक, महिला उद्यमी, व्यापारी संगठनों, सरकारी संस्थानों और निजी कंपनियों की व्यापक भागीदारी है। महोत्सव का उद्देश्य भारतीय उत्पादों को बढ़ावा देना, घरेलू व्यापार को सशक्त बनाना, नवाचार को प्रोत्साहित करना तथा भारतीय उद्यमों को वैश्विक बाजारों से जोड़ना है। महोत्सव के दौरान भारत इनोवेशन एंड स्टार्टअप एक्सचेंज (इकऱए) सहित अनेक व्यापारिक, औद्योगिक, तकनीकी एवं ज्ञान-विनिमय कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, जो व्यापार, उद्योग और नवाचार के नए अवसरों को गति देंगे।

फोर्टिस एस्कॉर्ट्स ओखला तथा नोटो ने अंगदान के बारे में बढ़ायी जागरूकता

विश्व अंगदान दिवस 2026 की पूर्व-संध्या पर, फोर्टिस एस्कॉर्ट्स, ओखला ने नेशनल ऑर्गेन एंड टिश्यू ट्रांसप्लांट ऑर्गेनाइजेशन (नोटो)के सहयोग से गिव द गिफ्ट ऑफ लाइफ के महत्वपूर्ण विषय परएक संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया। इसका मकसद भारत में प्रत्यारोपण के लिए उपलब्ध अंगों की भारी कमी के बारे में लोगों को जागरूक बनाना, भारत तथा पश्चिमी देशों के बीच मृतकों के अंगदान की दरों में मौजूदा अंतर को कम करना, तथा देशभर में इस बारे में जानकारी बढाऩे के साथ-साथ मृतक अंगदान संकल्पों में प्रतिभागिता को बढ़ावा देना था। कॉन्फ्रेंस में भाग ले रहे प्रमुख हेल्थकेयर विशेषज्ञों ने अंगदान की राह में पेश आने वाली मुख्य चुनौतियों पर चर्चा की और सर्जिकल समाधानों के बारे में जानकारी दी तथा अंग दान की संस्कृति विकसित करने के लिए रणनीति की रूपरेखा बतायी। इस पैनल का नेतृत्व डॉ अनिल कुमार, डायरेक्टर, नेशनल ऑर्गेन एंड टिश्यू ट्रांसप्लांट ऑगेर्नाइजेशन (नोटो), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार कर रहे थे।

उनके साथ, फोर्टिस एस्कॉर्ट्स ओखला के डॉ जेड एस मेहरवाल, चेयरमैन एवं हेड, एडल्ट कार्डियाक सर्जरी; डॉ विवेक विज,चेयरमैन, लिवर ट्रांसप्लांट एंड हेपेटो-बिलियरी साइंसेज;डॉ संजीव गुलाटी, चेयरमैन, नेफ्रोलॉजी;डॉ पंकज पंवार, एडिशनल डायरेक्टर, यूरोलॉजी एवं डॉ विक्रम अग्रवाल, वाइस प्रेसीडेंट एंड एसबीयू हेड, फोर्टिस एस्कॉर्ट्स ओखला भी उपस्थित थे।

भारत में अंग दान के क्षेत्र में काफी कमी बनी हुई है और अंग दान की दर प्रति मिलियन की आबादी पर 1 (पीएमपी) के मामूली आंकड़े से भी कम है, जो कि स्पेन (प्त49पीएमपी) तथा अमेरिका (प्त22झ्र26पीएमपी) जैसे पश्चिमी देशों की तुलना में काफी कम है। सरकारी आंकड़ों से पता चलता है कि 2020 से 2024 के दौरान, 2,805 मरीजों की मृत्यु अंग प्रत्यारोपण का इंतजार करते हुए हो गई, जबकि मार्च 2026 को करीब 90,000 मरीज नेशनल ट्रांसप्लांट प्रतीक्षा सूची में थे। प्रत्यारोपणों की संख्या में वृद्धि के बावजूद, मृत डोनर अंगों की संख्या कुल प्रत्यारोपणों का मात्र 18%ही है, जो कि इस बात का सूचक है कि देश में मृत अंग दान में विस्तार करने की आवश्यकता है।

प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए, डॉ अनिल कुमार, डायरेक्टर, नेशनल ऑर्गेन एंड टिश्यू ट्रांसप्लांट ऑगेर्नाइजेशन (नोटो), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने कहा, ह्लभारत के पास वर्ल्ड-क्लास सर्जिकल विशेषज्ञता और अत्याधुनिक ट्रांसप्लांट इंफ्रास्ट्रक्चर है, लेकिन इस बावजूद हर साल मृत अंग डोनर्स की संख्या में भारी कमी की वजह से कई बहुमूल्य जीवन असमय ही समाप्त हो जाते हैं। एक मृत डोनर से ही आठ जिंदगियों को बचाया जा सकता है और टिश्यू डोनेशन के जरिए दर्जनों अन्य मरीजों की जीवन गुणावत्ता में सुधार किया जा सकता है। हमारा उद्देश्य इस राह में पेश आने वाली प्रशासनिक अड़चनों, समाज में अंगदान के बारे में फैली गलतफहमियों को दूर करना और यह सुनिश्चित करना है कि हर नागरिक को अपने अंगों को दान करने के संकल्प के जीवनरक्षक प्रभावों के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए। डॉ जेड एस मेहरवाल, चेयरमैन एवं हेड, एडल्ट कार्डियाक सर्जरी, फोर्टिस एस्कॉर्ट्स ओखला ने कहा, एंड स्टेज हार्ट फेलियर के साथ जीवन बिता रहे मरीज के लिए, हार्ट ट्रांसप्लांट ही नए जीवन का एकमात्र विकल्प है। ट्रांसप्लांट मेडिसिन में हुई प्रगति, और ग्रीन कॉरिडोर जैसी तालमेल आधारित प्रणालियों के चलते हमें डोनर अंगों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाने में काफी मदद मिली है और डोनर से प्राप्तकर्ता तक अंगों को सुरक्षित तरीके से पहुंचाने की हमारी क्षमता पहले की तुलना में काफी मजबूत हुई है। लेकिन अभी भी इस पूरी श्रंखला में एक कड़ी गायब है और वो है दान के लिए उपलब्ध अंगों का अभाव। हमें अंगदान को अपनी रोजमर्रा की बातचीत में शामिल करना होगा और साथ ही, लोगों को अंगदान के अपने संकल्पों को रजिस्टर कराने के लिए भी प्रेरित करना होगा। हर डोनर में किसी दूसरे व्यक्ति को नया जीवन जीने का अवसर प्रदान करने की क्षमता होती है। अंगदान के बारे में जागरूकता और प्रतिभागिता बढ़ाकर, हम यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकते हैं कि प्रतीक्षा सूची में मरीजों की संख्या कम हो सके और वे वहां केवल इस वजह से इंतजार नहीं करते रहें कि उस वक्त उचित हृदय उन्हें प्रत्यारोपण के लिए नहीं मिल पाया था जब उन्हें इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी।

डॉ विवेक विज,चेयरमैन, लिवर ट्रांसप्लांट एंड हेपेटो-बिलियरी साइंसेज, फोर्टिस हेल्थकेयर ने कहा भारत में एंड स्टेज लिवर रोगों का बोझ काफी है, और लिविंग-डोनर लिवर ट्रांसप्लांटेशन ने देश में ट्रांसप्लांट संबंधी जरूरतों को पूरा करने में अहम भूमिका निभायी है। साथ ही, लिवर ट्रांसप्लांटेशन के क्षेत्र में भी तेजी से बदलाव हो रहा है, जो यह प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार सर्जिकल दक्षता और टेक्नोलॉजी के मेल से मरीजों के लिए संभावनाओं में विस्तार किया जा सकता है। लेकिन यह भी जानना जरूरी है कि केवल मेडिकल क्षेत्र में प्रगति से ही इस अंगों की कमियों को दूर नहीं किया जा सकता। इस बारे में जागरूकता बढ़ाने की काफी जरूरत है। मृत और जीवित अंग दान के बारे में जानकारी बढ़ाना जरूरी है। अंगदान की मजबूत संस्कृति और प्रत्यारोपण के बारे में लगातार प्रगति से, यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि एंड स्टेज लिवर रोग से ग्रस्त अधिकाधिक मरीजों की पहुंच जीवनरक्षक लिवर ट्रांसप्लांट तक हो सकेगी।

डॉ संजीव गुलाटी, चेयरमैन, नेफ्रोलॉजी, फोर्टिस एस्कॉर्ट्स ओखला ने कहा एडवांस किडनी रोग से ग्रस्त मरीज के लिए, डायलसिस कराने का हर दिन अनिश्चितता से भरा दिन हो सकता है, जबकि एक सफल किडनी ट्रांसप्लांट उन्हें अधिक आजादी और बेहतर लाइफ क्वालिटी का लाभ दिला सकता है। भारत में ट्रांसप्लांट मेडिसिन के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है, लेकिन किडनी की मांग आज भी समुचित अंगों की उपलब्धता की तुलना में अधिक बनी हुई है। इसलिए चुनौती केवल उन्नत क्लीनिकल क्षमताओं की ही नहीं है बल्कि उस पूरे इकोसिस्टम को मजबूत बनाने को लेकर भी है जो ट्रांसप्लांटेशन को संभव बनाता है। डॉ पंकज पंवार, एडिशनल डायरेक्टर, यूरोलॉजी, फोर्टिस एस्कॉर्ट्स ओखला ने कहा ट्रांसप्लांटेशन के भविष्य को केवल सर्जिकल इनोवेशन से ही तय नहीं किया जाता, बल्कि यह काफी हद तक अंगदान करने की समाज की इच्छा पर भी निर्भर करता है। गुर्दे बेकार होने की समस्या से जूझ रहे मरीज के लिए प्रत्यारोपण आजीवन डायलसिस कराने के झंझट से आजादी दिलाने के साथ-साथ नए जीवन का उपहार भी दिलाता है। हर डोनर के पास अपरिवर्तनीय क्षति को किसी अन्य परिवार के लिए उम्मीद में बदलने की ताकत होती है। मैं लोगों से न सिर्फ अपने अंग दान करने का अनुरोध करता हूं बल्कि उन्हें अपने फैसले के बारे में अपने परिजनों से भी बातचीत करने की सलाह देता हूं। क्योंकि जब हम अंगदान करते हैं, तो केवल एक अंग ही नहीं देते, बल्कि हम किसी दूसरे को जिंदगी जीने का नया मौका भी देते हैं।

डॉ विक्रम अग्रवाल, वाइस प्रेसीडेंट एंड एसबीयू हेड, फोर्टिस एस्कॉर्ट्स ओखला ने कहा भारत का ट्रांसप्लांट इकोसिस्टम काफी प्रगति कर चुका है, लेकिन यह सफर अभी अपनी मंजिल से काफी दूर है। फोर्टिस एस्कॉर्ट्स, ओखला में 23 हृदय प्रत्यारोपण करने के दौरान, हमने प्रत्यक्ष रूप से यह देखा है कि किस प्रकार अंगदान से किसी मरीज का जीवन पूरी तरह से बदल सकता है और उसके परिजनों को भी उम्मीद की एक नई किरण दिखायी देती है। नोटो के साथ मिलकर, विश्व अंगदान दिवस के अवसर पर हमारा संदेश साफ है- अंगदान के बारे में संवाद की प्रक्रिया केवल अस्पतालों की दीवारों के पीछे ही सीमित नहीं रहनी चाहिए। इस विषय को हर घर और समुदाय तक पहुंचना चाहिए। अधिक जागरूकता, अधिक खुले संवाद और अधिक डोनर्स के सामने आने से ट्रांसप्लांट की प्रक्रिया में बढ़ोतरी होनी चाहिए।

नाबार्ड ने हथकरघा बुनकरों पर दो दिवसीय प्रदर्शनी का किया आयोजन, 3 लाख रुपये से अधिक का व्यवसाय

नाबार्ड के नई दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के उपलक्ष्य में 10-11 अगस्त 2026 को प्रदर्शनी-सह-विक्रय एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में हथकरघा क्षेत्र के समक्ष मौजूद प्रमुख चुनौतियों, जैसे सतत विकास, प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि तथा बाजार विस्तार की रणनीतियों पर व्यापक विचार-विमर्श किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. के. महेश, आईएएस, सचिव, संस्कृति, जीएनसीटीडी तथा प्रबंध निदेशक, दिल्ली खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड ने हथकरघा क्षेत्र के समग्र विकास हेतु सरकारी एजेंसियों, वित्तीय संस्थानों, कारीगरों और अन्य हितधारकों के बीच समन्वित प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया। श्री नवीन कुमार राय, मुख्य महाप्रबंधक, नाबार्ड, नई दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय ने हथकरघा एवं हस्तशिल्प क्षेत्र के सतत विकास में नाबार्ड, भारत सरकार, एनएचडीसी तथा अन्य संस्थाओं जैसी पारिस्थितिकी तंत्र समर्थक संस्थाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला।

उन्होंने वित्तीय एवं विकासात्मक हस्तक्षेपों, क्षमता निर्माण, प्रौद्योगिकी उन्नयन तथा बाजार उपलब्धता में नाबार्ड के योगदान का उल्लेख करते हुए दिल्ली की विशिष्ट हथकरघा पहचान विकसित करने के लिए सभी पक्षों से सामूहिक प्रयासों का आह्वान किया। श्री चंदन कुमार, मुख्य महाप्रबंधक, भारतीय रिजर्व बैंक ने कहा कि क्षेत्र की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए ऋण तक पहुंच, प्रौद्योगिकी का अपनाव तथा कौशल विकास अत्यंत आवश्यक हैं।

श्री राजीव अशोक, प्रबंध निदेशक, एनएचडीसी ने भौगोलिक संकेतक (GI) उत्पादों के संवर्धन तथा बुनकरों की कार्य परिस्थितियों में सुधार के लिए एनएचडीसी की पहलों पर प्रकाश डाला, जबकि श्री टी.डी. शिवकुमार, मुख्य महाप्रबंधक, एक्जिम बैंक ने भारतीय हथकरघा उत्पादों की वैश्विक बाजार पहुंच बढ़ाने में वित्तीय संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। अन्य वक्ताओं एवं बुनकर प्रतिनिधियों ने सभी हितधारकों द्वारा समन्वित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता व्यक्त करते हुए आशा जताई कि नाबार्ड द्वारा इस दिशा में एक सार्थक पहल की गई है। संगोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. के. महेश ने की। कार्यक्रम में श्री चंदन कुमार, श्री नवीन कुमार राय, श्री पुष्पास पाण्डेय, कमोडोर राजीव अशोक (सेवानिवृत्त), श्री टी.डी. शिवकुमार, डॉ. शिन्जू महाजन तथा श्री विशेष नौटियाल सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त दिल्ली राज्य के सभी लीड डिस्ट्रिक्ट मैनेजर, बुनकर सहकारी समितियाँ, कारीगर समूह तथा नाबार्ड के वरिष्ठ अधिकारी भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी-सह-विक्रय में कुल 7 स्टॉल लगाए गए, जिनमें उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा और दिल्ली सहित विभिन्न राज्यों के हथकरघा उत्पाद प्रदर्शित किए गए।

प्रदर्शनी में कांचीपुरम साड़ियाँ, बाटिक प्रिंट, दोहर, धोती, रेडीमेड परिधान, टेबल मैट, दरियाँ तथा अन्य हस्तनिर्मित उत्पादों को प्रदर्शित किया गया, जिन्होंने आगंतुकों का विशेष ध्यान आकर्षित किया। यह प्रदर्शनी भारत की समृद्ध, विविधतापूर्ण एवं उत्कृष्ट हथकरघा परंपरा का प्रभावी प्रदर्शन रही।

सात स्टॉलों वाली इस प्रदर्शनी में दो दिनों में 3 लाख रुपये से अधिक की बिक्री दर्ज की गई, जिसने बुनकरों के हौसले को बढ़ाया ।

सर्वाधिक घटने वाले शेयर

टीसीएस	2.19 प्रतिशत
महिंद्रा एंड महिंद्रा	1.67 प्रतिशत
टाटा स्टील	1.57 प्रतिशत
एल एंड टी	1.19 प्रतिशत
इटरनल	1.18 प्रतिशत

सर्राफा

सोना (प्रति दस ग्राम)स्टैंडर्ड	1,54,947
बिटुर	88,730
गिन्नी (प्रति आठ ग्राम)	39,795
चांदी (प्रति किलो) टंच हाजिर	2,37,973
वायदा	70,857
चांदी सिक्का लिवाली	900
बिकवाली	880

मुद्रा विनिमय

मुद्रा	क्रय	विक्रय
अमेरिकी डॉलर	96.34	93.27
पौंड स्टर्लिंग	130.17	125.58
यूरो	111.66	107.51
चीन युआन	14.99	13.27

अनाज

देसी गेहूँ एमपी	2400-3000
गेहूं दड़ा	2862.70
आटा	2800-2900
मैदा	2900-2950
चोकर	2000-2100

मोटा आनाज

बाजरा	1300-1305
मक्का	1350-1500
ज्वार	3100-3200
जौ	1430-1440
काबुली चना	3500-4000

शुगर

चीनी एस	4293.58
चीनी एम	4500-4600
मिल डिलीवरी	3620-3720
गुड़	4986.64

दाल-दलहन

चना	5700-5800
दाल चना	7798.23
मसूर काली	8109.74
उड़द दाल	10982.42
मूंग दाल	10178.50
अरहर दाल	11305.20

ब्रिक्स अर्थव्यवस्थाएं वैश्विक विकास का मुख्य इंजन, निजी पूंजी जुटाने में आ रही एक जैसी समस्याएं : सीतारमण

वित्त मंत्री ने 'सदस्य देशों में प्राइवेट कैपिटल जुटाने में न्यू डेवलपमेंट बैंक की भूमिका' पर आयोजित सेमिनार को सम्बोधित किया

जयपुर, 12 अगस्त (एजेंसियां)। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि ब्रिक्स अर्थव्यवस्थाएं वैश्विक विकास का मुख्य इंजन हैं और निजी पूंजी को जुटाने में एक जैसी संरचनात्मक समस्याओं का सामना कर रही हैं।

वित्त मंत्री ने 'सदस्य देशों में प्राइवेट कैपिटल जुटाने में न्यू डेवलपमेंट बैंक की भूमिका' पर आयोजित सेमिनार में अपने मुख्य भाषण में कहा कि चुनौती सिर्फ पूंजी की उपलब्धता की नहीं है, बल्कि भरोसा, स्थिरता, अनुमान लगाने की क्षमता और भरोसेमंद लॉन्ग-टर्म फ्रेमवर्क बनाने की भी है, जो सदस्य देशों में प्राइवेट भागीदारी को लगातार बढ़ाने के लिए जरूरी हैं। उन्होंने निवेश को जोखिम-मुक्त बनाने, प्रोजेक्ट की बैंक-योग्यता (बैंकबिलिटी) बढ़ाने और निवेशकों का भरोसा मजबूत करने में मल्टीलेटरल डेवलपमेंट बैंकों की अहम भूमिका पर जोर दिया, ताकि बड़े पैमाने पर प्राइवेट कैपिटल जुटाया जा सके। यह सेमिनार भारत की अध्यक्षता में हो रही ब्रिक्स के वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक गवर्नरों की बैठक के दौरान आयोजित किया गया था।

भारत सरकार ने लगातार पब्लिक कैपिटल खर्च और उससे जुड़े स्ट्रक्चरल सुधारों के जरिए अपने इंफ्रास्ट्रक्चर इकोसिस्टम को मजबूत किया है। एक दशक पहले की तुलना में पब्लिक इन्वेस्टमेंट में काफी बढ़ोतरी हुई है: **निर्मला सीतारमण, वित्त मंत्री**

वित्त मंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि डेवलपमेंट फाइनेंस का भविष्य पार्टनरशिप, मल्टीलेटरल संस्थाओं, राष्ट्रीय सरकारों और प्राइवेट सेक्टर की अलग-अलग खूबियों को एक साथ लाने में है। भारत के अनुभव का जिक्र करते हुए, सीतारमण ने कहा कि भारत सरकार ने लगातार पब्लिक कैपिटल खर्च और उससे जुड़े स्ट्रक्चरल सुधारों के जरिए अपने इंफ्रास्ट्रक्चर इकोसिस्टम को मजबूत किया है। एक दशक पहले की तुलना में पब्लिक इन्वेस्टमेंट में काफी बढ़ोतरी हुई है, जो हाईवे, रेलवे, पोर्ट, लॉजिस्टिक्स सिस्टम, डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर और एनर्जी नेटवर्क में प्रोडक्टिव राष्ट्रीय संपत्ति बनाने की एक सोची-समझी रणनीति को दिखाता है।

उन्होंने कहा कि सरकार का मानना है कि पब्लिक कैपिटल को प्राइवेट इन्वेस्टमेंट की जगह लेने के बजाय, उसे बढ़ावा देने का काम करना चाहिए। इस सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए सरकार ने कई सुधार किए हैं। इनमें आर्थिक रूप से सीमित लेकिन सामाजिक रूप से जरूरी प्रोजेक्ट्स के लिए 'वायबिलिटी गैप फंडिंग' (वीजीएफ); सड़क इंफ्रास्ट्रक्चर में जोखिम को संतुलित तरीके से बांटने के लिए 'हाइब्रिड एन्युइटी मॉडल' (एचएएम); और प्रोजेक्ट की बैंक-योग्यता (बैंक से लोन लेने की क्षमता) को बेहतर बनाने के लिए 'क्रेडिट एन्हांसमेंट मैकेनिज्म' शामिल हैं।

आरबीआई गवर्नर ने ब्रिक्स देशों ने सीबीडीसी और फास्ट पेमेंट सिस्टम को आपस में जोड़ने पर की चर्चा

संजय मल्होत्रा ने आयोजित एफआईबीएसी सम्मेलन को संबोधित किया

नई दिल्ली, 12 अगस्त (एजेंसियां)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने कहा है कि ब्रिक्स (बीआरआईसीएस) देशों के बीच फास्ट पेमेंट सिस्टम और सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (सीबीडीसी) को आपस में जोड़ने की संभावनाओं पर चर्चा चल रही है, जिसका उद्देश्य सीमा-पार भुगतान को तेज, सस्ता और अधिक कुशल बनाना है। यह चर्चा ऐसे समय में हो रही है जब भारत सितंबर 2026 में होने वाले ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की मेजबानी की तैयारी कर रहा है।

ब्रिक्स समूह में ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका सहित अन्य सदस्य देश शामिल हैं। मुंबई में आयोजित एफआईबीएसी सम्मेलन को संबोधित करते हुए संजय मल्होत्रा ने कहा कि सीमा-पार भुगतान ब्रिक्स देशों की साझा

सीमा-पार भुगतान ब्रिक्स देशों की साझा प्राथमिकताओं में शामिल है, क्योंकि इस क्षेत्र में लागत कम करने और भुगतान प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने की पर्याप्त संभावनाएं मौजूद हैं: **संजय मल्होत्रा**

प्राथमिकताओं में शामिल है, क्योंकि इस क्षेत्र में लागत कम करने और भुगतान प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने की पर्याप्त संभावनाएं मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि खुदरा भुगतान को तेज और किफायती बनाने के लिए विभिन्न विकल्पों पर विचार किया जा रहा है। आरबीआई गवर्नर के अनुसार, फिलहाल कई विकल्प चर्चा के स्तर पर हैं, जिनमें सीबीडीसी का उपयोग और विभिन्न देशों के फास्ट पेमेंट सिस्टम के बीच कनेक्टिविटी स्थापित करना शामिल है।

मल्होत्रा ने कहा, 'सीमा-पार भुगतान ऐसा क्षेत्र है जिसमें हम सभी, विशेषकर ब्रिक्स देश, गहरी रुचि रखते हैं। हमें लगता है कि यहां ट्रांजैक्शन लागत कम करने की व्यापक संभावना है। विभिन्न विकल्पों पर विचार किया जा रहा है, लेकिन अभी यह प्रक्रिया चर्चा के चरण में है।' आरबीआई गवर्नर ने कहा कि भारत ने इंडोनेशिया, मालदीव, मॉरीशस और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के साथ द्विपक्षीय स्थानीय मुद्रा व्यवस्था स्थापित की है। उन्होंने जोर देकर कहा कि ऐसे लेनदेन की मात्रा बढ़ाने के लिए और प्रयास किए जाने चाहिए, ताकि डॉलर पर निर्भरता कम हो और व्यापार लागत में कमी आए।

नई क्लोजिंग ऑक्शन सेशन में हेरफेर के कोई सबूत नहीं मिले: सेबी प्रमुख

मुंबई, 12 अगस्त (एजेंसियां)। सेबी यानी भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (एसईबीआई) के चेयरमैन तुहिन कांत पांडे ने कहा कि शेयर बाजारों में हाल ही में लागू किए गए क्लोजिंग ऑक्शन सेशन (सीएएस) में किसी प्रकार की हेरफेर या अनियमितता के प्रमाण नहीं मिले हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह भारतीय पूंजी बाजार की संरचना में किया गया एक महत्वपूर्ण सुधार है, जो देश के बाजारों को वैश्विक मानकों के और करीब लाता है। मुंबई में आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पांडे ने कहा कि क्लोजिंग ऑक्शन सेशन भारतीय पूंजी बाजार की संरचना में किया गया एक महत्वपूर्ण सुधार है, जो भारतीय बाजारों को वैश्विक मानकों के और करीब ले जाता है। उन्होंने कहा, 'सीएएस बाजार की माइक्रोस्ट्रक्चर में एक बहुत बड़ा सुधार है और हम इसके पीछे मजबूती से खड़े हैं। दुनिया के कई प्रमुख बाजार पहले से इस व्यवस्था को अपना चुके हैं। जापान ने इसे 2024 में लागू किया, जबकि हांगकांग, अमेरिका, जर्मनी, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया में भी यह प्रणाली मौजूद है।' सेबी प्रमुख ने बताया कि क्लोजिंग प्राइस का उचित निर्धारण बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसी के आधार पर विभिन्न शेयर सूचकांकों, पैसिव निवेश उत्पादों और म्यूचुअल फंडों की नेट एसेट वैल्यू (एनएवी) तय होती है। उन्होंने कहा कि फिलहाल सबसे बड़ा फोकस इस नई व्यवस्था में बाजार सहभागिता बढ़ाने पर है। उनके अनुसार, अधिक से अधिक निवेशकों, ब्रोकरों और बाजार प्रतिभागियों को इस प्रणाली को समझने और इसमें भाग लेने की आवश्यकता है।

डिजिटल सेवाओं का तेजी से बढ़ा दायरा: अश्विनी वैष्णव

मंत्री ने बताया डिजिलॉकर के 72.43 करोड़ रजिस्टर्ड यूजर्स, उमंग प्लेटफॉर्म पर 11.66 करोड़ उपयोगकर्ता

नई दिल्ली, 12 अगस्त (एजेंसियां)। केंद्र सरकार की प्रमुख डिजिटल पहल डिजिलॉकर और उमंग (यूएमएएनजी) प्लेटफॉर्म का दायरा लगातार बढ़ रहा है। संसद में बुधवार को दी गई जानकारी के अनुसार, डिजिलॉकर पर अब 72.43 करोड़ से अधिक पंजीकृत उपयोगकर्ता हैं, जबकि पिछले तीन वर्षों में इस प्लेटफॉर्म पर 72.86 करोड़ दस्तावेज एक्सेस लेनदेन (डॉक्यूमेंट एक्सेस ट्रांजैक्शन्स) दर्ज किए गए हैं। राज्यसभा में एक लिखित उत्तर में केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि उमंग प्लेटफॉर्म पर भी उपयोगकर्ताओं की संख्या तेजी से बढ़ी है। वर्तमान में इस प्लेटफॉर्म पर 11.66 करोड़ से अधिक पंजीकृत यूजर्स हैं और पिछले तीन वर्षों के दौरान लगभग 798 करोड़ लेनदेन दर्ज किए गए हैं।

प्रधानमंत्री मोदी के नागरिकों को तकनीक के माध्यम से सशक्त बनाने और डिजिटल सेवाओं को जन-जन तक पहुंचाने के विजन के अनुरूप जुलाई 2015 में डिजिटल इंडिया कार्यक्रम शुरू किया गया था: **अश्विनी वैष्णव**

मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नागरिकों को तकनीक के माध्यम से सशक्त बनाने और डिजिटल सेवाओं को जन-जन तक पहुंचाने के विजन के अनुरूप जुलाई 2015 में डिजिटल इंडिया कार्यक्रम शुरू किया गया था, जिसके तहत सरकार ने डिजिटल पहुंच बढ़ाने और नागरिकों को निर्बाध सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं।

अश्विनी वैष्णव ने बताया कि 31 जुलाई 2026 तक देश भर में 2,575 सरकारी सेवाएं उमंग प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध हैं। इनमें 880 सेवाएं केंद्र सरकार और 1,695 सेवाएं राज्य सरकारों से संबंधित हैं। वहीं डिजिलॉकर प्लेटफॉर्म पर 5,437 प्रकार के दस्तावेज और सेवाएं उपलब्ध हैं, जिनमें 661 केंद्र सरकार तथा 4,776 राज्य सरकारों से जुड़ी हैं।

सार संक्षेप

डिमर्जर के बाद वेदांता पर निवेशकों ने जताया मजबूत भरोसा

नई दिल्ली। वेदांता लिमिटेड (बीएसईः 500295, एनएसईः वीईडीएल) जून 2026 तिमाही के दौरान खुदरा निवेशकों की पहली पसंद बनकर उभरी है। इस अवधि में कंपनी से सबसे अधिक नए खुदरा शेयरधारक जुड़े। साथ ही, कंपनी ने मजबूत वित्तीय प्रदर्शन जारी रखते हुए अपने शेयरधारकों को उद्योग में अग्रणी स्तर का रिटर्न भी दिया। कैपिटलाइन के आंकड़ों के अनुसार, वित्त वर्ष 2026-27 की पहली तिमाही (क्यू1एफवाई 2027) में वेदांता लिमिटेड के साथ करीब 4.9 लाख नए खुदरा शेयरधारक जुड़े। यह वृद्धि कैपिटलाइन द्वारा ट्रैक की गई सभी कंपनियों में सबसे अधिक रही। इस उपलब्धि के साथ वेदांता ने विप्रो, बजाज ऑटो, एचडीएफसी बैंक और रिलायंस इंडस्ट्रीज़ जैसी कंपनियों को भी पीछे छोड़ दिया, जिनके खुदरा शेयरधारकों की संख्या में भी इसी अवधि के दौरान अच्छी बढ़ोतरी दर्ज की गई। वहीं, टाटा मोटर्स पीवी, यस बैंक, सुजलॉन एनर्जी, अडानी ग्रीन एनर्जी और बीएचईएल जैसी कंपनियों के खुदरा शेयरधारकों की संख्या इस तिमाही में घट गई।

वस्तु निर्यात दूसरी तिमाही में 131 अरब डॉलर के पार पहुंचने की संभावनाः एग्जिम बैंक

नई दिल्ली। भारत के निर्यात-आयात बैंक (एग्जिम बैंक) ने अनुमान लगाया है कि देश का कुल वस्तु निर्यात चालू वित्त वर्ष 2026-27 की दूसरी तिमाही में 131 अरब डॉलर के पार पहुंच जायेगा। एग्जिम बैंक की बुधवार को जारी प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि दूसरी तिमाही में वस्तु निर्यात 17.6 प्रतिशत बढ़कर 131.2 अरब डॉलर रहने की संभावना है। इस अवधि में गैर-तेल निर्यात में 20.3 प्रतिशत और गैर-तेल तथा गैर-रत्न एवं आभूषण निर्यात में 20.5 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान लगाया गया है। गैर-तेल निर्यात 113.8 प्रतिशत और गैर-तेल तथा गैर-रत्न एवं आभूषण निर्यात 105.8 अरब डॉलर रहने की संभावना जतायी गयी है।

तमिलनाडु के पेट्रोल पंप डीलरों ने बैंक खाता फ्रीज होने के विरोध में यूपीआई भुगतान बंद करने की दी चेतावनी

चेन्नई। तमिलनाडु के पेट्रोल पंप संचालकों ने डिजिटल भुगतान, विशेषकर यूपीआई ट्रांजेक्शन, को लेकर गंभीर चिंता जताते हुए चेतावनी दी है कि यदि उनकी समस्याओं का समाधान नहीं किया गया तो राज्य भर के पेट्रोल पंप यूपीआई और अन्य कैशलेस भुगतान स्वीकार करना बंद कर सकते हैं। डीलरों का आरोप है कि साइबर अपराध जांच के दौरान उनके बैंक खातों को फ्रीज कर दिया जाता है, जबकि विवादित लेनदेन में उनकी कोई प्रत्यक्ष भूमिका नहीं होती। तमिलनाडु पेट्रोलियम डीलर्स एसोसिएशन (टीएनपीडीए), जो राज्य के लगभग 5,000 पेट्रोल पंपों का प्रतिनिधित्व करती है, ने इस मामले में मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय से हस्तक्षेप की मांग की है।

शेयर बाजारों में बिकवाली, सेंसेक्स 600 अंक से ज्यादा लुढ़का

मुंबई, 12 अगस्त (एजेंसियां)। कच्चे तेल में तेजी से घरेलू शेयर बाजारों में बुधवार को बिकवाली हावी रही और बीएसई का सेंसेक्स दोपहर तक 600 अंक से ज्यादा टूट गया।

सेंसेक्स सुबह 109.08 अंक की बढ़त के साथ 78,263.33 अंक पर खुला, लेकिन खुलते ही लाल निशान में चला गया। धीरे-धीरे इसकी गिरावट और बढ़ती गयी। खबर लिखे जाते समय यह 630.86 अंक (0.81 प्रतिशत) लुढ़ककर 77,523.39 अंक पर था। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 सूचकांक 24,472.45 अंक पर लगभग स्थिर खुला। खबर लिखे जाते समय यह 199.05 अंक यानी 0.81 प्रतिशत उतरकर 24,272.65 अंक पर रहा।

- **सेंसेक्स 630.86 अंक लुढ़ककर 77,523.39 अंक पर टिका**
- **निफ्टी 199.05 अंक उतरकर 24,272.65 अंक पर रहा**

अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल में तेजी है।

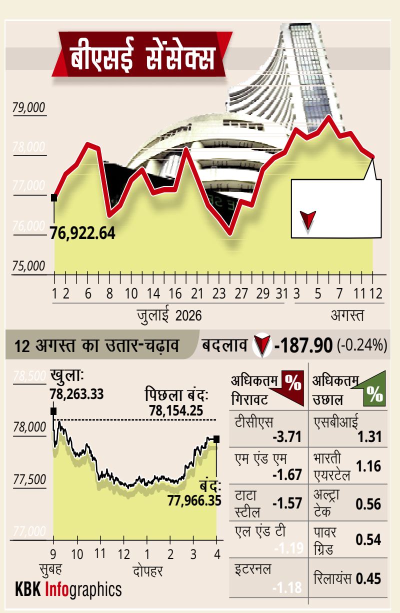

लंदन का ब्रेंट क्रूड वायदा 0.4 प्रतिशत टूटकर 89 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर बना हुआ है। इससे भारतीय शेयर बाजारों में निवेश धारणा प्रभावित हुई है। वृहत बाजार में भी गिरावट रही। निफ्टी मिडकैप-50 सूचकांक 0.46 फीसदी और स्मॉलकैप-100 सूचकांक 0.21 प्रतिशत नीचे है।

सेक्टरों पर आधारित सूचकांकों में सार्वजनिक बैंक और धातु को छोड़कर अन्य सभी समूहों में बिकवाली देखी जा रही है। निफ्टी आईटी फिलहाल दो प्रतिशत से अधिक की गिरावट में है। एफएमसीजी, टिकाऊ उपभोक्ता उत्पाद और रियल्टी समूहों से सूचकांक एक फीसदी से ज्यादा टूट गये हैं। मीडिया, वित्त, निजी बैंकों, फार्मा, तेल एवं गैस, स्वास्थ्य और रसायन समूहों के सूचकांक भी लाल निशान में रहे।

सेंसेक्स की कंपनियों में टीसीएस का शेयर करीब पांच प्रतिशत गिर गया। टाटा स्टील और टाइटन के शेयर दो प्रतिशत से अधिक टूट गये। इंफोसिस, महिंद्रा एंड महिंद्रा और अडानी पोर्ट्स भी एक से दो प्रतिशत तक नीचे रहे। भारतीय स्टेट बैंक का शेयर करीब एक प्रतिशत की बढ़त में है।

मैन्युफैक्चरिंग जीवीए वित्त वर्ष 23 से वित्त वर्ष 26 के बीच 10 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़ा : केंद्र

नई दिल्ली, 12 अगस्त (एजेंसियां)। केंद्र सरकार ने बुधवार को कहा कि संशोधित सीरीज के अनुसार, वित्त वर्ष 2022-23 से वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान स्थिर कीमतों पर मैन्युफैक्चरिंग जीवीए 10.88 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) से बढ़ा है।

केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) राव इंद्रजीत सिंह ने लोकसभा को बताया कि संबंधित सीरीज के तहत उपलब्ध डेटा 'कुल सकल मूल्य वृद्धि (जीवीए) में मैन्युफैक्चरिंग की हिस्सेदारी में किसी भी महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत नहीं देते हैं।'

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सरकार ने मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर को मजबूत बनाने और बाहरी झटकों के प्रति इसकी कमजोरी को कम करने के लिए कई संरचनात्मक सुधार और पहल की हैं। इनमें प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) स्कीमें, पीएम गतिशक्ति नेशनल मास्टर प्लान, नेशनल लॉजिस्टिक्स पॉलिसी, भारत औद्योगिक विकास योजना (भव्या), सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग, क्रिटिकल मिनरल्स और एमएसएमई को बढ़ावा देने की पहल, सरफेस कोल/लिग्नाइट गैसीफिकेशन प्रोजेक्ट्स को बढ़ावा देने की योजना, व्यापार करने में आसानी में सुधार और नेशनल इंडस्ट्रियल कॉरिडोर डेवलपमेंट प्रोग्राम (एनआईसीडीपी) शामिल हैं। केंद्रीय मंत्री के अनुसार, 'इन सभी पहलों का मकसद घरेलू मैन्युफैक्चरिंग को मजबूत करना, आपूर्ति चेन में विविधता लाना, रणनीतिक क्षेत्रों में आयात पर निर्भरता कम करना, ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाना और भारत के मैन्युफैक्चरिंग इकोसिस्टम की मजबूती और प्रतिस्पर्धात्मकता को बेहतर बनाना है।' सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय ने राष्ट्रीय लेखा आंकड़ों के आधार वर्ष को 2011-12 से बदलकर 2022-23 कर दिया है, और संशोधित सीरीज फरवरी 2026 में जारी की गई थी।

वैश्विक तनावों के बीच कीमती धातुओं में रौनक बरकरार, सोना-चांदी 1.10 प्रतिशत तक उछले

नई दिल्ली, 12 अगस्त (एजेंसियां)। अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ते तनावों के बीच घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में बुधवार के सत्र में कीमती धातुओं यानी सोने और चांदी की कीमतों में अच्छी तेजी देखने को मिली। निवेशकों की नजर अमेरिकी महंगाई के प्रमुख आंकड़ों पर टिकी हुई है, क्योंकि इन आंकड़ों से अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व की आगामी ब्याज दर नीति को लेकर संकेत मिल सकते हैं। इसके अलावा सुरक्षित निवेश की बढ़ती मांग और केंद्रीय बैंकों की लगातार खरीदारी ने भी सोने की कीमतों को सहारा दिया है।

मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर अक्टूबर डिलीवरी वाला गोल्ड फ्यूचर्स पिछले बंद भाव 1,53,765 रुपए की तुलना में 1,182 रुपए की तेजी के साथ 1,54,947 रुपए पर खुला। कारोबार के दौरान यह 0.77 प्रतिशत यानी 1,185 रुपए की बढ़त के साथ 1,54,950 रुपए के उच्चतम स्तर तक पहुंच गया, जबकि इसका निचला स्तर 1,54,323 रुपए रहा। वहीं, खबर लिखे जाने तक सोना 895 रुपए यानी 0.58 प्रतिशत की बढ़त के साथ 1,54,660 रुपए प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार करता नजर आया।

हालांकि, सोना अभी भी अपने इस वर्ष के रिकॉर्ड उच्च स्तर 1,80,779 रुपए प्रति 10 ग्राम से काफी नीचे बना हुआ है। इसके बावजूद हालिया तेजी ने निवेशकों का भरोसा मजबूत किया है। सोने के साथ-साथ चांदी में भी मजबूत खरीदारी देखने को मिली। एमसीएक्स पर सितंबर डिलीवरी वाला सिल्वर फ्यूचर्स 2,35,659 रुपए के पिछले बंद भाव से 2,314 रुपए की बढ़त के साथ 2,37,973 रुपए पर खुला।

2047 तक 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने के लिए निष्पक्ष व्यापार और सर्कुलर इकोनॉमी अपनाने की जरूरत: पीयूष गोयल

केंद्रीय वाणिज्य मंत्री ने राजधानी में आयोजित भारतीय व्यापार महोत्सव के उद्घाटन समारोह में दिया को संबोधन

नई दिल्ली, 12 अगस्त (एजेंसियां)। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने बुधवार को भारतीय उद्योग जगत, कारोबारियों और नागरिकों से निष्पक्ष व्यापार, रीसाइक्लिंग, पुन: उपयोग और सर्कुलर इकोनॉमी को अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि यदि भारत को वर्ष 2047 तक 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनना है, तो आर्थिक विकास के साथ-साथ टिकाऊ और जिम्मेदार कारोबारी मॉडल को भी बढ़ावा देना होगा।

राष्ट्रीय राजधानी में आयोजित भारतीय व्यापार महोत्सव के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए गोयल ने कहा कि वैश्विक स्तर पर भारत की बढ़ती आर्थिक भागीदारी और विभिन्न देशों के साथ मजबूत होते व्यापारिक संबंध भारतीय उद्योगों के लिए बड़े अवसर लेकर आए हैं। उन्होंने कहा कि भारत अब दुनिया के सामने अपने उत्पादों और सेवाओं को अधिक

भारत अब दुनिया के सामने अपने उत्पादों और सेवाओं को अधिक मजबूती के साथ प्रस्तुत करने की स्थिति में है, भारत को वर्ष 2047 तक 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनना है, तो टिकाऊ और जिम्मेदार कारोबारी मॉडल को भी बढ़ावा देना होगाः **पीयूष गोयल, केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री**

मंत्री ने बताया कि केंद्र सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में नौ मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) किए हैं, जिनकी बदौलत भारतीय कंपनियों को अंतरराष्ट्रीय बाजारों में प्राथमिकता आधारित पहुंच मिल रही है। इससे भारतीय निर्यातकों, उद्योगों और सेवा क्षेत्र के

के निर्यात प्रदर्शन की सराहना करते हुए कहा कि देश के एमएसएमई, किसान, मछुआरे, उद्यमी, श्रमिक और सेवा क्षेत्र ने निर्यात बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि भारत की अर्थव्यवस्था वर्तमान में लगभग 4 ट्रिलियन डॉलर की है और सरकार का लक्ष्य इसे 2047 तक बढ़ाकर 30 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचाना है।

उन्होंने कहा कि देश का वस्तु और सेवा निर्यात रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच चुका है और सरकार ने चालू वर्ष के लिए 1 ट्रिलियन डॉलर निर्यात का लक्ष्य निर्धारित किया है। पिछले छह वर्षों में भारत का निर्यात लगभग 73 प्रतिशत बढ़ा है, जबकि चालू वित्त वर्ष की अप्रैल से जुलाई अवधि के दौरान निर्यात में करीब 15 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। गोयल ने जोर देते हुए कहा कि भारतीय उद्योगों को केवल घरेलू बाजार तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि वैश्विक बाजारों में अपनी मजबूत

पेट भरने पर आंतों को संकेत भेजता है तंत्रिका तंत्र

गैस्ट्रोकोलिक रिफ्लेक्स हर व्यक्ति में एक जैसी ताकत से काम नहीं करता

नई दिल्ली, 12 अगस्त (एजेंसियां)। हमारे शरीर में खाना खाने के बाद कई तरह की प्रक्रियाएं शुरू हो जाती हैं। खाना पेट में पहुंचता है, पेट उसे पचाने का काम शुरू करता है और आंतें भी अपना काम तेज कर देती हैं। यही वजह है कि कुछ लोगों को खाना खाने के कुछ ही समय बाद टॉयलेट जाने की जरूरत महसूस होने लगती है।

पेट दर्द, पेट में मरोड़, ज्यादा गैस या पेट फूलने जैसी परेशानी

खासकर सुबह नाश्ता करने के बाद ऐसा होना काफी आम है। कई लोग इसे देखकर सोचते हैं कि जो खाना अभी खाया है, वह तुरंत बाहर निकल रहा है। लेकिन ऐसा नहीं होता। हमारे शरीर को भोजन को पचाने और उसे मल में बदलने में कई घंटे लगते हैं।

खाना खाने के बाद जल्दी टॉयलेट जाने की इच्छा होने के पीछे शरीर की एक सामान्य प्रक्रिया काम करती है। इसे डॉक्टर गैस्ट्रोकोलिक रिफ्लेक्स कहते हैं। दरअसल, जब भोजन पेट में पहुंचता है, तो शरीर को संकेत मिलता है कि पाचन की प्रक्रिया आगे बढ़ानी है। इसके जवाब में, बड़ी आंत की गतिविधियां बढ़ सकती हैं। बड़ी आंत में पहले से मौजूद मल आगे की तरफ खिसकने लगता है, और इसी वजह से व्यक्ति को शौच जाने की इच्छा महसूस होती है। इसलिए, भोजन के तुरंत बाद टॉयलेट जाना इस बात का संकेत नहीं है कि अभी खाया गया खाना शरीर से बाहर निकल रहा है। भोजन को पाचन तंत्र से गुजरने और मल बनने में काफी समय लगता है।

वैज्ञानिक रिसर्च के अनुसार, गैस्ट्रोकोलिक रिफ्लेक्स हर व्यक्ति में एक जैसी ताकत से काम नहीं करता। कुछ लोगों में यह प्रतिक्रिया हल्की होती है, जबकि कुछ लोगों में भोजन के बाद आंतों की गतिविधि काफी बढ़ सकती है। सुबह के समय यह प्रभाव ज्यादा महसूस होना भी आम बात है। इसका एक कारण यह है कि रातभर खाली रहने के बाद जब पेट में भोजन पहुंचता है, तो पाचन तंत्र की गतिविधि दोबारा तेज हो जाती है। इसी दौरान बड़ी आंत भी सक्रिय होती है और शौच की इच्छा पैदा हो सकती है।

खाने की मात्रा और खाने का तरीका भी इस पर असर डाल सकता है। अगर कोई व्यक्ति एक बार में बहुत ज्यादा खाना खाता है, तो पेट ज्यादा भरता है और इसकी वजह से आंतों की हलचल बढ़ सकती है। बहुत तला-भुना, ज्यादा तेल वाला या भारी खाना खाने के बाद भी कुछ लोगों को जल्दी टॉयलेट जाने की जरूरत महसूस हो सकती है। चाय या कॉफी जैसे पेय भी कुछ लोगों की आंतों को ज्यादा सक्रिय कर सकते हैं। हालांकि, हर व्यक्ति का शरीर अलग होता है, इसलिए किसी एक भोजन का असर सभी लोगों पर एक जैसा नहीं होता। अगर खाना खाने के बाद टॉयलेट जाने की जरूरत केवल कभी-कभार होती है और मल सामान्य रहता है, तो आमतौर पर इसे शरीर की सामान्य प्रक्रिया का हिस्सा माना जाता है। चिंता तब बढ़ती है जब यह समस्या लगातार होने लगे और इसके साथ पेट दर्द, पेट में मरोड़, ज्यादा गैस या पेट फूलने जैसी परेशानी दिखाई दे। ऐसी स्थिति में इरिटेबल बॉवेल सिंड्रोम (आईबीएस) जैसी समस्या की संभावना देखी जा सकती है। इसमें आंतें कुछ ज्यादा संवेदनशील हो जाती हैं। खाना खाने के बाद पेट में हलचल बढ़ने पर ऐसे लोगों को तुरंत टॉयलेट जाने की जरूरत महसूस होती है। कुछ लोगों को दस्त की परेशानी होती है, जबकि कुछ लोगों को कब्ज हो सकता है। कई लोगों में दोनों समस्याएं अलग-अलग समय पर देखने को मिलती हैं।

अगर पेट की परेशानी के साथ बिना वजह वजन कम हो रहा है, मल में खून आ रहा है, रात में भी बार-बार टॉयलेट के लिए उठना पड़ता है या पेट में लगातार तेज दर्द रहता है, तो जांच कराने में देरी नहीं करनी चाहिए।

उम्र सिर्फ एक नंबर, आत्मविश्वास व अंदाज कभी पुराने नहीं होते : ईशा कोप्पिकर

मुंबई, 12 अगस्त (एजेंसियां)। बढ़ती उम्र को लेकर अब लोगों की सोच भी बदल रही है। खासकर मनोरंजन जगत की अभिनेत्रियां अपने अनुभवों के साथ यह बताती नजर आती हैं कि उम्र किसी की खूबसूरती, आत्मविश्वास या पहचान तय नहीं करती। अभिनेत्री ईशा कोप्पिकर भी इसी सोच को लेकर अपनी बात सामने रखती रही हैं। इस कड़ी में उन्होंने अपने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए उम्र, आत्मविश्वास, फिटनेस, मातृत्व, प्यार और जिंदगी में आए बदलावों को लेकर खुलकर बात की। ईशा ने इंस्टाग्राम पर अपनी कुछ खूबसूरत और स्टाइलिश तस्वीरें पोस्ट कीं और कहा कि उम्र सिर्फ एक नंबर है। अब मैं पहले से थोड़ी ज्यादा आत्मविश्वासी, अपनी पसंद को लेकर ज्यादा सजग और खुद को लेकर पहले से ज्यादा बेबाक हूं। असली खूबसूरती और अंदाज उम्र में नहीं, बल्कि इस बात में है कि इंसान समय के साथ खुद को कितना बेहतर बनाता है।

ईशा ने लिखा कि मैं अब बेहतर चुनाव करती हूं, गहराई से प्यार करती हूं

और जिंदगी के हर पड़ाव को खास बनाने की कोशिश करती हूं। मैं वही लड़की हूं, लेकिन अब मेरे स्टैंडर्ड बेहतर हैं, सपने बड़े हैं, आसपास लोगों की संख्या कम है और यादें पहले से ज्यादा हैं।

ईशा की पोस्ट की पहली तस्वीर पर लिखा कि तब भी पसंदीदा थीं और आज भी पसंदीदा हैं। इसके बाद ईशा ने अपनी वर्कआउट से जुड़ी तस्वीर साझा की। इसमें वह व्यायाम करती दिखाई दीं और तस्वीर पर लिखा था, को कुछ समय का शौक नहीं, बल्कि लाइफस्टाइल बनाना भी अपने आप में खास है। 20 साल बाद भी मेहनत जारी है।

सैंड आर्टिस्ट ने बनाई नेताजी सुभाष चंद्र बोस की थीम पर मूर्ति

अगरतला, 12 अगस्त (एजेंसियां)। स्वतंत्रता दिवस समारोह से पहले देशभर में चलाए जा रहे हर घर तिरंगा अभियान के तहत सैंड आर्टिस्ट कृष्णा देबनाथ ने बुधवार को अगरतला में रेत से एक कलाकृति बनाई। इस मूर्ति में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की तस्वीर के साथ-साथ 'हर घर तिरंगा' अभियान को दर्शाने वाले तत्व भी शामिल हैं। यह अभियान लोगों को राष्ट्रीय ध्वज फहराने और पूरे देश में देशभक्ति की भावना का जश्न मनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। पत्रकारों से बात करते हुए देबनाथ ने कहा कि स्वतंत्रता दिवस के मौके पर आयोजित किए जा रहे महीने भर चलने वाले कार्यक्रमों के तहत मैंने हर घर तिरंगा अभियान के साथ नेताजी सुभाष चंद्र बोस की तस्वीर वाली यह रेत की मूर्ति बनाई है।

हर घर तिरंगा अभियान कार्यक्रम आयोजित

इस बीच, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया और स्वतंत्रता दिवस से पहले लोगों से एक खास अपील की गई। वीडियो में उन्होंने देशभर के लोगों से 'हर घर तिरंगा' अभियान को हर घर में एक त्योहार की तरह मनाने का आग्रह किया।

प्रधानमंत्री ने नागरिकों से यह भी अपील की कि वे अपने घरों पर तिरंगा फहराएं और 15 अगस्त को गर्व, उत्साह और देशभक्ति की भावना के साथ मनाएं। उनकी यह अपील ऐसे समय में आई है, जब भारत 15 अगस्त, 2026 को अपना 80वां स्वतंत्रता दिवस मनाने की तैयारी कर रहा है।

राष्ट्रीय समारोहों से पहले पूरे देश में 'हर घर तिरंगा' अभियान चलाया जा रहा है। साथ ही विभिन्न राज्यों में तिरंगा यात्राएं और अन्य देशभक्तिपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। हर घर तिरंगा 2026 अभियान अभी चल रहा है। यह नागरिकों को राष्ट्रीय ध्वज फहराकर, सेल्फी अपलोड करके और स्वतंत्रता दिवस समारोह से जुड़ी गतिविधियों में हिस्सा लेकर इस देशव्यापी पहल में शामिल होने का मौका देता है।

केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत द्वारा शुरू किया गया यह अभियान 9 अगस्त से 17 अगस्त तक चलेगा। इस साल के आयोजन में वंदे मातरम की 150वीं वर्षगांठ पर खास जोर दिया गया है और लोगों को जश्न के हिस्से के तौर पर राष्ट्रीय गीत सीखने और गाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। लोग हर घर तिरंगा के लिए बने खास प्लेटफॉर्म के जरिए इस कैंपेन में हिस्सा ले सकते हैं। इस पोर्टल पर यूजर्स अपनी भागीदारी रजिस्टर कर सकते हैं, वर्चुअली तिरंगा फहरा सकते हैं, सेल्फी अपलोड कर सकते हैं और सभी गतिविधियां पूरी करने के बाद सर्टिफ़िकेट या यादगार वीडियो डाउनलोड कर सकते हैं। इसमें हिस्सा लेने के लिए नागरिकों को हर घर तिरंगा की आधिकारिक वेबसाइट पर जाना होगा, होइस्ट फ्लैग (झंडा फहराने) का विकल्प चुनना होगा।

इनर व्हील क्लब ऑफ नवीन ने धूमधाम से मनाया तीज व सावन मिलन समारोह

ग्रेटर नोएडा, 12 अगस्त (देशबन्धु)। इनर व्हील क्लब ऑफ नवीन ग्रेटर नोएडा द्वारा तीज महोत्सव एवं सावन मिलन समारोह का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में क्लब की सभी सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। पूरे आयोजन में सावन और तीज की पारंपरिक छटा देखने को मिली। समारोह में सोलह श्रृंगार प्रतियोगिता में अंकिता सिंह को तीज क्वीन, स्वाति को बैंगल क्वीन तथा सरिता चोपड़ा को मेहंदी क्वीन चुना गया। विजेताओं को सम्मानित कर उनका उत्साहवर्धन किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. शैली गर्ग, क्लब सचिव द्वारा किया गया। इस अवसर पर क्लब की ओर से पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया गया। होटल के सभी स्टाफ को पॉलीथिन का प्रयोग न करने के लिए प्रेरित किया गया तथा कपड़े के बैग में लकड़ी की कंघी और लकड़ी का टूथब्रश वितरित किए गए। क्लब सदस्यों ने लोगों से पर्यावरण की रक्षा और प्लास्टिक के कम से कम उपयोग का संकल्प लेने का आह्वान किया। इस अवसर पर पूर्व अध्यक्ष अनिता सिंह ने सभी सदस्यों को तीज एवं सावन मिलन की शुभकामनाएं दीं और क्लब के सामाजिक एवं पर्यावरण संरक्षण कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम में डॉ. ईहा, प्रतिमा सिसोदिया, इमानी बंसल, उमा गोयल, सरिता आनंद, पूजा अग्रवाल, डॉ. मधुश्री वर्मा सहित क्लब की अनेक सदस्य उपस्थित रहीं। समारोह हंसी-खुशी, सौहार्द और उत्साह के साथ संपन्न हुआ।

मानसिक शांति व याददाश्त को तेज करता है कपालभाति

नई दिल्ली, 12 अगस्त (एजेंसियां)। आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में मोटापा, कब्ज, साइनस, अस्थमा और तनाव आम हो गया है। दवाओं के साथ-साथ अगर आप 10 मिनट कपालभाति करेंगे, तो कुछ शारीरिक समस्याओं से निजात पाने में मदद हो सकती है। शास्त्रों में कपालभाति को षट्कर्म और प्राणायाम दोनों का हिस्सा माना गया है। माना जाता है कि कपालभाति से न सिर्फ शरीर के टॉक्सिन बाहर निकलते हैं, बल्कि नकारात्मक सोच भी दूर होती है और एकाग्रता बढ़ती है।

गैस, कब्ज, एसिडिटी और अपच जैसी समस्याओं में राहत

यह एक ऐसी आसान, लेकिन बहुत असरदार योग क्रिया है, जिसको करने के दौरान तेजी से सांस छोड़नी होती है और सांस अपने आप अंदर आती है। रोजाना कुछ मिनट करने से ही शरीर और मन दोनों को फायदा मिलता है। भारत सरकार के आयुष मंत्रालय के अनुसार, यह पाचन क्रिया को मजबूत करता है। इससे पेट की मांसपेशियां सक्रिय होती हैं, जिससे आंतों में रक्त संचार बढ़ता है और पाचन एंजाइम बेहतर होते हैं। इससे गैस, कब्ज, एसिडिटी और अपच जैसी समस्याओं में राहत मिलती है। नियमित अभ्यास से भूख बेहतर लगती है और शरीर में विषैले पदार्थ बाहर निकलते हैं।

कपालभाति केवल पेट की सफाई नहीं करता, यह मानसिक शांति और याददाश्त को भी तेज करता है। जब हम जोर से श्वास छोड़ते हैं, तो फेफड़े साफ होते हैं और मस्तिष्क को ऑक्सीजन मिलती है। इससे याददाश्त, एकाग्रता और मानसिक स्पष्टता में वृद्धि होती है। यह तनाव, चिंता और बेचैनी को कम करता है, जिससे मन स्थिर और शांत होता है।

इनके अलावा, यह रोग प्रतिरोधक क्षमता का रक्षक भी है। कपालभाति शरीर में मौजूद सभी विषैले तत्वों को बाहर निकालता है और रक्त संचार को बेहतर बनाता है। इसके चलते एंटीबॉडी का निर्माण तेज होता है और शरीर की बीमारियों से लड़ने की शक्ति बढ़ती है। यह वायरल संक्रमण, फ्लू, सर्दी-खांसी जैसी आम बीमारियों से बचाव में मदद करता है।

शारदा विवि के छात्रों ने वोइंग बिल्ड 5.0 में जीता राष्ट्रीय खिताब

ग्रेटर नोएडा, 12 अगस्त (देशबन्धु)। शारदा विश्वविद्याल के शारदा स्कूल ऑफ कंप्यूटिंग साइंस एंड इंजीनियरिंग के बीटेक सीएसई बैच 2023-27 के छात्रों कार्तिक पांडे और मुस्कान अहलावत ने अपने स्टार्टअप स्टेल एक्स डायनामिक्स के साथ बोइंग बिल्ड 5.0 में राष्ट्रीय विजेता का खिताब हासिल किया। इस उपलब्धि के लिए टीम को 10 लाख रुपए की पुरस्कार राशि दी गई। बोइंग बिल्ड 5.0 में देशभर से 7,000 से अधिक स्टार्टअप्स ने हिस्सा लिया। स्टेल एक्स डायनामिक्स का चयन आईआईटी हैदराबाद-टी-हब रीजनल ग्रिड के जरिए किया गया। टीम ने रीजनल फाइनल में टॉप 12 में जगह बनाई और इसके बाद टॉप 4 स्टार्टअप्स में चयनित हुई। स्टेल एक्स डायनामिक्स भारतीय सेना और पुलिस के लिए नेक्स्ट-जेनरेशन ऑटोनॉमस एरियल सिस्टम्स (ड्रोन)

विकसित कर रहा है, जिसमें लो-लेटेंसी एज कंप्यूटिंग, हल्के कार्बन-फाइबर एयरफ्रेम और कस्टम इलेक्ट्रॉनिक्स का इस्तेमाल किया जा रहा है। इसके बाद टीम को बेंगलुरु में आयोजित नेशनल फाइनल के लिए आमंत्रित किया गया, जहां देशभर के टॉप 28 स्टार्टअप्स के बीच स्टेल एक्स डायनामिक्स ने राष्ट्रीय विजेताओं में जगह बनाई। इस सफर के दौरान टीम ने प्रतियोगिता के अलग-अलग चरणों में लगातार अपनी जगह मजबूत की और अपने टेक्नोलॉजी सॉल्यूशन को राष्ट्रीय स्तर पर पेश किया। शारदा यूनिवर्सिटी के चांसलर पी. के. गुप्ता ने कहा कि बोइंग बिल्ड 5.0 में राष्ट्रीय विजेताओं में शामिल होना हमारे लिए एक बड़ी उपलब्धि है। देशभर के 7,000 से अधिक स्टार्टअप्स के बीच अपने आइडिया को आगे बढ़ाते हुए टॉप 4 तक पहुंचना हमारे लिए एक महत्वपूर्ण अनुभव रहा।

इस पूरी प्रक्रिया में हमें अपने टेक्नोलॉजी सॉल्यूशन को बेहतर बनाने और इंडस्ट्री एक्सपर्ट्स से सीखने का अवसर मिला। यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रो. (डॉ.) सिबाराम खारा ने कहा कि इस तरह की राष्ट्रीय स्तर की उपलब्धियां छात्रों के आत्मविश्वास को मजबूत करने के साथ-साथ उन्हें अपने विचारों को वास्तविक तकनीकी समाधानों में बदलने के लिए प्रेरित करती हैं।

जिस फिल्म ने श्रीदेवी को बनाया स्टार, उसी को मानती थीं बदकिस्मत

मुंबई, 12 अगस्त (एजेंसियां)। हिंदी सिनेमा की दिवंगत एक्ट्रेस श्रीदेवी पर्दे पर कभी चुलबुली दिखीं, कभी गंभीर और कभी ऐसी भूमिका में नजर आईं, जिसे देखकर दर्शक हैरान रह गए। उन्होंने दक्षिण भारतीय फिल्मों से शुरुआत की और फिर हिंदी सिनेमा में अपनी अलग जगह बनाई। लेकिन, उनके करियर का एक दिलचस्प सच यह भी था कि जिस फिल्म ने उन्हें बॉलीवुड में बड़ा स्टार बना दिया, उसी की सफलता को वह अपने लिए पूरी तरह अच्छा नहीं मानती थीं। यह बात श्रीदेवी क्वीन ऑफ हार्ट्स नामक किताब में दर्ज है। श्रीदेवी का जन्म 13 अगस्त 1963 को तमिलनाडु के शिवकाशी में हुआ था। उनका असली नाम श्री अम्मा यंगर अय्यपन था। उन्होंने बहुत छोटी उम्र में फिल्मों में काम शुरू कर दिया था। वह करीब चार साल की उम्र में बाल कलाकार के रूप में दक्षिण भारतीय सिनेमा में नजर आईं। तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ फिल्मों में काम करते हुए उन्होंने बचपन में ही अपनी पहचान बना ली थी। उन्हें मलयालम फिल्म पूमपट्टा में अभिनय के लिए केरल राज्य फिल्म पुरस्कार भी मिला। बड़ी होने के बाद भी श्रीदेवी ने दक्षिण भारतीय सिनेमा में लगातार काम किया।

1976 की तमिल फिल्म मूंद्रु मुदिचु में उन्होंने रजनीकांत और कमल हासन जैसे कलाकारों के साथ काम किया। इसके बाद 16 वैयाथिनिले, सिगप्पु रोजक्कल और मूंद्रम पिराई जैसी फिल्मों ने उन्हें दक्षिण की बड़ी अभिनेत्रियों में शामिल कर दिया। हिंदी फिल्मों में उनकी पहली मुख्य भूमिका 1979 की सोलवा सावन में थी। हालांकि यह फिल्म उन्हें वह पहचान नहीं दिला सकी, जिसकी उन्हें तलाश थी।

फिर 1983 में आई हिम्मतवाला और सब कुछ बदल गया। जीतेंद्र के साथ आई इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन किया। फिल्म के गाने, श्रीदेवी के कपड़े और उनका डांस लोगों के बीच बेहद लोकप्रिय हुआ। वह अचानक हिंदी फिल्मों की सबसे चर्चित अभिनेत्रियों में शामिल हो गईं। लेकिन यहीं से उनके मन में एक अजीब सा डर भी पैदा हुआ।श्रीदेवी क्वीन ऑफ हार्ट्स किताब में उनके पुराने इंटरव्यू के हवाले से बताया गया है कि श्रीदेवी हिम्मतवाला की सफलता को अपनी बदकिस्मती मानती थीं। वजह यह थी कि उन्हें डर था कि इस फिल्म की कामयाबी के बाद लोग उन्हें सिर्फ खूबसूरत और ग्लैमरस अभिनेत्री के रूप में देखेंगे और उनके अभिनय को गंभीरता से नहीं लेंगे। उनका यह डर पूरी तरह बेबुनियाद भी नहीं था।

मोबाइल रेडिएशन का बच्चों के लिए बड़ा खतरा

नई दिल्ली, 12 अगस्त (एजेंसियां)। मोबाइल फोन आज हमारी जिंदगी का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। बातचीत, पढ़ाई, मनोरंजन, बैंकिंग से लेकर कारोबार तक, हर काम के लिए मोबाइल पर हमारी निर्भरता बढ़ती जा रही है। लेकिन सुविधा के इस छोटे से उपकरण के साथ स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं पर भी बहस तेज हुई है। खासकर बच्चों और किशोरों में मोबाइल के बढ़ते इस्तेमाल ने विशेषज्ञों के सामने कई सवाल खड़े किए हैं।

भारत में मोबाइल फोन का इस्तेमाल करने वालों की संख्या करोड़ों में है। स्कूल जाने वाले बच्चों के हाथों में स्मार्टफोन आम दृश्य बन चुका है। घर में टीवी चल रहा हो, फिर भी बच्चे का ध्यान मोबाइल पर आने वाले संदेशों, वीडियो और गेम्स में लगा रहता है। कई माता-पिता के लिए बच्चे से मोबाइल वापस लेना भी मुश्किल हो जाता है। मोबाइल छीनते ही बच्चा चिड़चिड़ा हो जाए या बेचैन होने लगे तो यह उसकी बढ़ती निर्भरता का संकेत हो सकता है।

रेडिएशन पर जारी है बहस

मोबाइल फोन रेडियो तरंगों के माध्यम से मोबाइल टावरों से संपर्क करता है। फोन में लगा ट्रांसमीटर सिग्नल भेजता है और रिसीवर सिग्नल प्राप्त करता है। इसी प्रक्रिया के दौरान रेडियोफ्रीक्वेंसी इलेक्ट्रोमैग्नेटिक ऊर्जा का उत्सर्जन होता है।

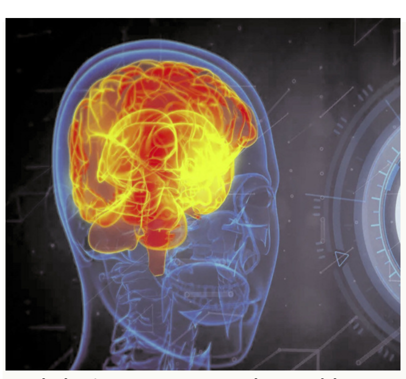

मोबाइल को शरीर से दूर रखने की सलाह

मोबाइल फोन के रेडिएशन को लेकर पूरी तरह खतरा साबित न होने के बावजूद सावधानी बरतना समझदारी है। फोन पर लंबी बातचीत करने के बजाय बातचीत का समय कम रखा जा सकता है। जरूरत हो तो स्पीकर फोन या ईयरफोन का इस्तेमाल किया जा सकता है।(मोबाइल फोन को शरीर से चिपकाकर रखने से भी बचना चाहिए। विशेषकर सोते समय मोबाइल को सिर के पास रखकर सोने की आदत छोड़ना बेहतर है। फोन को तकिए के नीचे रखने के बजाय कुछ दूरी पर रखा जा सकता है। कम सिग्नल वाले स्थानों पर मोबाइल को नेटवर्क से जुड़ने के लिए अधिक शक्ति से काम करना पड़ सकता है। इसलिए ऐसे स्थानों पर लंबी बातचीत से बचना भी एक व्यावहारिक सावधानी हो सकती है।

मोबाइल फोन के रेडिएशन से स्वास्थ्य को कितना नुकसान होता है, इस विषय पर दुनिया भर में लंबे समय से शोध चल रहे हैं। कुछ अध्ययनों में संभावित स्वास्थ्य प्रभावों को लेकर चिंता व्यक्त की गई है, जबकि अनेक वैज्ञानिक अध्ययनों में सामान्य मोबाइल उपयोग से गंभीर स्वास्थ्य नुकसान का स्पष्ट प्रमाण नहीं मिला है। यही कारण है कि इस विषय को लेकर आम लोगों में अक्सर भ्रम बना रहता है।

कुछ शोधों में रेडिएशन के संपर्क और कोशिकीय स्तर पर होने वाले बदलावों की संभावना पर चर्चा की गई है। दूसरी ओर वैज्ञानिक समुदाय यह भी मानता है कि मोबाइल फोन से निकलने वाला रेडियोफ्रीक्वेंसी रेडिएशन एक्सरे जैसे आयोनाइजिंग रेडिएशन से अलग होता है। इसलिए दोनों को एक ही स्तर का खतरा मानना वैज्ञानिक दृष्टि से उचित नहीं है।

बच्चों को लेकर ज्यादा चिंता क्यों ?

बच्चों के संदर्भ में सावधानी की जरूरत इसलिए भी महसूस की जाती है, क्योंकि उनका शरीर और मस्तिष्क अभी विकास की अवस्था में होता है। बच्चा जितना अधिक समय मोबाइल स्क्रीन पर बिताता है, उतना ही वह पढ़ाई, खेल, नींद और परिवार के साथ संवाद जैसी गतिविधियों से दूर हो सकता है।

मोबाइल के अत्यधिक इस्तेमाल का असर केवल रेडिएशन तक सीमित नहीं है। देर रात तक मोबाइल चलाने से नींद प्रभावित हो सकती है। लगातार गेम खेलने और सोशल मीडिया देखने से एकाग्रता तथा व्यवहार पर असर पड़ सकता है। शारीरिक गतिविधियां कम होने से मोटापा और जीवनशैली से जुड़ी अन्य समस्याओं का जोखिम भी बढ़ सकता है।

एक सर्वे में बच्चों के मोबाइल इस्तेमाल को लेकर चिंताजनक तस्वीर सामने आने का दावा किया गया था। बड़ी संख्या में बच्चों को यह जानकारी नहीं थी कि मोबाइल का अत्यधिक इस्तेमाल उनके स्वास्थ्य और दैनिक जीवन को प्रभावित कर सकता है। कई बच्चे लंबे समय तक मोबाइल पर बातचीत करते थे और बड़ी संख्या में बच्चे ईयरफोन का इस्तेमाल भी नहीं करते थे।

30 साल के व्यक्ति को कैलाश हॉस्पिटल में मिला नया जीवन

नोएडा 12 अगस्त (देशबन्धु)। 30 साल के नकुल बरुआ एक सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गए थे और उन्हें लंबे समय तक मैकेनिकल वेंटीलेशन पर रहने के दौरान उनके चेस्ट वॉल की सर्जरी की जरूरत थी। उनका इलाज नोएडा के सेक्टर 27 के कैलाश हॉस्पिटल में हुआ, जहाँ डॉक्टरों ने उनकी थोरेसिक, पेट, पेल्विस और हाथ-पैरों में कई चोटों का इलाज किया। उनकी चेस्ट वॉल रिपेयर सर्जरी भी हुई। नकुल को 2 मार्च, 2026 को हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था, और 74 दिनों के इलाज के बाद 15 मई को स्थिर हालत में उन्हें छुट्टी दे दी गई। इस टीम में क्रिटिकल केयर के ग्रुप डायरेक्टर डॉ. अनिल गुरनानी और ऑर्थोपेडिक्स के सीनियर कंसल्टेंट व जॉइंट और नी रिप्लेसमेंट सर्जन डॉ. सुशील शर्मा के साथ-साथ थोरेसिक सर्जरी और अन्य क्लीनिकल टीमों के एक्सपर्ट्स शामिल थे।

भारतीय मतदाता संसद

भारतीय मतदाताओं का अपना संसद

जनसभा

जनसभा ही क्यों ?

जब दो बिभिन्न विचारधारा की राजनीतिक पार्टी गठबन्धन कर सरकार बना सकती हैं।

तो फिर मतदाता भी भी ऐसा क्यों नहीं कर सकता ?

करके देखें ! ऐसा करने से अच्छे जनप्रतिनिधि को भी अवसर मिलेगा ! मुठितन्त्र वाली सरकार से जनप्रतिनिधि आजाद होगा ! जनप्रतिनिधि मुठितन्त्र के लिए नही लोकतंत्र के लिए होगा ! तब बदलेगा भारत

अब भारतीय मतदाता हारेगा नही, कियोंकि अपने जनसभा संसद में बैठकर अपनी और दूसरे का विचारधारा बदलेगा, फिर एक विचारधारा बनाएगा

वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था और जनसभा राजनीतिक व्यवस्था में अंतर

वर्तमान व्यवस्था

• किसी विशेष राजनितिक पार्टी या समर्थक के रूप में मतदाता को संगठित किया जाता है। जिस कारण मतदाता को अपना बेहतर और अनुभवी जन प्रतिनिधि के रूप में चुनने का विकल्प नही रहता इसीलिये लोकतंत्र लोकतंत्र न रहकर मुट्ठितंत्र बन जाता है।

• अधिकतर मतदाता अपना मत का अधिकार किसी विशेष पार्टी या राजनितिक के कार्यकर्ता या समर्थक के रूप में करता है जिस कारण अपने प्रतिनिधि की छवि या अनुभव महत्व नही रखता।

• भारतीय लोकतंत्र में जनता राजा है पर आज जनता नहीं कुछ मुट्ठी भर लोग राज कर रहे हैं।

• मुट्ठी भर लोग राज करने से जनता द्वारा चुने प्रतिनिधि का अधिकार कम हुआ।

• जनप्रतिनधि बनने के इच्छुक चुनाव के समय ही अपनी कुशलता केवल प्रचार के माध्यम से करता है। जिसमें अधिक रुपया खर्चा करना पड़ता है।

• राजनीति में धन-बल का प्रयोग ज्यादा होता है, जिससे विकास और एक समान मूल अधिकार में बाधा उत्पन होती है।

जनसभा व्यवस्था

• मतदाता मतदाता के रूप में संगठित रहेगा इसीलिये मतदाता को अपना बेहतर और अनुभवी जन प्रतिनिधि के रूप में चुनने का विकल्प रहेगा तब लोकतंत्र मुट्ठीतंत्र न बनकर लोकतंत्र रहेगा।

• अधिकतर मतदाता अपना मत का अधिकार अपने प्रतिनिधि की छवि या अनुभव के आधार पर मत का प्रयोग करेगा।

• भारतीय लोकतंत्र का जो सपना है मुट्ठी भर लोग राज नहीं आम जनता राज करे यह सपना साकार होगा।

• आम जनता का राज होने से जनता द्वारा चुने प्रतिनिधि का अधिकार बढ़ेगा।

• जनप्रतिनधि बनने के इच्छुक को अपनी कुशलता रुपया या प्रचार के माध्यम से नहीं जनता की अधिक समय सेवा कर दिखाने का अवसर मिलेगा।

• राजनीति में धन-बल का प्रयोग कम होगा जिससे सभी का विकास और एक समान मूल अधिकार सबको मिलेगा।

करके देखें • मुठितन्त्र से आजाद होगा हमारा जनप्रतिनिधि फिर • भारत बदलेगा

आज ही शब्दवाणी समाचार के स्थाई पाठक बनकर भारतीय मतदाता का अपना संसद जनसभा के सदस्य बनें

शब्दवाणी समाचार विज्ञापन नहीं पाठकों को प्रमुख मानता है इसलिए औरों से अलग है

आज ही शब्दवाणी समाचार (हिंदी दैनिक) के स्थाई पाठक बनें, मात्र 300 रूपये मासिक पर

सम्मान के साथ मिलेगा बहुत कुछ, लेकर देखें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्कर करें

RNI. NO.DELHIN/2003/09049
हिन्दी दैनिक
शब्दवाणी समाचार
Website : Shabdawanisamachar.page
(नई सोच, नई उम्मीद, बेहतर भविष्य, बेहतर भारत)

wwww.shabdwanisamachar.page E-mail : shabdwanisamachar2003@gmail.com Helpline : 0886-012-8844

कॉमनवेल्थ फेंसिंग में तीसरे दिन भारत ने जीते तीन गोल्ड

भारत के कुल पदकों की संख्या 29 हुई

● नई दिल्ली / (एजेंसी)

कॉमनवेल्थ फेंसिंग चैंपियनशिप में भारतीय फेंसिंग टीम का शानदार प्रदर्शन जारी है। प्रतियोगिता के तीसरे दिन भारत ने सीनियर व्यक्तिगत स्पर्धाओं में तीन स्वर्ण, एक रजत और और एक कांस्य सहित कुल पांच पदक अपने नाम किए।

इसके साथ ही भारत के कुल पदकों की संख्या बढ़कर 29 हो गई है, जिसमें आठ स्वर्ण, सात रजत और 14 कांस्य शामिल हैं। सीनियर महिला फॉइल स्पर्धा में भारत ने शानदार प्रदर्शन करते हुए गोल्ड और सिल्वर दोनों पदक अपने नाम किए। कनागलक्ष्मी ने सटीक और नियंत्रित खेल का प्रदर्शन करते हुए गोल्ड मेडल जीता, जबकि उनकी साथी जॉयस अशिता ने सिल्वर मेडल हासिल किया। भारतीय खिलाड़ियों ने इंग्लैंड की जॉर्जिया ग्रीन और एमिली गुडचाइल्ड को पीछे छोड़ते हुए पोडियम पर शीर्ष दो स्थान हासिल किए। सीनियर पुरुष एपि स्पर्धा में भी भारत को सफलता मिली। राजेंद्रन शांतिमोली शेरजिन ने शानदार प्रदर्शन करते हुए गोल्ड मेडल अपने नाम किया। फाइनल में उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के क्रूगर पीटर को हराया, जिन्हें सिल्वर मेडल मिला। वेल्स के बर्कहार्ट मार्क और दक्षिण अफ्रीका के लोसेव्स्की सर्गेई ने ब्रॉन्ज मेडल साझा किया।

पुरुष सेबर में करण सिंह ने दिलाया तीसरा गोल्ड

दिन के तीसरे गोल्ड मेडल पर सिंह करण सिंह ने कब्जा जमाया। उन्होंने सीनियर पुरुष सेबर के फाइनल में ऑस्ट्रेलिया के शिम यूंगी को हराकर स्वर्ण पदक जीता। शिम यूंगी को सिल्वर से संतोष करना पड़ा। भारत के कुमारेशन पद्मा गिशो निधि ने नाइजीरिया के अकिन्योसोये ओलुवाफोलायेमी के साथ ब्रॉन्ज मेडल साझा किया। प्रतियोगिता के शुरुआती तीन दिनों में भारतीय टीम ने कुल 29 पदक जीत लिए हैं। इनमें आठ स्वर्ण, सात रजत और 14 कांस्य शामिल हैं। अब भारतीय टीम की नजर फॉइल, एपि और सेबर की टीम स्पर्धाओं के फाइनल मुकाबलों पर है। टीम इंडिया इन सफलताओं की लय को बरकरार रखते हुए लागोस में अपने अभियान का शानदार समापन करना चाहेगी।

आकाश दीप की वापसी पर सस्पेंस, इंजरी से जूझ रहे बुमराह और सुदर्शन

वॉशिंगटन सुंदर भी श्रीलंका दौरे से अब हो सकते हैं बाहर

● नई दिल्ली / (एजेंसी)

श्रीलंका दौरे पर गई भारतीय टीम के लिए खिलाड़ियों का चोटिल होना बड़ी समस्या बनी हुई है। इंजरी के कारण जसप्रीत बुमराह और साई सुदर्शन के बाहर होने के बाद अब यह बात सामने आई है कि दूसरे टेस्ट मैच के लिए वॉशिंगटन सुंदर की उपलब्धता पर भी बड़ा सवालिया निशान है।

चयनकर्ताओं ने वॉशिंगटन को दूसरे टेस्ट के लिए चुना था, क्योंकि वह हैमस्ट्रिंग की चोट से उबर रहे हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक, टीम में कई खिलाड़ियों के चोटिल होने के बाद सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (सीओई) और भारतीय टीम मैनेजमेंट वॉशिंगटन के मामले में सावधानी बरतना चाहेंगे। बीसीसीआई के एक सूत्र ने बताया, इस समय वॉशिंगटन के श्रीलंका जाने की संभावना बहुत कम है। टीम मैनेजमेंट से कहा गया है कि वे उसी हिसाब से योजना बनाएं।

बीसीसीआई की मेडिकल टीम उन्हें टेस्ट मैच में उतारने को लेकर सतर्क है। ऐसे कुछ मामले सामने आए हैं जिनमें खिलाड़ी चोट से उबरने के तुरंत बाद फिर से चोटिल हो गए हैं। सूत्र ने कहा, वॉशिंगटन को सिर्फ दूसरे टेस्ट के लिए चुना गया था, जबकि यह पता था कि पूरी तरह फिट होना उनके लिए मुश्किल हो सकता है। पिछले महीने इंग्लैंड में चोट लगने के बाद से उन्होंने ज्यादा मैच नहीं खेले हैं। उनके वर्कलोड को सावधानी से बढ़ाया जा रहा है।अगर वॉशिंगटन आधिकारिक तौर पर बाहर हो जाते हैं, तो सेलेक्टर्स के किसी दूसरे खिलाड़ी को उनकी जगह चुनने की संभावना कम है।

आकाश दीप भी फिट नहीं

सूत्र ने कहा, हो सकता है कि भारतीय क्रिकेट को अगले साल के बाद (टेस्ट) बुमराह के बिना खेलने की तैयारी शुरू करनी पड़े। आकाश दीप के लिए सीओई का लक्ष्य उन्हें श्रीलंका दौरे तक क्रिकेट के लिए फिट करना था। ऐसा नहीं हो पाया। अब, उन्होंने टीम मैनेजमेंट और सेलेक्शन कमेटी को कोई समय-सीमा नहीं बताई है। पीठ की चोट से उबरना आसान नहीं है। टीम मैनेजमेंट को उम्मीद है कि वह न्यूजीलैंड दौरे के लिए उपलब्ध होंगे। अगर बुमराह और आकाश दोनों न्यूजीलैंड में होने वाले दो टेस्ट मैचों के लिए उपलब्ध रहते हैं, तो यह टीम के लिए बहुत अच्छा होगा।''

भारत की टेस्ट टीम

शुभमन गिल (कप्तान), केएल राहुल (उपकप्तान), यशस्वी जायसवाल, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), रवींद्र जडेजा, कुलदीप यादव, मानव सुथार, मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा, गुरनूर बरार, देवदत्त पडिक्कल, सारांश जैन, आकिब नबी और सरफराज खान।

श्रीलंका की टीम

धनंजय डी सिल्वा (कप्तान), लाहिरु उदारा, निशान मदुश्का, कामिंदु मेंडिस, दिनेश चांदीमल, पसिंदु सूरियाबंदर, सोनल दिनूषा, नीरोजन डिकवेला, रमेश मेंडिस, प्रभात जयसूर्या, केशरा नुवांथा, मिलान रत्नायके, असिथा फर्नांडो, लाहिरु कुमारा, विश्वा फर्नांडो, दिलशान मदुशंका।

धनंजय डी सिल्वा को कमान, पहले टेस्ट के लिए श्रीलंकाई टीम घोषित

भारत के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज के पहले टेस्ट के लिए श्रीलंकाई टीम का एलान हो गया है। श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड ने मैच के लिए 16 सदस्यीय टीम का एलान किया है। विकेटकीपर-बल्लेबाज निरोसन डिकवेला करीब तीन साल बाद श्रीलंका की टेस्ट टीम में लौटे हैं। 33 वर्षीय डिकवेला ने पिछली बार 2023 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेला था। पहला टेस्ट 15 अगस्त से गॉल में खेला जाएगा। वहीं, दूसरा टेस्ट 23 अगस्त से कोलंबो में खेला जाएगा। श्रीलंका के स्क्वॉड में अनकैप्ड ऑफ स्पिनर केशरा नुवांथा और अनकैप्ड टॉप ऑर्डर बल्लेबाज पसिंदु सूरियाबंदर को भी जगह मिली है। बाएं हाथ के तेज गेंदबाज दिलशान मदुशंका की भी टीम में वापसी हुई है, जिन्होंने अब तक सिर्फ एक टेस्ट खेला है। वहीं, कुसल मेंडिस और पाथुम निसांका फिलहाल पहले टेस्ट से बाहर हो गए हैं। डिकवेला की वापसी की सबसे बड़ी वजह कुसल मेंडिस का टीम से बाहर होना है। मेंडिस हैमस्ट्रिंग चोट के कारण चयन के लिए उपलब्ध नहीं हैं। वहीं पाथुम निसांका भी कलाई की सर्जरी से उबर रहे हैं और टीम में नहीं हैं। इन दोनों की गैरमौजूदगी ने श्रीलंका के बल्लेबाजी क्रम में जगह बनाई है। इसी वजह से डिकवेला को 33 साल की उम्र में दोबारा टेस्ट टीम में शामिल किया गया है।

बुमराह टेस्ट गेंदबाजों और गिल वनडे बल्लेबाजों में नंबर वन पर

क्रिकेट रैंकिंग में भारतीय खिलाड़ियों का दबदबा

● दुबई / (एजेंसी)

आईसीसी की ताजा पुरुष क्रिकेट रैंकिंग में भारतीय खिलाड़ियों का दबदबा कायम है। अलग-अलग फॉर्मेट की रैंकिंग में भारत के चार खिलाड़ी नंबर-1 की कुर्सी पर हैं।

जसप्रीत बुमराह टेस्ट गेंदबाजों, रवींद्र जडेजा टेस्ट ऑलराउंडर्स और शुभमन गिल वनडे बल्लेबाजों की रैंकिंग में शीर्ष पर बने हुए हैं। वहीं टी20 इंटरनेशनल बल्लेबाजों की रैंकिंग में ईशान किशन का दबदबा बरकरार है। टेस्ट गेंदबाजों की रैंकिंग में जसप्रीत बुमराह 870 रेटिंग पॉइंट्स के साथ नंबर-1 पर हैं। नवंबर 2024 में शीर्ष स्थान हासिल करने के बाद से उन्होंने अपनी बादशाहत कायम रखी है। न्यूजीलैंड के मैट हेनरी 861 पॉइंट्स के साथ दूसरे और ऑस्ट्रेलिया के मिचेल स्टार्क 838 पॉइंट्स के साथ तीसरे स्थान पर हैं। टेस्ट ऑलराउंडर्स की रैंकिंग में रवींद्र जडेजा 446 पॉइंट्स के साथ शीर्ष पर हैं। वह लंबे समय से इस स्थान पर काबिज हैं। दक्षिण अफ्रीका के मार्को यानसन दूसरे और स्टार्क व बांग्लादेश के मेहदी हसन मिराज संयुक्त रूप से तीसरे स्थान पर हैं। शुभमन गिल वनडे बल्लेबाजों की रैंकिंग में शीर्ष स्थान पर बने हुए हैं। टेस्ट बल्लेबाजों की सूची में भी भारतीय कप्तान 743 पॉइंट्स के साथ सातवें स्थान पर हैं। यशस्वी जायसवाल 733 पॉइंट्स के साथ नौवें नंबर पर हैं।

बाबर की टॉप-10 में हुई वापसी

पाकिस्तान के बाबर आजम ने टेस्ट बल्लेबाजों की रैंकिंग में पांच पायदान की छलांग लगाकर टॉप-10 में वापसी की है। वह 716 रेटिंग पॉइंट्स के साथ 10वें नंबर पर पहुंच गए हैं। वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे टेस्ट में 88 और नाबाद 24 रन की पारियों का उन्हें फायदा मिला। अब करीब दो साल बाद बाबर टेस्ट बल्लेबाजों की टॉप-10 में लौटे हैं। वहीं अब्दुल्ला शफीक ने 25 पायदान की बड़ी छलांग लगाकर 32वां स्थान हासिल किया है।

टेस्ट बल्लेबाजों में ट्रेविस हेड टॉप पर

टेस्ट बल्लेबाजों में ऑस्ट्रेलिया के ट्रेविस हेड 853 पॉइंट्स के साथ नंबर-1 हैं, जबकि इंग्लैंड के हैरी ब्रूक 852 पॉइंट्स के साथ उनसे सिर्फ एक अंक पीछे हैं। वेस्टइंडीज के खिलाफ शानदार प्रदर्शन करने वाले पाकिस्तान के साजिद खान भी पांच स्थान ऊपर चढ़कर टेस्ट गेंदबाजों में 30वें नंबर पर पहुंच गए हैं।

रोहित शर्मा एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री में करेंगे डेब्यू

फिर तेज हुए संन्यास के चर्चे, वायरल हुआ शो का टीजर

● मुंबई / (एजेंसी)

हिटमैन के नाम से मशहूर भारतीय दिग्गज क्रिकेटर रोहित शर्मा के संन्यास के चर्चे थमने का नाम नहीं ले रहे हैं।

लॉर्ड्स में आखिरी वनडे का शोर चरम पर देखने को मिला था। अफवाह को थमे कुछ ही दिन हुए हैं कि संन्यास के मुद्दे को फिर हवा मिल गई है। एक शो का टीजर वायरल हुआ तो खबर आई कि

रोहित शर्मा टीवी डेब्यू करने जा रहे हैं। जिसके बाद संन्यास की अटकलें फिर तेज हो चुकी हैं। ये सच है कि रोहित जल्द ही एक शो को होस्ट करते दिख सकते हैं, जो अक्टूबर में ऑन एयर हो सकता है। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान रोहित शर्मा एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री में कदम रख रहे हैं, ये खबर सोशल मीडिया पर आग की तरह फैली।

ये शो सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन और सोनी लिव पर स्ट्रीम होगा। फिलहाल सोनी ने इस शो के बारे में ज्यादा जानकारी पब्लिक नहीं की है।

प्रेजेंटर और एंकर की भूमिका में दिखेंगे

दरअसल, नेटवर्क ने आधिकारिक तौर पर एक प्रेजेंटर और एंकर के तौर पर उनकी भूमिका की पुष्टि की है। रोहित वनडे वर्ल्ड कप 2027 खेलेंगे या नहीं इस खबर ने फैंस को एक बार फिर सोचने पर मजबूर कर दिया है। सोनी पिक्चर्स नेटवर्क्स इंडिया ने शर्मा की कल्चरल फिगर वाली इमेज का फायदा उठाते हुए, उनके मशहूर गार्डन वाले डॉयलॉग का प्रमोशन में इस्तेमाल किया है।

पापा नहीं जानता क्या करूंगा, भावुक हुए मेसी

अर्जेंटीना के फुटबॉलर को मिला रोनाल्डो का साथ

● नई दिल्ली / (एजेंसी)

अर्जेंटीना के स्टार फुटबॉलर लियोनल मेसी के पिता जॉर्ज मेसी के निधन के बाद उनके सोशल मीडिया पोस्ट पर पुर्तगाल के दिग्गज फुटबॉलर क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने भावुक प्रतिक्रिया दी है। मेसी ने बुधवार को अपने पिता को याद करते हुए पहली बार सार्वजनिक तौर पर अपनी भावनाएं साझा की थीं। रोनाल्डो ने उनके पोस्ट पर कमेंट करते हुए

मुश्किल वक्त में मेसी और उनके परिवार के प्रति संवेदना जताई। रोनाल्डो ने लिखा, इस मुश्किल समय में आपको और आपके परिवार को एक बड़ा हग, लियो।

मेसी की पहली प्रतिक्रिया

जॉर्ज मेसी का पिछले सप्ताह 68 वर्ष की उम्र में निधन हो गया था। मेसी ने इंस्टाग्राम पर अपने पिता के साथ एक तस्वीर साझा करते हुए भावुक संदेश लिखा। मेसी ने बताया कि उनके पिता चाहते थे कि वह अमेरिका में होने वाले फीफा विश्व कप में आखिरी बार खेलें।

मेसी ने कहा कि अब उन्हें समझ नहीं आ रहा कि पिता के बिना वह आगे कैसे बढ़ेंगे। उन्होंने लिखा, ''मैं नहीं जानता कि तुम्हारे बिना क्या करने वाला हूं।

18 अगस्त से शुरू होगा सुब्रतो कप

नई दिल्ली। प्रतिष्ठित सुब्रतो कप इंटरनेशनल फुटबॉल टूर्नामेंट का 65वां संस्करण 18 अगस्त से 24 सितंबर तक नई दिल्ली-एनसीआर और बेंगलुरु में आयोजित किया जाएगा। प्रतियोगिता की आधिकारिक घोषणा बुधवार को एयर मार्शल एस. शिवकुमार वीएसएम की मौजूदगी में की गई। इस बार टूर्नामेंट में भारत के अलग-अलग राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों और शैक्षणिक संस्थानों की 107 टीमें हिस्सा लेंगी। प्रतियोगिता में श्रीलंका की टीम भी अंतरराष्ट्रीय भागीदारी के तौर पर शामिल होगी।

लुसाने डायमंड लीग में अरशद नहीं लेंगे हिस्सा

नीरज, जूलियन वेबर और एंडरर्सन पीटर में होगी टक्कर

● नई दिल्ली / (एजेंसी)

पाकिस्तान के ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता भाला फेंक खिलाड़ी अरशद नदीम इस महीने होने वाली लुसाने डायमंड लीग में हिस्सा नहीं लेंगे। उन्होंने आगामी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं और इस साल जापान में होने वाले एशियन गेम्स की तैयारी पर ध्यान केंद्रित करने का फैसला किया है।

अरशद के लंबे समय से कोच सलमान बट ने बताया कि 28 वर्षीय खिलाड़ी फिलहाल लाहौर में अभ्यास कर रहे हैं। वह जल्द ही दक्षिण अफ्रीका के पोचेफ्स्ट्रूम जाएंगे, जहां वह अपने कोच टेरसियस लिबेनबर्ग और स्थानीय प्रशिक्षकों की देखरेख में कुछ सप्ताह तक ट्रेनिंग करेंगे। सलमान बट ने कहा, उन्होंने इस महीने डायमंड लीग में हिस्सा नहीं लेने का फैसला किया है, क्योंकि वह एशियन गेम्स के लिए पूरी तरह तैयार रहना चाहते हैं। अरशद को 21 अगस्त को होने वाली लुसाने डायमंड लीग में हिस्सा लेना था, जहां नीरज चोपड़ा के अलावा जूलियन वेबर और एंडरसन पीटर्स जैसे दिग्गज खिलाड़ी भी मैदान में उतरेंगे।

भारतीय टेबल टेनिस फेडरेशन की मान्यता निलंबित

खेल मंत्रालय ने की कार्रवाई

● नई दिल्ली / (एजेंसी)

भारतीय टेबल टेनिस के प्रशासन को लेकर खेल मंत्रालय ने बुधवार को बड़ा कदम उठाया। मंत्रालय ने टेबल टेनिस फेडरेशन ऑफ इंडिया (टीटीएफआई) की मान्यता निलंबित कर दी है। इस फैसले के पीछे फेडरेशन में गवर्नेंस से जुड़ी कमियों को मुख्य वजह बताया गया है।

मंत्रालय के आदेश के मुताबिक, टीटीएफआई की ओर से समय पर चुनाव नहीं कराना भी मान्यता निलंबित करने के कारणों में शामिल है। इससे पहले मंत्रालय ने फेडरेशन को कारण बताओ नोटिस जारी किया था, लेकिन उसके जवाब को असंतोषजनक पाया गया। मान्यता निलंबित करने के साथ ही खेल मंत्रालय ने भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) को टेबल टेनिस के प्रशासन की व्यवस्था संभालने के लिए एडहॉक कमेटी बनाने को कहा है। मंत्रालय के आदेश में

कहा गया है कि आईओए, अंतरराष्ट्रीय टेबल टेनिस महासंघ से सलाह लेकर एक आंतरिक नियामक व्यवस्था तैयार करेगा। इसमें एक एडहॉक कमेटी का गठन भी शामिल होगा। यह व्यवस्था तब तक जारी रहेगी, जब तक टीटीएफआई में उचित गवर्नेंस ढांचा बहाल नहीं हो जाता।

समय पर चुनाव नहीं कराना पड़ा भारी

मंत्रालय की कार्रवाई में सबसे अहम मुद्दों में से एक टीटीएफआई के चुनाव समय पर नहीं कराया जाना रहा। कारण बताओ नोटिस के जवाब से मंत्रालय संतुष्ट नहीं हुआ और इसके बाद मान्यता निलंबित करने का फैसला लिया गया। टीटीएफआई में प्रशासनिक विवाद पहले भी सामने आते रहे हैं। अप्रैल 2026 की एक रिपोर्ट में फेडरेशन के अध्यक्ष और महासचिव के बीच मतभेदों का भी जिक्र किया गया था।

राजधानी (न्यू बॉम्बे)	
दिन	रात
136 = 0	250 = 7
260 = 8	235 = 0
शुभांक	
दिन	रात
346 = 3	290 = 1
567 = 8	288 = 8
भाग्यांक	
1 3 6 9	
www.kalyangame.com	

32वीं रिलायंस ट्रॉफी इंटर प्रेस बैडमिंटन प्रतियोगिता 22 से

● भोपाल / (एजेंसी)

32वीं रिलायंस ट्रॉफी इंटर प्रेस बैडमिंटन प्रतियोगिता 22 अगस्त से टीटी नगर स्टेडियम में आयोजित की जा रही है। इस टूर्नामेंट में शहर व प्रदेश के 150 से अधिक मीडिया से जुड़े शटलर भागीदारी करेंगे। टूर्नामेंट दो कैटेगरी में खेला जाएगा।

इसमें महिला पुरुष के सिंगल, युगल और मिक्सड डबल्स के मुकाबले होंगे। भोपाल खेल पत्रकार संघ के तत्वावधान में खेली जाने वाली इस प्रतियोगिता से जुड़ी लगभग सभी तैयारी पूरी कर ली गई। टूर्नामेंट तीन दिन तक चलेगा। पहले दिन सिंगल के मुकाबले खेले जाएंगे। जबकि दूसरे दिन युगल मुकाबले होंगे। तीसरे दिन सभी सेमीफाइनल और फाइनल होंगे। विजेता और उपविजेता खिलाड़ियों को ट्रॉफी और ट्रेकसूट से नवाजा जाएगा। टूर्नामेंट का उदघाटन खेलमंत्री विश्वास सारंग, रिलायंस मप्र के मेंटोर फरहान अंसारी और भोपाल खेल पत्रकार संघ के संरक्षक मृगेंद्र सिंह करेंगे।

विवाह बंधन — 10 साल तक डेट करने के बाद 41 वर्षीय पुर्तगाली स्टार फुटबॉलर ने गुपचुप तरीके से रचाई शादी

5 बच्चों की मौजूदगी में जॉर्जिना के हुए क्रिस्टियानो रोनाल्डो

● नई दिल्ली / (एजेंसी)

फुटबॉल की दुनिया के सबसे बड़े सितारों में से एक 41 वर्षीय पुर्तगाली सुपरस्टार ने अपनी लंबे समय से पार्टनर रहीं जॉर्जिना रोड्रिगेज को अपना जीवनसाथी बना लिया है। दोनों ने मंगलवार को पुर्तगाल के कास्काइस में एक बेहद निजी सिविल सेरेमनी में शादी की। खास बात यह रही कि इस मौके पर उनके पांच बच्चे भी मौजूद थे। शादी को पूरी तरह निजी रखने वाले रोनाल्डो ने किसी बड़े ऐलान या भव्य तस्वीरों के बजाय सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए फैंस को खुशखबरी दी।

उन्होंने अपनी और जॉर्जिना की हाथों की तस्वीर शेयर की, जिसमें दोनों की उंगलियों में मैचिंग गोल्ड वेडिंग रिंग नजर आ रहे थे। इस तस्वीर के साथ रोनाल्डो ने सिर्फ सीजी लिखा। और साथ ही दिल भी बनाया। बताया गया कि यह समारोह बेहद निजी और अंतरंग था तथा इसमें कपल के पांच बच्चे शामिल हुए। रोनाल्डो और जॉर्जिना का रिश्ता करीब एक दशक पुराना है। दोनों की मुलाकात 2016 में मैड्रिड में हुई थी। उस समय जॉर्जिना एक गुच्ची स्टोर में काम करती थीं।

रोनाल्डो ने 2025 में की थी सगाई

शादी से करीब एक साल पहले जॉर्जिना ने अगस्त 2025 में सोशल मीडिया पर अपनी सगाई की जानकारी दी थी। उन्होंने रोनाल्डो के साथ हाथ की तस्वीर शेयर की थी, जिसमें उनकी बड़ी डायमंड रिंग नजर आई थी। उस पोस्ट में उन्होंने लिखा था, यस आई डू इन दिस एंड इन ऑल माई लाइव्स । इसके बाद से ही दोनों की शादी को लेकर लगातार अटकलें लगती रही थीं।

रोनाल्डो ने पहले ही बता दिया था कैसी होगी शादी

रोनाल्डो ने इससे पहले पियर्स मॉर्गन के साथ बातचीत में अपनी शादी को लेकर संकेत दिया था। उन्होंने बताया था कि जॉर्जिना को बड़ी पार्टियां और दिखावा पसंद नहीं है। ऐसे में वह उनकी पसंद का सम्मान करेंगे और शादी को निजी रखेंगे। आखिरकार उनकी शादी भी बिल्कुल वैसी ही रही। कास्काइस में हुई सिविल सेरेमनी में कोई बड़ा सार्वजनिक समारोह नहीं हुआ। रोनाल्डो और जॉर्जिना के परिवार में पांच बच्चे हैं। इनमें जुड़वां ईवा मारिया और माटेओ, बेटी अलाना, बेटी बेला और रोनाल्डो के पहले रिश्ते से बेटा क्रिस्टियानो जूनियर शामिल हैं। शादी के इस खास मौके पर सभी पांच बच्चे मौजूद रहे। हालांकि, इस परिवार ने एक बेहद मुश्किल दौर भी देखा है।

टाइगर श्रॉफ के साथ एक्शन फिल्म बनाएंगे विक्की जैन, शुरू किया प्रोडक्शन हाउस

विक्की जैन ने प्रोडक्शन हाउस लॉन्च किया है। उनके VJ Frames नाम से प्रोडक्शन हाउस के बैनर तले बनने वाली पहली फिल्म में टाइगर श्रॉफ नजर आएंगे। इस एक्शन फ्रैंचाइजी के निर्देशन की जिम्मेदारी रेमो डिसूजा संभालेंगे। विक्की जैन चर्चित टीवी अभिनेत्री अंकिता लोखंडे के पति हैं। विक्की अब फिल्म निर्माता की कुर्सी पर बैठेंगे। अपने बैनर की पहली एक्शन फिल्म में उन्होंने टाइगर श्रॉफ को साइन किया है। उनके अलावा अभिषेक बनर्जी और एल्विश यादव भी नजर आएंगे।

शुरू हुई शूटिंग, टाइटल तय नहीं

अपने प्रोडक्शन हाउस के बैनर तले विक्की जैन पहली फिल्म एक्शन फ्रैंचाइजी बना रहे हैं। हालांकि, फिलहाल इसका टाइटल तय नहीं हुआ है। आज शनिवार से इसकी शूटिंग शुरू हो गई है। अभिनेत्री और विक्की जैन की पत्नी अंकिता लोखंडे ने उन्हें जन्मदिन की बधाई दी है। इसी के साथ प्रोडक्शन हाउस शुरू करने पर शुभकामनाएं भी दी हैं।

टाइगर श्रॉफ वर्क फ्रंट

टाइगर श्रॉफ के वर्क फ्रंट की बात करें तो उन्हें साजिद नाडियाडवाला की 'बागी 4' में देखा गया था। फिल्म बीते साल सितंबर में रिलीज हुई थी। हालांकि, बॉक्स ऑफिस पर यह सफलता हासिल नहीं कर पाई। वहीं, रेमो डिसूजा की बात करें तो उनके निर्देशन में बनी आखिरी फिल्म अभिषेक बच्चन अभिनीत 'बी हैप्पी' थी।

गौरव मेरा कंफर्ट जोन नहीं डॉग वाले बयान पर आकांक्षा चमोला ने तोड़ी चुप्पी

टेलीविजन अभिनेत्री और 'लॉकअप-2' कंटेस्टेंट रही आकांक्षा चमोला ने पति गौरव खन्ना को लेकर दिए गए विवादित बयान पर चुप्पी तोड़ी। अभिनेत्री ने बताया कि जिस तरह से उनके बयानों को तोड़कर दिखाया गया है, वैसा कुछ भी नहीं था। आकांक्षा चमोला ने शो से बाहर निकलने के बाद मीडिया से बातचीत की। उन्होंने कहा, 'मैं चाहती थी कि शो के अंदर विजिटर के तौर पर मुझसे वो लोग मिलने आए, जिनके साथ मैं अपना कंफर्ट महसूस करती हूं जैसे कि मेरे माता-पिता या फिर डॉग आते तो मुझे अच्छा लगता, क्योंकि इनके साथ मैं अपना कंफर्ट महसूस करती हूं। गौरव भले ही मेरा पति हैं और अब हम डिवॉर्स लेने जा रहे हैं, लेकिन वो मेरा कंफर्ट जोन नहीं हैं। वो पता नहीं क्यों आया, शायद अपनी मर्जी से आया होगा।' दरअसल, शो के दौरान आकांक्षा चपोला के पति गौरव खन्ना उनसे मिलने के लिए आए थे, जिसके कुछ एपिसोड बाद अभिनेत्री ने बताया था कि शो के दौरान गौरव खन्ना की जगह कोई ऐसा मिलने आता, जिसके साथ वो अपनापन महसूस करती, भले उनका डॉग मिलने आता।

शो में एंट्री लेने से पहले आकांक्षा चमोला ने अपना सीक्रेट रिवील करते हुए बताया था कि वह और गौरव खन्ना एक साल से अलग रह रहे हैं और तलाक लेने जा रहे हैं। इसके बाद श्रेया कालरा ने उनका दूसरा सीक्रेट रिवील कर दिया था कि वे बायसेक्सुअल हैं, जिसके बाद आकांक्षा चमोला ने ये बात स्वीकारी भी थी। साथ ही ये भी बताया था कि पति गौरव खन्ना को भी उनकी सेक्सुअलिटी के बारे में पता था। रितेश देशमुख और फराह खान द्वारा होस्ट किए गए इस शो में शिल्पा शिंदे, श्रेया कालरा, आकांक्षा चौधरी, योगेश रावत, सुनीता आहूजा, राम कपूर, शिवांगी जोशी, हर्षद चोपड़ा, सूफी मोतीवाला, धीरज धूपर, माधुरी जैन ग्रोवर, रियाज अली और वरुण यादव उर्फ लैला जैसे पॉपुलर नाम थे, हालांकि कंटेस्टेंट श्रेया कालरा ने टॉप 3 की रेस में शिवांगी जोशी और योगेश रावत को हराकर इस सीजन की ट्रॉफी अपने नाम कर 1 करोड़ का इनाम भी अपने नाम किया।

नेटफ्लिक्स ओरिजिनल चुंबक में नजर आएंगी संदीपा धर

शेयर किया लेग-डे वॉर्म-अप रूटीन

मुंबई फिटनेस के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए मशहूर अभिनेत्री संदीपा धर ने हाल ही में अपने फैंस को लेग-डे वर्कआउट की तैयारी की एक झलक दिखाई है। अभिनेत्री ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो साझा किया है, जिसमें उन्होंने अपने लेग-डे से पहले अपनाई जाने वाली एक प्रभावी वॉर्म-अप टेक्निक दिखाई है, जो उनके वर्कआउट रूटीन का अहम हिस्सा है। गौरतलब है कि लेग-डे वर्कआउट में ताकत, लचीलापन और सहनशक्ति की जरूरत होती है। ऐसे में सही वॉर्म-अप मसल्स को एक्टिव करने और शरीर को कठिन एक्सरसाइज के लिए तैयार करने में मदद करता है। संदीपा का यह फिटनेस-फर्स्ट अप्रोच उनकी अनुशासित और नियमित लाइफस्टाइल को दर्शाता है। वर्कफ्रंट की बात करें तो संदीपा धर जल्द ही नेटफ्लिक्स की ओरिजिनल सीरीज 'चुंबक' में नजर आनेवाली हैं। इस एंसेम्बल कॉमेडी सीरीज में उनके साथ नीना गुप्ता, अर्जुन बिजलानी, सुमीत व्यास, हेली शाह और कई अन्य कलाकार दिखाई देंगे। मुंबई के बैकग्राउंड पर आधारित यह सीरीज 28 अगस्त 2026 को नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम होगी। एक ओर जहां संदीपा अपने नए प्रोजेक्ट को लेकर उत्साहित हैं, वहीं दूसरी ओर वह अपनी फिटनेस और वेलनेस को भी उतनी ही प्राथमिकता दे रही हैं। उनका यह संतुलन उनके प्रोफेशनल और पर्सनल लाइफ दोनों के प्रति समर्पण को दर्शाता है।

'ललकारा' से क्यों हटे फरहान अख्तर? सामने आई वजह

बॉलीवुड एक्टर आमिर खान और आशुतोष गोवारिकर ने अपनी अपकमिंग स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म 'ललकारा' की कास्टिंग में बड़ा बदलाव किया है। फरहान अख्तर के इस प्रोजेक्ट से हटने के बाद अब एक्टर सिद्धांत गुप्ता इसमें शामिल हो गए हैं।

प्रोजेक्ट से क्यों हटे फरहान?

एक रिपोर्ट के मुताबिक, फरहान अख्तर ने फिल्म से इसलिए किनारा कर लिया क्योंकि इसकी शूटिंग का शेड्यूल संगीतकार आर.डी. बर्मन पर बन रही बायोपिक की शूटिंग से टकरा रहा था।

फरहान की जगह लेंगे सिद्धांत

अब 'ललकारा' में फरहान अख्तर की जगह सिद्धांत गुप्ता अदाकारी करेंगे। सिद्धांत को सीरीज 'जुबली' और 'फ्रीडम एट मिडनाइट' में एक्टिंग के लिए काफी तारीफ मिली है। उम्मीद है कि हाल के वर्षों की सबसे बड़ी स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्मों में से एक मानी जा रही इस फिल्म में एक्टर, आमिर खान के साथ एक अहम किरदार निभाएंगे। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, सिद्धांत फिल्म में मुख्य किरदारों में से एक (पैरेलल लीड) निभाएंगे। स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर हालिया सफलता के बाद उनके करियर में यह एक और बड़ा पड़ाव होगा। खबर है कि एक्टर ने रोल के लिए तैयारी शुरू कर दी है, हालांकि मेकर्स ने अभी तक कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की है।

किस पर आधारित है फिल्म

'ललकारा' क्रिकेटर लाला अमरनाथ की जिंदगी पर आधारित है, जो देश के लिए टेस्ट शतक लगाने वाले पहले भारतीय क्रिकेटर थे। आमिर खान फिल्म में इस मशहूर खिलाड़ी का रोल निभाएंगे। फिल्म में आजादी से पहले और बाद के भारत की पृष्ठभूमि में मैदान के अंदर और बाहर उनके सफर को दिखाया जाएगा।

10 साल बाद लीड हीरो बनकर लौटेंगे इमरान खान

अभिनेता इमरान खान ने काफी वक्त से स्क्रीन से दूरी बना कर रखी थी। मगर अब वह बतौर लीड एक्टर दमदार वापसी के लिए पूरी तरह तैयार हैं। एक बातचीत के दैरान उन्होंने अपनी आगामी फिल्म 'अधूरे हम अधूरे तुम' से जुड़ी जानकारी साझा की।

हाल ही में दिए एक इंटरव्यू में इमरान खान ने अपनी अगली फिल्म के बारे में काफी कुछ बताया। हॉलीवुड रिपोर्टर से बातचीत में इमरान ने कहा, 'मेरी फिल्म 'अधूरे हम अधूरे तुम' की शूटिंग पूरी हो चुकी है। यह फिलहाल पोस्ट-प्रोडक्शन में है और इस साल के अंत तक इसके रिलीज होने की उम्मीद है। यह एक एडल्ट रोमांटिक कॉमेडी फिल्म है, जो मेरे जीवन के मौजूदा हालात दर्शाती है।' इमरान खान आखिरी बार साल 2015 में रिलीज हुई फिल्म 'कट्टी बट्टी' में बतौर लीड हीरो नजर आए थे। अब वे सीधे फिल्म 'अधूरे हम अधूरे तुम' में लीड रोल प्ले करेंगे। फिल्म के बारे में आगे एक्टर ने कहा, 'मैंने अभी-अभी एक बेहद प्रतिभाशाली युवा अभिनेत्री, गुरफतेह पीरजादा के साथ काम किया है। दरअसल, यह वो फिल्म है जिसे मुझे 10 साल बाद बनाना ही था।' बता दें कि इस फिल्म का निर्देशन निखिल आडवाणी ने किया है।

इमरान खान का वर्कफ्रंट

इमरान खान ने 2008 में रिलीज हुई 'जाने तू या जानें ना' से अपना बॉलीवुड डेब्यू किया था। इसमें उनके साथ जेनेलिया डिसूजा भी नजर आई थीं। फिल्म बॉक्स आफिस पर एक बड़ी हिट साबित हुई थी। इसके बाद इमरान ने 'लक', 'आई हेट लव स्टोरीज', 'देल्ही बेली' और 'मेरे ब्रदर की दुल्हन' जैसी कई हिट फिल्में दी थीं। इस साल जनवरी में इमरान ने अपने मामा आमिर खान के बैनर तले बनी फिल्म 'हैप्पी पटेल खतरनाक जासूस' में कैमियो किया था।

मेरा बेटा वीर आर्मी में जाना चाहे तो खुशी होगी, मैं उसे रोकूंगा नहीं

कभी असल जिंदगी में सेना में जाने का ख्वाब देखने वाले ऐक्टर जिमी शेरगिल अपनी नई सीरीज ऑपरेशन सफेद सागर में कारगिल युद्ध के हीरो विंग कमांडर बीएस धनोवा की भूमिका निभा रहे हैं। जिमी का मानना है कि देश के जवानों की बहादुरी की ये कहानियां युवा पीढ़ी तक पहुंचना बहुत जरूरी है, ताकि उन्हें अपने देश और जवानों पर गर्व हो और वो सैन्य सेवाओं को अपने करियर के तौर पर चुनें। यहां तक कि अगर उनका खुद का बेटा वीर भी अगर सेना में जाना चाहे तो उन्हें खुशी ही होगी।

बकौल जिमी शेरगिल, 'ऑपरेशन सफेद सागर देश के जवानों की बहादुरी की सच्ची कहानी है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़नी बहुत जरूरी है। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो एक वक्त पर जाकर ये बहादुरी खत्म हो जाएगी। जिस तरह की बहादुरी हमारे जवान, वो चाहे एयरफोर्स हो, मिलिट्री हो, नेवी हो, दिखाते हैं, उनके किस्से युवा पीढ़ी तक पहुंचना बहुत जरूरी है।' ऑपरेशन सफेद सागर देश के जवानों की बहादुरी की सच्ची कहानी है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़नी बहुत जरूरी है। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो एक वक्त पर जाकर ये बहादुरी खत्म हो जाएगी। जिस तरह की बहादुरी हमारे जवान, वो चाहे एयरफोर्स हो, मिलिट्री हो, नेवी हो, दिखाते हैं, उनके किस्से युवा पीढ़ी तक पहुंचना बहुत जरूरी है।

90 पर्सेंट मार्क्स लाकर भी उस कट ऑफ के पार नहीं

जिमी आगे बताते हैं, 'जब हम स्कूल में थे, तब 99.9 पर्सेंट स्टूडेंट सेना में जाने की कोशिश करते थे। चूंकि उसमें कट ऑफ बहुत ज्यादा होता था तो मेरे जैसे लोग 90 पर्सेंट मार्क्स लाकर भी उस कट ऑफ को पार नहीं कर पाते थे। इसलिए, मेरा तो सपना ही रह गया लेकिन अगर किसी में वो जुनून, वो जज्बा है, वो क्षमता है, आप हर तरीके से फिट हैं तो आपको पहली चॉइस निश्चित तौर पर आर्म्ड फोर्सेस रखनी चाहिए क्योंकि जो जिंदगी वहां पर है, वो और कहीं नहीं है। मैं 2001 से एयर बेस पर जाकर शूट कर रहा हूं, आर्मी एरिया में जा रहा हूं। वो इतनी कमाल की जगह है। जो सुकून, अनुशासन वहां देखने को मिलता है, वो कहीं नहीं है। वो एक अलग ही दुनिया है।'

हमें आपस में लड़ना बंद करना चाहिए

वहीं, विंग कमांडर बीएस धनोवा की भूमिका निभाने को लेकर जिमी ने कहा, 'रियल लाइफ हीरो असल में बड़े आम और सिंपल लोग होते हैं। वे जमीन से जुड़े हुए बेहद विनम्र लोग होते हैं, मगर वो जो काम करते हैं वो हीरोइक होता है। इसलिए, हमने भी शो में सिंपलिसिटी, विनम्रता आदि तो मेंटेन करने की पूरी कोशिश की है। हमारी कोशिश रही है कि हम कहीं भी फैले हुए न लगे।' वहीं, क्या जिमी देश के लिए खुद कुछ करने की चाह रखते हैं? इस सवाल पर उनका कहना था, 'मैं तो सिर्फ इतना कहूंगा कि हमें आपस में लड़ना बंद करना चाहिए। हम लोग आपस में टूटते जा रहे हैं। हमें टूटना नहीं चाहिए, क्योंकि तब बाहर की ताकतें आकर ऐसी चीजों का फायदा उठाती हैं। इसलिए, हम आपस में एकजुट होकर रहें, वही हमारी सबसे बड़ी जीत होगी।'

बेटा जो करना चाहे, मैं साथ दूंगा

जिमी ने कहा कि युवा पीढ़ी को सैन्य सेवाओं को करियर चॉइस में सबसे ऊपर रखना चाहिए, तो क्या वे अपने बेटे वीर को भी यही सलाह देंगे? इस पर उन्होंने कहा, 'वीर अगर क्वॉलिफाई कर सकता है तो बिल्कुल। मैं उसे कभी नहीं रोकूंगा। मैंने हमेशा कहा है कि मेरे बच्चे को जो भी करना है, मैं उसे कभी नहीं रोकूंगा। उनको अगर स्पोर्ट्स में जाना है तो उसमें जाए। ऐसे ही, अगर वो आर्म्ड फोर्सेस में पहुंच सकते हैं, उनमें वो क्षमता है, बुद्धिमत्ता है तो जरूर जाए।'

मोहम्मद जोशी के लिय टाइम्स मास कम्युनिकेशन प्राइवेट लिमिटेड द्वारा पंजीकृत कार्यालय जे 85 सीमापुरी, दिल्ली से प्रकाशित इंकलाब भारत प्रेस जे एण्ड के दिलशाद गार्डन दिल्ली से मुद्रित संपादकीय कार्यालय समाचार भवन एफ-126 शाहिद नगर, चिकम्बरपुर, साहिबाबाद, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201006 ईमेल : shabdwanisamchaarw2003gmail.com www. shabdawanisamachar.page संपादक मोहम्मद जोशी ,सलाहकार संपादक : अशोक लालवानी

refresh MATTRESS
SLEEP HEALTHY. Wake beautiful.
HDFC BANK
We understand your world
Mega Exchange Offer
Limited time only
Zero Down Payment &
EMI Available on Selected Models
• Get Value upto ₹12000/- for Old Mattress
• Assured Gifts upto ₹12448/-
• Total Exchange Benifits ₹24448/-
BLOSSOM
refresh
Premium
PRISTINE
PRISTINE
PRISTINE
PRISTINE
Offer available on
1pc of 72" x 60" or 2pcs of 72" x 30"
and above
Hurry !!! Rush to your nearest dealer
Customer care no. : 18001209630